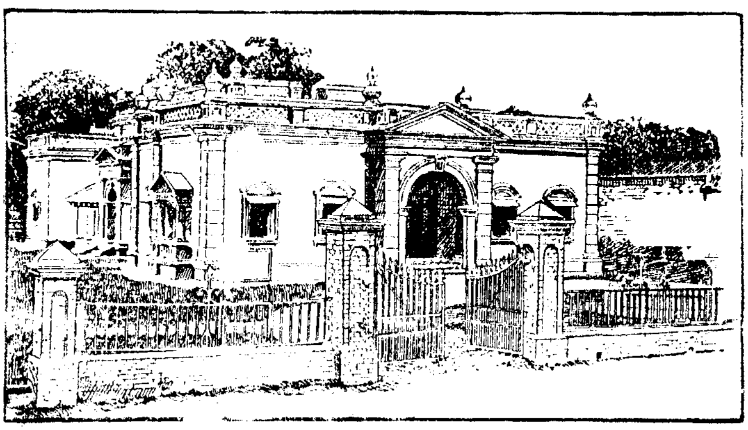
दादूदयाल का सबद ।

महामहोपाध्यायसुधाकरद्विवेदि सम्पादित ।

Nagari Pracharini Granthmala Series No 14.

दादूदयाल का सबद।

महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी
सम्पादित।



काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा
प्रकाशित।

1907.

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS,
BENARES.

श्रीः ।

भूमिका ।

का भाषा किं संस्कृतं प्रेम सुवर्षति यत्र ।
मान्यं भवति तदेव वै विदां सतां सर्वत्र ॥

सन्त लोग दोहा सोरठा इत्यादि छन्दों में अनेक दृष्टान्तद्वारा जो उपदेश किए हैं उन्हें वाणी और नाना प्रकार की गीतों में जो उनके उपदेश हैं उन्हें शब्द कहते हैं । वाणी को साखी (साची) और शब्द को पद भी कहते हैं ॥

हिन्दीभाषा में पहले पहल महात्मा सन्तशिरोमणि कबीरदासजी ने भक्तजनों के उपकार के लिये वाणी और शब्दों की रचना की । फिर पीछे के लोग भी इन्हीं की चाल पर चले । एक दिन नीरू जोलाहे की स्त्री नीमा बडे भोर पानी छूने के लिये बनारस के लहरतारे नाम के पाखरे में गई वहाँ किनारे पर तुरन्त जनमे हुए एक बच्चे को पडा देख उठा लाई, वही कबीरदास हैं ॥

कबीर कसौटी की

पँदरहसौ पचहत्तरा किय मगहर में गौन ।
माघ सुदी एकादसी मिल्यो पौन में पौन ॥

इस साखी से कबीरदास का देहान्त विक्रम संवत् १५७५ माघ शुक्ल एकादशी को हुआ ॥

यद्यपि कबीरदास जी पूरे विरक्त और ब्रह्मज्ञानी थे, संसार से अलग रहते थे तथापि महासन्त समझ अपने भले के लिये जोलाहिन लोई और बनिया गोविंदा सदा इनकी सेवा में साथ साथ फिरते थे । कबीरदास के अनुग्रह से गोविंदा बडा महात्मा और विरक्त हुआ । विरक्त होने पर कबीरदास ने इसका नाम कमाल रक्खा । इसी कमाल के चेले दादूदास हैं । इसी गोविंदा के लिये दादूदास ने गुरु के अंग में २६ वाँ दोहा लिखा है—

सबद दूध घृत रामरस मथि करि काढइ कोइ ।
दादू गुरु गोविंद बिनु घट घट समझि न होइ ॥

ऐसा ही ५६ वें, ७७वें इत्यादि दोहे में भी गुरु गोविन्द का नाम आया है ॥

दादूदास मोट बनानेवाली जाति (मोची) में पैदा हुए थे, इनका जन्मस्थान जौनपुर है जो कि बनारस की कमिश्नरी में फुलेल के लिये प्रसिद्ध स्थान है । इनका पहला नाम महाबली था, स्त्री के मर जाने से घर छोड कर साधु होकर बनारस में कबीर के चेले कमाल के अनुग्रह से पूरे योगाभ्यासी हुए इसी पर गुरु अंग के ३३ वें दोहे में लिखा है—

साचा समरथ गुरु मिला तिन तत दिया बताइ ।
दादू मोट महाबली घट घृत मथि करि खाइ ॥

ए छोटे बडे सभी को दादा दादा कह कर पुकारा करते थे इसीलिये कमाल ने इनका नाम दादू रक्खा । जैसे नर्मदा के किनारे भडौच में एक बर के नीचे कुछ दिन कबीरदास के रहने से उस बर का नाम आज तक कबीर बर है उसी तरह दादूदास भी जहाँ जहाँ कुछ दिन रह गए वे स्थान उनके नाम से प्रसिद्ध हैं । एक समय दादूदास घूमते घूमते अजमेर के प्रसिद्ध पीरसाहब के स्थान में उपदेश करने गए थे और वहीं पर नराणे गाँव में कुछ दिन ठहर कर शरीर त्याग किया इसी से उस स्थान का नाम दादू द्वारा आज तक प्रसिद्ध है । जैसे गोरखपुर जिले के मगहर गाँव में ठहर कर शरीर त्याग करने से मगहर आज तक कबीरद्वार से प्रसिद्ध है । बहुत लोग आदर के लिये इन्हें गुजराती ब्राह्मण कहते हैं, मेरी समझ में यह कहना अनुचित है क्योंकि प्राचीन समय के ब्राह्मण प्रायः हिन्दी के अनुरागी नहीं होते थे। जो पुरुष योगी हो परमपुरुषरूप हो गया उसकी जाति का क्या विचार, वह तो परमपुरुषरूप होने से जगद्-मान्य और पूज्य है । डोमडे के घर में जन्म लेकर भी शठकोप रामानुजमत के शिरोमणि हुए ॥

तुलसीदास, कमाल और दादूदास ए लोग अकबर बादशाह के समय में हुए । तुलसीदास कमाल और दादूदास की नीच जाति होने से इनसे घृणा करते थे, परन्तु इन लोगों का उस समय योगाभ्यासिओं में पर-

मप्रसिद्धि होने से प्रत्यक्षरूप से इन लोगों की निन्दा न कर वक्रोक्ति से खलों की वन्दना की । ए लोग निर्गुण विशिष्ट परब्रह्मवादी थे और तुलसीदास सगुण रामोपासक थे इसी कारण इन लोगों में परस्पर विवाद था । परन्तु दादूदास ने कभीं किसी की निन्दा न की, सभी के ऊपर दया रखते थे इसी कारण इनका जगत् में-दादूदयाल' यह प्रसिद्ध नाम हो गया ॥

इनके बहुत से शिष्यों में प्रधान शिष्य सुन्दरदास हुए हैं । ए साहित्य में बडे निपुण थे । इनके बनाए अनेक ग्रन्थ हैं । एक स्थान पर पेट के वर्णन में लिखा है—

कैधों पेट चूल्हा कैधों भाठी कैधों भार आहि
जोई कछु झोंकियत सोई जरि जात है ।
कैधों पेट कूप कैधों बापी कैधों सागर है
जेतो जल परै तेतो सकल समात है ॥
कैधों पेट भूत कैधों प्रेत कैधों राकस है
खावैं खावैं करै कहूँ नेक ना अघात है ।
सुन्दर कहत प्रभु कौन पाप लायो पेट
जब तें जनम लीन्हो तबहीं तें खात है ॥

कहावत है कि सुन्दरदास जी कुछ दिन लगातार रोज रात में सपना देखते थे कि मुझे कोई जूता मार रहा है । अन्त में हैरान होकर गुरु दादूदयाल जी के पास गए । गुरु जी ने कहा कि तूँ अंडबंड काव्य किया करता है सो जान पडता है कि किसी काव्य में अगण पड गया है; इस बीच में तैं ने जितनी कविता की है उन्हें मेरे सामने पढ डाल। सुन्दरदास गुरु की आज्ञा से कविता पढने लगे, पढते पढते एक जगह आया कि 'सुन्दर कोप नहीं सपने' इस पर झट दादू जी ने कहा कि बस इसी दुष्टकाव्य के कारण तुझे सपने में पनहीं (जूते) लगती है क्योंकि इस में पदच्छेद से 'सुन्दर को पनहीं सपने' ऐसा पाठ निकलता है सो कोप के स्थान में अभी कोह बना दे । सुन्दरदास ने झट 'कोह' बना दिया तब से फिर रात सपने में जूते न लगे । इसी बात से मुझे निश्चय है कि कबीर, कमाल, दादू इत्यादि महात्मा छन्दः शास्त्र में

बड़े निपुण थे; आज कल इनके ग्रन्थों में जो अनेक स्थान में छन्दो-भङ्ग दोष पाए जाते हैं वे लेखकों की असावधानी से हो गए हैं उन्हें शुद्ध कर ग्रन्थ छपाना चाहिए ॥

दादूपंथियों में दादूदयाल के विषय में अनेक कथाएँ लिखी हैं जिन्हें मैं अनुपयोगी समझ कर नहीं लिखा चाहता। बहुत लोग इनका जन्म विक्रम संवत् १६०१ फाल्गुनशुक्लाष्टमी गुरुवार को और मरण संवत् १६६० ज्येष्ठ कृष्णाष्टमी को मानते हैं।

कबीरदास अपने गुरु रामानन्द जी से ज्ञान न पाकर योगाभ्यास से घट के भीतर त्रिकुटी के ऊपर ब्रह्मगुफा के बीच प्राण को चढा लेने से परमपुरुष का दर्शन पाया इसलिये उस परमपुरुष को सद्गुरु वा उस पुरुष का जो दर्शन करा दे उसे सद्गुरु कहने लगे। कबीरदास के पहले किसी ने अपने ग्रन्थ में सद्गुरु का प्रयोग नहीं किया। एक पद में कबीरदास लिखते हैं—

नैहर में दाग लगाय आई चुँदरी। टेक
ऊ रँगरेजवा का मरम न जानै नहिं मिलै धोबिआ कवन करै उजरी ॥
तन की कूँडी ज्ञान का सौनन साबुन महँगा बिकाय येहि नगरी ॥
पहिरि ओढि के चली ससुररिआ गौआँ के लोग कहैं बडी फुहरी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो बिन सतगुरु कबहूँ नहिं सुधरी ॥

इस तरह से हजारों पदों में 'सतगुरु' का नाम है ॥

कबीरदास, कमाल और दादूदास कुछ पढे लिखे न थे। सेवकों के आग्रह से मौज में आकर कभीं कभीं अपने अनुभव से कुछ दोहे, गीत आदि बनाकर सुना देते थे, सेवक लोग उन्हें लिख लिया करते थे। बनारस प्रान्त में जन्म लेने से और यहाँ संस्कृत विद्या का अधिक प्रचार होने से काशी के पण्डितों के यहाँ इनके काव्यों और उपदेशों का विशेष आदर न हुआ इसलिये पश्चिमप्रान्त जयपुर, माडवार इत्यादि देशों में इनके उपदेशों का बडा ही प्रभाव पडा। वहाँ पर इन लोगों के ग्रन्थ बहुत ही पाए जाते हैं। उस प्रान्त में जैसी लिखने और बोलने की रीति ज्यूँ, त्यूँ, जाणों, घणों, इत्यादि प्रसिद्ध हैं उसी बोली में लिखे हुए इनके ग्रन्थ मिलते हैं। सभा के योग्य सभ्यों की सम्मति से

मैं ने दादू के ग्रन्थों से माड़वार लेखप्रणाली को बदल कर बनारस की लेखप्रणाली की रीति से इस ग्रन्थ को छपवाया और जहाँ तक हो सका छन्दोभङ्ग दोष को हटाया। मुझे यह विश्वास है कि ए महात्मा सन्त लोग प्रायः बनारस या ब्रज की भाषा में अपनी वाणी वा शब्दों को कहा होगा इसलिये इस प्रान्त की रीति से मैं ने केवल लिखावट को बदला है शब्दों को ज्यों का त्यों रक्खा है कहीं कहीं पारसी, जयपुरी इत्यादि भाषा में जो वाणी या शब्द हैं उन्हें यथासंभव उस भाषा के जाननेवालों से शुद्ध कराया है। मुझे दादूदास का लिखा हुआ प्रामाणिक जीवनचरित्र नहीं मिला, अनेक साधु महात्माओं से जो मुझे प्रामाणिक बातें मिलीं ऊपर उन्हीं की चर्चा की। इन महात्माओं के विषय में जिन सुजनों को प्रामाणिक बातें मिलें उन्हें निःसंशय लिखें और मेरे लेख का खण्डन करें क्योंकि सच्ची बातों का पता लगाना ही सुजनों का धर्म है। सच्ची बात चाहे जिस भाषा में लिखी जाय सर्वत्र वह माननीय है। इस घोर कलि में महात्मा कबीरदास, कमाल, रैदास, दादूदास, नामदेव, हरदास, गरीबदास, सुन्दरदास, गोपालदास, मुकुन्दभारती, सन्तदास, चित्रदास, जगजीवनदास, दूलम्हदास, शिवनारायणदास, पलटूदास, दरियादास, सतनाम, बखना बाई, सहजोबाई, तुलसी साहब इत्यादिओं ही के उपदेश से साधारण प्राणिओं को सन्तोष होता है इसलिये इस समय इन महात्माओं के ग्रन्थों का प्रकाश करना और इनके जीवन चरित्रों को साफ साफ वर्णन करना हिन्दी के प्रेमिओं का मुख्य कर्त्तव्य है॥

अन्त में सुजनों से प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ को अच्छी तरह से देख भाल कर अशुद्धिओं को ठीक करें और इन महात्माओं के ग्रन्थों का अच्छी तरह से संसार में प्रचार करें मैं नें तो केवल आप लोगों के उत्साह बढ़ाने के लिये इसे प्रकाश कर दिया है। दादू की वाणी और शब्द सर्वत्र एकही गुटके में लिखे मिलते हैं मैं ने पाठकों के हित के लिये अलग अलग कर दिया है क्योंकि एक में दोहे इत्यादि छन्द हैं और दूसरे ग्रन्थ में अनेक राग रागिनिओं में गीत हैं इसलिये इन दोनों को अलग रखना ही उचित है। आज कल प्रायः केवल पेट पालने ही के लिये महात्माओ के पथ में लोगप्रवृत्त होते हैं। प्रायः महन्तों

को इनकी वाणी और शब्दों से कुछ भी परिचय नहीं; महात्माओं के द्वारे मन्दिरों में ग्रन्थ पड़े सड़ रहे हैं। ग्रन्थों को छिपा रखना ही महन्तों का काम है। इन पथों के साधु लोग प्रायः अविद्या से भरे हैं। आज कल दादू इत्यादि के जितने लिखे ग्रन्थ पाए जाते हैं सब में एक एक पंक्तिओं में अनेक अशुद्धियाँ हैं। मात्रा की अशुद्धियों का कहीं ठिकाना नहीं; मुझे भी जो रे० ग्रीबृज साहब और बाबूश्रीराधाकृष्णदास के अनुग्रह से दादूदयाल जी के ग्रन्थ मिले उनमें भी यही दुर्दशा है। वाणी और शब्द सदुपदेशरस से भरे हैं जिनका सुखानुभव पढने ही से जान पडता है मैं लिख कर नहीं बता सकता ॥

सबरी गीध निषाद को जो किय आप समान ।
वही राम घटघट बसै वही सुधाकरप्रान ॥

सुधाकरद्विवेदी ।

श्रीदादूदयाल का सबद।

प्रथम राग गौडी माडी।

टेक। रामनाम नहिँ छाडहु भाई। प्रान तजेहु न निकट जिव जाई॥
रती रती करि डारइ मोहिँ। साईं संग न छाडहुँ तोहि॥
भावइ ले सिर करवत दे। जीवन मूरि न छाडहुँ ते॥
पावक मेँ तूँ डारइ मोहिँ। जरइ सरीर न छाडहुँ तोहि॥
अजब दादु अइसी बन आई। मिलहु गोपाल निसान बजाई॥१॥

टेक। रामनाम जिन छाडहु कोई। राम कहत जन निरमल होई॥
राम कहत सुख संपतिसार। रामनाम तरि लाँघे पार॥
राम कहत सुधि बुधि मति पाई। रामनाम जिन छाडहु भाई॥
राम कहत जन निरमल होई। रामनाम कहि कसमल धोई॥
राम कहत को को नहिँ तारे। यह तत दादू प्रान हमारे॥२॥

टेक। कौन बिधि पाइये रे। मीत हमारा सोइ॥
पास पीय परदेस है रे। जब लग प्रगटइ नाहिँ॥
बिन देखे दुख पाइये रे। यह सालइ मन माहिँ॥
जब लग नैन न देखिये रे। परगट मिलइ न आइ॥
एक सेज सँग रहइ रे। यह दुख सहा न जाइ॥
तब लग नेरे दूर है रे। जब लग मिलइ न मोहिँ॥
नैन निकट नहिँ देखिये रे। संग रहे का होहिँ॥
कहा करहुँ कइसे मिलहि रे। तलफइ मेरा जीव॥
दादू आतुर बिरहिनी रे। कारन अपने पीव॥ ३॥

टेक। जिअरा क्यों रहइ रे। तुम्हारे दरसन बिन बेहाल ॥
परदा अंतर करि रहे। जीवहिँ हम केहि आधार ॥
सदा सँघाती प्रीतमा। अब की लेहु उबार ॥
गुपुत गोसाईं होइ रहे। अब काहे न परगट होइ ॥
रामसनेही संगिया। दूजा है नहिँ कोइ ॥
अंतरजामी छिप रहे। हम क्यों जीवहिँ दूर ॥
तुम्ह बिन ब्याकुल केसवा। नैन रहे जल पूर ॥
आप अपरछन होइ रहे। हम क्यों रैन बिहाइ ॥
दादू दरसन कारनहिँ। तलफ तलफ जिव जाइ ॥ ४ ॥

टेक। अजहूँ न निकसे प्रान कठोर।
दरसन बिना बहुत दिन बीते सुंदर प्रीतम मोर ॥
चार पहर चारहु जुग बीते। रैन गवाँई भोर ॥
अवध गये अजहूँ नहिँ आये। कतहूँ रहे चित चोर ॥
कबहूँ नैन निरखि नहिँ देखे। मारग चितवत तोर ॥
दादू अइसहि आतुर बिरहिनि। जइसहि चंद चकोर ॥५॥

टेक। सो धन पियजी सेज सँवारी।
अब बेगि मिलहु तन जाइ बनवारी ॥
साज सिँगार किया मन माहीँ। अजहूँ पीय पसीजइ नाहीँ॥
पीय मिलन को अहनिस जागी। अजहूँ मेरी पलक न लागी॥
जतन जतन करि पंथ निहारहुँ।
पिय भावइ त्यों आप सँवारहुँ ॥
अब सुख दीजइ जाउँ बलिहारी।
कहइ दादू सुनि बिपति हमारी ॥ ६ ॥

टेक। सो दिन कबहूँ आवइगा। दादू पडा पिय पावइगा॥
क्यों ही अपने अंग लगावइगा। तब सब दुख मेरा जावइगा ॥
पिय अपना बैन सुनावइगा। तब आनँद अंग समावइगा ॥

पिय मेरी प्यास मिटावइगा । आपहि प्रेम पिआवइगा ॥
यह अपना दरस दिखावइगा । तब दादू मंगल गावइगा ॥७॥

टेक । तैं मन मोहा मोर रे । रहि न सकहुँ हो राम जी ॥
तोरे नाईं चित लाइया रे । और निबहा उदास ॥
साईं ये समुझाया हउँ । संग न छोडहुँ पास रे ॥
जानहु तिलहु न बीछुडहु रे । जिन पछतावा होइ ॥
गुन तेरे रसना जपउँ । सुन श्रीसाईं सोइ रे ॥
भवँराहिं जनम गवाँइया रे । चीन्हा नहीं सो सार रे ॥
अजहूँ यह अचेत है । और नहीं आधार रे ॥
पिय की प्रीति तो पाइये रे । जो सिर होवइ भाग ॥
यों तो अनत न जाइहउँ रे । रही श्रीचरनहुँ लाग रे ॥
अनतै मन निवारिया । मोहिं एकहि सेतीं काज ॥
अनत गये दुख पाइये । मोहिं एकहि सेतीं राज रे ॥
साईं सों सहजहिं रमहु रे । और नहीं आन देव ॥
तहाँ मन बिलंबिया । जहाँ अलख अगोचर अभेव रे ॥
चरनकमल चित लाइया रे । भवँराहिं ले भाव ॥
दादू जन अचेत है । सहजइ हउँ तूँ आव रे ॥ ८ ॥

टेक । बिरहिन को सिंगार न भावइ । है कोई अइसा राम मिलावइ ॥
बिसरे अंजन मंजन चीरा । बिरह व्यथा यह व्यापइ पीरा ॥
नव सत थाके सकल सिँगारा । है कोइ पीर मिटावनहारा ॥
देह गेह नहिं सुधि सरीरा । निस दिन चितवत चातक नीरा ॥
दादू ताहि न भावइ आन । राम बिना भइ म्रितक समान ॥९॥

टेक । अब तो मोहिं लागी बाई । उन निहचल चित लियेहु चुराई ॥
आन न रुचइ और नहिं भावइ । अगम अगोचर तहाँ मन जाइ ॥
रूप न रेख बरन कहु कइसा । तिन्ह चरनहुँ चित रहा समाइ ॥

तिन्ह चरनहुँ चित सहज समाना । सो रस भीना तहाँ मन धाइ॥
अब तो अइसी बन आई । बिष ताजि अम्रित खाइ ॥
कहा करहुँ मेरा बस नाहीँ । और न मेरे अंग सोहाइ ॥
पल एक दादू देखन पावइ । जनम जनम की त्रिखा बुझाइ॥१०॥

टेक । तूँ जिन छाडइ केसवा । मोरे ओर निबाहनहार हो ॥
औगुन मेरे देखि कर । तूँ ना करि मइला मन ॥
दीनानाथ दयाल है । अपराधी सेवक जन हो ॥
हम अपराधी जनम के । नख सिख भरे बिकार ॥
मेटि हमारे औगुना । तूँ घर का सिरजनहार हो ॥
मैँ जन बहुत बिगारिया । अब तुम्ह ही लेहु सँवार ॥
समरथ मेरा साईंयाँ । तूँ आपइ आप उधार हो ॥
तूँ न बिसारो केसवा । मैँ जन भूला तोहि ॥
दादू और निबाहि ले । अब जिन छाडइ मोहिँ हो ॥११॥

टेक । राम सँभारिये रे । बिषम दुहेली बार ॥
मंझि समंदा नाव परी रे । बूडइ केवट बाज ॥
काढनहारा कोइ नहीँ । एक राम बिन आज ॥
पार न पहुँचइ राम बिन । बेडा भवजल माहिँ ॥
तारनहारा एक तूँ । दूजा कोई नाहिँ ॥
पार परोहन तो चलइ । तुम्ह खेवहु सिरजनहार ॥
भवसागर मेँ डूबिहइ । तुम्ह बिन प्रान अधार ॥
अवघट दरिया क्योँ तरइ । बोहित बइठनहार ॥
दादू केवट राम बिन । कौन उतारइ पार ॥ १२ ॥

टेक । पार नहीँ पाइये रे । राम बिना को निबाहनहार ॥
तुम्ह बिन तारन कोई नहीँ रे । दूभर येहि ससार ॥

पैरत थाके केसवा। सूझइ वार न पार ॥
बिषम भयानक भवजला रे। तुम्ह बिन भारी होइ ॥
तूँ हरि तारन केसवा। दूजा नाहिँ कोइ ॥
तुम्ह बिन केवट कोइ नहीँ रे। अतिर तरहुँ नहीँ जाइ ॥
अवघट बेडा बूडिहइ। नहीँ आन उपाइ ॥
यह घट अवघट बिषम है रे। डूबत माहिँ सरीर ॥
दादू कायर राम बिन। मन नहिँ बाँधइ धीर ॥ १३ ॥

टेक। क्योँ हम जीवहिँ दास गोसाईँ।
जो तुम्ह छाडहु समरथ साईँ ॥
जो तुम्ह जन को मनहिँ बिसारा।
तो दूसर कौन सम्हारनहारा ॥
जो तुम्ह परहरि रहहिँ निनारे।
तो सेवक जाइ किन्ह के द्वारे ॥
जो जन सेवक बहुत बिगारइ।
साहिब घर का दोष निवारइ ॥
समरथ साईँ साहिब मेरा।
दादू दास दीन है तेरा ॥ १४ ॥

टेक। क्योँ कर मिलहिँ मोँ को रामगोसाईँ।
यह बिखिया मेरे बस नाहीँ ॥
यह मन मेरा दह दिस धावइ।
नियरे राम न देखन पावइ ॥
जिभ्या स्वाद सबइ रस लागइ।
इंद्री भोग बिषय क्योँ जागइ ॥
स्रवनहुँ साच कधीँ नहिँ भावइ।
नैन रूप तहँ देखि लोभावइ ॥
काम औ क्रोध कधीँ नहिँ छीजइ।

लालच लागि बिषय रस पीजइ ॥
दादू देख मिलइ क्यों साईं ।
बिषय बिकार बसइ मन माहीं ॥ १५ ॥

टेक। जौं रे भाई राम दया नहिं करते।
नउका नावँ केवट हरि आपइ।
यों बिन क्यों निसतरते ॥
करनी कठिन होत नहीं मो पै। क्यों कर ये दिन भरते ॥
लालच लागि परत पावक में । आपहि आप सो जरते ॥
स्वादहि संग बिषय नहिं छूटइ। मन निहचल नहिं धरते ॥
खाइ हलाहल सुख के ताईं । आपहि पचि पचि मरते ॥
कामी कपटी क्रोध कया में । कूप परत नहीं डरते ॥
करवत काम सीस धरि अपनहिं । आपहि आप बिहरते।
हरि अपना अँग आप न छाडइ। अपनी आप बिचरते ॥
पिता क्यों पूत को मारइ। दादू यों जन तरते ॥ १६ ॥

टेक। तब लग तूँ जिनि मारइ मोहिं।
जब लग मैं देखहुँ नहिं तोहि ॥
अब की बिछुरे मिलन कैसे होई ।
येहि बिधि बहुरि न चीन्हइ कोई ॥
दीनदयाल दया करि जोई।
सब सुख आनँद तुम्ह तें होई ॥
जनम जनम के बंधन खोई।
देख न दादू अहनिस रोई ॥ १७ ॥

टेक। संग न छाडहु मेरा पावन पीव।
मैं बलि तेरे जीवन जीव ॥

संग तुम्हार सब सुख होई।
    चरनकमल मुख देखहुँ तोही॥
अनेक जतन करि पाया सोइ।
    देखहुँ नैनहुँ तो सुख होइ॥
सरन तुम्हारे अंतरबास।
    चरनकमल तहाँ देहु निवास॥
अब दादू मन अनत न जाइ।
    अंतर बेधि रहहु लव लाइ॥ १८॥

टेक। नहीं मेल्हहुँ राम नहीं मेल्हहुँ।
    चित तुम्ह सों बाँधहुँ नहीं मेल्हहुँ॥
मैं तुम्ह काजहिं ताला बेली।
    इहवैं किमि मूनहि जाइम्नि मेली॥
साहसी तूँ ने मन मों गाढहु।
    चरन समानहुँ केहि पर काढहु॥
राखि सिर देइ तुम्हारहु स्वामी।
    मैं दुहि लेहिं प्रानहुँ अंतरजामी॥
इहँइ न मेल्हहु तूँ स्वामी मोरउ।
    दादू सनमुख सेवक तोरउ॥ १९॥

टेक। राम सुनहु न बिपति हमारी हो।
    तेरी मूरति की बलिहारी हो॥
मैं जो चरन चित चाहना।
    तुम्ह सेवक सारना॥
तेरे दिन प्रीति चरन दिखावना।
    करि दया अंतर आवना॥

जिन दादू बिपति सुनावना ।
तुम्ह गोबिँद तपन बुझावना ॥ २० ॥

प्रश्न ।

टेक । कौन भाँति भल मानइ गोसाईँ ।
तुम्हे भावइ सो मैँ जानत नाहीँ ॥
को भल मानहिँ नाचहिँ गावहिँ ।
को भल मानहिँ लोक रिझावहिँ ॥
को भल मानहिँ तीरथ न्हाये ।
को भल मानहिँ मूँड मुडाये ॥
को भल मानहिँ सब घर त्यागी ।
को भल मानहिँ भये बैरागी ॥
को भल मानहिँ जटा बँधाये ।
को भल मानहिँ भसम लगाये ॥
को भल मानहिँ बन बन डोले ।
को भल मानहिँ मुखहि न बोले ॥
को भल मानहिँ जप तप कीये ।
को भल मानहिँ करवत लीये ॥
को भल मानहिँ ब्रह्मज्ञानी ।
को भल मानहिँ अधिक ध्यानी ॥
जो तुम्ह भावइ सो तुम्ह पै आइ ।
दादू न जानहिँ कहि समझाइ ॥
जबाब की साखी ॥

टेक । दादू जो तूँ समझइ तो कहहुँ । साचा एक अलेख ॥
डार पात तजि मूल गहि । का दिखलावइ भेख ॥

सच बिन साईं ना मिलइ। भावइ भेष बनाइ॥
भावइ करवत अरध मुख। भावइ तीरथ जाइ॥ २१॥

टेक। अहो गुन तोर अवगुन मोर गोसाईं।
तुम्ह कित कीन्हा सो मैं जानत नाहीं॥
तुम्ह उपकार किये हरि केते। सो हम बिसरि गये॥
आप उपाय अगिनमुख राखइ। तहँ प्रतिपाल भये॥
नख सिख साज किये हो सजीवन। उदर अधार दिये॥
अन्न पान जहँ जाइ भसम होइ। तहाँ तैं राखि लिये॥
दिन दिन जानि जतन करि पोषे। सदा समीप रहे॥
अगम अपार किये गुन केते। कबहूँ नाहिं कहे॥
कबहूँ नाहीं तुम्ह तन चितवत। माया मोह परे॥
दादू तुम्ह तजि जाइ गोसाईं। बिषयी नाहिं तरे॥ २२॥

टेक। कइसे जीवहिं रे। साईं संग न पास॥
चंचल मन निहचल नहीं। निस दिन फिरइ उदास॥
नेह नहीं रे राम का। प्रीत नहीं परकास॥
साहिब का सुमिरन नहीं। करइ मिलन की आस॥
जिन्ह देखे तूँ फरिया रे। पिंड बँधोना मास॥
सो भी जरि बरि जाइगा। झूठा भोग बिलास॥
तब जीव जो जीवना। सुमिरइ साँसहिं साँस॥
दादू परगट पिय मिलइ। अंतर होइ उजास॥२३॥

टेक। जियरा मेरा सुमिरि सार। काम क्रोध मद तजि बिकार॥
तूँ जिन भूलइ मन गवाँर। सिर भार न लीजइ मानि हार॥
सुनि समझावउँ बार बार। अजहूँ न चेतइ हो हुसियार॥
करि तइसहि भव तरिये पार। दादू अब तैं यह बिचार॥२४॥

टेक। जियरा चेतो रे जिन जारइ ।
हे जो हरि सों प्रीति न कीन्ही ।
जनम अमोलिक हारइ ॥
बेर बेर समझावहु रे जियरा । चेत न होउ गवाँरे ॥
यह तन है कागद की गुडिया । कछु एक चेत बिचारे ॥
तिल तिल तुझ को हानि होत है । जो पल राम बिसारहि ॥
भय भारी दादू के जीय में । कहु कैसे करि डारहि ॥ २५ ॥

टेक। जियरा काहे रे मूढ डोलइ ।
बनबासी लाला पुकारा ।
तूँ ही तूँ ही करि बोलइ ॥
साथ साँवरा ले न गयो रे । चालन लागइ बोलइ ॥
तब जाइ जियरा जानइगा रे । बाँधे ही का खोलइ ॥
तिल तिल माहीँ चेत चली रे । पंथ हमारा तोलइ ॥
गहिरा दादू कछू न जानइ । राखि ले मेरे मोलइ ॥ २६ ॥

टेक । ता सुख को कहउ का कीजइ । जा तें पल पल यह तन छीजइ॥
आसन कुंजर सिर छत्र धरीये । ता तें फिर फिर दुःख सहीये॥
सेज सँवारि सुँदरि सँग रमिये । खाइ हलाहल भरमि के मरिये ॥
बहु बिधि भोजन मानि रुचि लीजइ ।
स्वाद सँकुटि भरमि पास परीजइ ॥
ये तजि दादू प्रान पतीजइ । सब सुख रसना राम रमीजइ॥२७

टेक । मन निरमल तन निरमल भाई । आन उपाय बिकार न जाई ॥
जो मन काइला तो तन कारा ।
कोटि करहिँ नाहिँ जाइ बिकारा ॥
जो मन बिषहर तो तन भुवंगा ।

करइ उपाय बिषय पुनि संगा ॥
मन मैला तन ऊजर नाहीं।
बहु पचि हारे बिकार न जाहीं ॥
मन निरमल तन निरमल होई। दादू साच बिचारइ कोई ॥२८॥

टेक। का जीना का मरना रे भाई।
जो तैं राम निरमासि अघाई ॥
का सुख संपति छत्रपति राजा।
बनखँड जाइ बसे केहि काजा ॥
का बिद्या गुन पाठ पुराना। का मूरुख जो तैं राम न जाना ॥
का आसन करि अहनिस जागे।
का फिर सोवत राम न लागे ॥
का फिर बाँधे मुकती होई। दादू राम न जाना सोई ॥ २९ ॥

टेक। मन रे राम बिना तन छीजइ।
जब यह जाइ मिलइ माटी में।
तब कहु कइसहि कीजइ ॥
पारस परस कँचन करि लीजइ। सहज सुरत सुखदाई ॥
माया बेलि बिषय फल लागे। ता पर भूल न भाई ॥
जब लग प्रान पिंड है नीका। तब लग तूँ जिन भूलइ ॥
इस संसार सेमर के सुख ज्यों। ता पर तूँ जिंनि फूलइ ॥
औसर यँही जानि जग जीवन। समझ देखि सच पावइ ॥
अग अनेक आन मति भूलइ। दादू जिन डहँकावइ ॥ ३० ॥

टेक। मोहेउ मृग देखि बन अंधा। सूझत नाहिं काल के फंधा ॥
फूलहु फिरत सकल बन माहीं। सिर साधे सिर सूझत नाहीं ॥
उद्दम द्रुमा तो बन के ठाट। छाडि चलहु सब बारह बाट ॥

फँदहु न जानहिँ बन के चाइ।
दादू स्वाद बँधानेउँ आइ॥ ३१॥

टेक। काहे रे मन राम बिसारइ।
मनी खाय जनम जाइ जीव हारइ॥
मात पिता को बंधन भाई। सब ही सपना कहाँ सगाई॥
तन धन जोबन झूठा जानी। राम हिदय धरि सारँग पानी॥
चंचल चित बित झूठी माया। काहे न चेतइ सो दिन आया॥
दादू तन मन झूठा कहिये। रामचरन गहि काहे न रहिये॥३२॥

टेक। अइसा जनम अमोलिक भाई।
जा मेँ आइ मिलइ रामराई॥
जा मेँ प्रान प्रेमरस पीवइ। सदा सोहाग सेज सुख जीवइ॥
आतमा आइ राम सोँ राती। अखिल अमरधन पावइ थाती॥
परगट दरसन परसन पावइ।
परमपुरुष मिलि माहिँ समावइ॥
अइसा जनम नहीँ नर आवइ। सो क्योँ दादू रतन गवाँवइ॥३३॥

टेक। संत सँगति माँगे न पाइये। गुरू प्रसाद तेँ राम गाइये॥
अकास धरनी धरीजइ धरनी अकास कीजइ।
सुनि माहेँ निरखि लीजइ॥
निरखि मुकता हम माहेँ सायर आवहु।
अपने पिया को धावत खोजत पावहु॥
सोच सायर अगोचर हिये।
देव देव रे माहेँ को न कहिये॥
हरि को हितारथ ऐसा लखइ न कोई।
दादू जो पिय पावइ अमर होई॥ ३४।

टेक । कौन जनम कहाँ जाता है ।
अरे भाई राम छाडि कहाँ राता है ॥
मैं मैं मेरी इन सों लाग । स्वाद पतंग न सूझइ आग ॥
बिषयी सो रत गरब गुमान । कुंजर काम बँधे अभिमान ॥
लोभ मोह मद माया फंध । ज्यों जल मीन न चेतइ अंध ॥
दादू यह तन यों ही जाय । रामबिमुख मरि गये बिलाय ॥३५॥

टेक । मन मूरख तैं का कीया । कुछ पिय कारन बैराग न लीया ॥
रे तैं जप तप साधि का दीया ॥
रे तैं करवत कासी कधी सहा । रे तूँ गंगा माहैं ना बहा ॥
रे तैं बिरहिन ज्यों दुख ना सहा ॥
रे तूँ पारइ परबत ना गला । रे तैं आपहि आपा ना दहा ॥
रे तैं पिय पुकारी कधी न कहा ॥
होइ प्यासे हरि जल ना पिया । रे तूँ बृथा न फाटेहु रे हिया ॥
धृग जीवन दादू ये जिया ॥ ३६ ॥

टेक । का कीजइ मनुषा जनम को । राम न जपहिं गवाँरा ॥
माया के मद माते बहइ । भूलि रहे संसारा ॥
हिरदय राम न आवइ । आवइ बिषय बिकारा रे ॥
हरि मारग सूझइ नहीं । कूप परत नहिं बारा रे ॥
आपा अगिन जो आप में । ता तें अह निस जरइ सरीरा रे ॥
भाव भगति भावइ नहीं । पीवइ नहिं हरि जल नीरा रे ॥
मैं मेरा सब सूझइ । सूझइ मायाजाल रे ॥
रामनाम सूझइ नहीं । अंध न सूझइ काल रे ॥
अइसहिं जनम गवाँइया । जित आया तित जाये रे ॥
रामरसायन ना पिया । जिन दादू हेतु लगाये रे ॥ ३७ ॥

टेक। इन में का लीजइ का दीजइ। जनम अमोलिक छीजइ॥
सोवत सपना होई। जागे तें नहिं कोई॥
मृग तृष्ना जल जइसा। चेत देख जग अइसा॥
बाजी भरम दिखावा। बाजीगर सो कहावा॥
दादू संगी तेरा। कोई नहीं किसी केरा॥ ३८॥

टेक। मालिक जागइ जियरा सोवइ। क्यों कर मेला होवइ॥
सेज एक नहिं मेला। ता तें प्रेम न खेला॥
साईं संग न पावा। सोवत जनम गवाँवा॥
गाफिल नींद न कीजइ। आयु घटइ तन छीजइ॥
दादू जीव अयाना। झूठे भरमि भुलाना॥ ३९॥

टेक। काहे रे नर करहु डफाना। अंत काल घर गोर मसाना॥
पहिले बलिवंत गये बिलाइ। ब्रह्मा आदि महेस्वर जाइ॥
आगे होते मोटे मीर। गये छाडि पैगंबर पीर॥
काजी देह कहा गरवाना। जो उपजा सो सबइ बिलाना॥
दादू अमर उपजवनहार। आपहि आप रहइ करतार॥ ४०॥

टेक। इत घर चोर न मूसइ कोई। अंत रहै जो जानइ सोई॥
जागहु रे जन तत्त न जाई। जागत है सो रहा समाई॥
जतन जतन करि राखहु सार। तसकर उपजइ कौन बिचार॥
अब करि दादू जानहिं जे। ते साहिब सरनागति ले॥ ४१॥

टेक। मेरा मेरा करत जग छीना। देखत ही चल जावहिं॥
काम क्रोध तृष्ना तन जारइ। ता तें पार न पावहिं॥
मूरख मतिमंद जनम गवाँवइ। भूलि रहे येहि बाजी॥
बाजीगर को जानत नाहीं। जनम गवाँवइ बाजी॥

परपँच पंच करइ बहुतेरा । काल कुटुंब के ताईं ॥
बिष के स्वाद सबइ ये लागे । ता तें चीन्हत नाहीं ॥
ये बाजी मैं जानत नाहीं । आइ कहाँ चलि जावइ ॥
आगे पीछे समझइ नाहीं । मूरख यों डहकावइ ॥
ये सब भरमि मान भल पावहिं । सोधि लेहु सो साईं ॥
सोई एक तुम्हारा साजन । दादू दूसर नाहीं ॥ ४२ ॥

टेक । मैं मैं करत सबइ जग जावइ । अजहूँ अंध न चेते रे ॥
यह दुनिया सब देखि दिवानी । भूलि गये हैं केते रे ॥
मैं मेरे माँ भूलि रहे रे । साजन सोई बिसारा ॥
आया हीरा हाथ अमोलिक । जनम जुआ ज्यों हारा ॥
लालच लों मैं लागि रहे रे । जानत मेरी मेरा ॥
आपहि आप बिचारत नाहीं । तूँ काको को तेरा ॥
आवत है सो जाता दीखइ । इन में तेरा नाहीं ॥
इन सों लागि जनम जिन खोवइ । समझि देख सच माहीं ॥
निहचल सों मन मानहि मेरा । साईं सों बनि आई ॥
एक तुम्हारा साजन ऐसा । जिन यह भुरकी लाई ॥ ४३ ॥

टेक । गरब न कीजिये रे । गरबहि होय बिनास ॥
गरबहि गोविँद ना मिलइ । गरबहि नरक निवास ॥
गरब रसातल जाइये । गरबहि घोर अँधार ॥
गरबहि भवजल डूबिये । गरबहि वार न पार ॥
गरबहि पार न पाइये । गरबहि जमपुर जाइ ॥
गरबहि छूटइ नहीं । गरबहि बंधे आइ ॥
गरबहि भाव न उपजइ । गरबहि भगति न होइ ॥
गरबहि पिय क्यों पाइये । गरब करइ जिन कोइ ॥

गरबहि बहुत बिनास है । गरबहि बहुत बिकार ॥
दादू गरब न कीजिये । सनमुख सिरजनहार ॥ ४४ ॥

टेक । हुसियार नहीँ मन मारइगा । साईं सतगुरु तारइगा ॥
माया का सुख भावइ रे । मूरख मन बउराबइ रे ॥
झूठ साच करि जाना । इंद्री स्वाद भुलाना रे ॥
दुःख को सुख करि मानहिँ । काल झार नहीँ जानहिँ रे ॥
दादू कहि समझावइ । यह अवसर बहुरि न आवइ रे ॥ ४५ ॥

टेक । साहिब जी सत मेरा रे । लोग झँखइ बहुतेरा रे ॥
जीव जनम जब पाया रे । मस्तकलेख लिखाया रे ॥
घटइ बढइ कुछ नाहीँ । करम लिखा उस माहीँ रे ॥
बिधाता बिधि कीन्हा । सिरिजि सबन को दीन्हा रे ॥
समरथ सिरजनहारा । सो तेरे निकट गवाँरा रे ॥
सकल लोक फिरि आवइ । तब दादू दीया पावइ रे ॥ ४६ ॥

टेक । पूरन रहा परमेस्वर मेरा । अन्न माँग देवइ बहुतेरा ॥
सिरजनहार सहज मेँ देई । तो काहे धाई माँगि जिन लेई ॥
बिसंभर सब जग को पूरइ । उदर काज नर काहे झूरइ ॥
पूरक पूरा है गोपाल । सब कर चिंत करइ हर हाल ॥
समरथ सोई है जगनाथ । दादू देख रहे सँग साथ ॥ ४७ ॥

टेक । रामधन खात न छूटइ रे ।
अपरंपार नहीँ आवइ आप न टूटइ रे ॥
तसकर लेइ न पावक जारइ । प्रेम न छूटइ रे ॥
चहुँ दिस पसरहु बिन रखवारे । चोर न लूटइ रे ॥
हरि हीरा है राम रसायन । सरस न सूखइ रे ॥
दादू और आथ बहुतेरी । तुस नर कुटइ रे ॥ ४८ ॥

टेक। तूँ है तूँ है तूँ है तेरा। मैं नहिं मैं नहिं मैं नहिं मेरा॥
तूँ है तेरा जग उपजाया। मैं मैं मेरा धंधइ लाया॥
तूँ है तेरा खेल पसारा। मैं मैं मेरा कहहिं गवाँरा॥
तूँ है तेरा सब संसारा। मैं मैं मेरा तिन्ह सिर भारा॥
तूँ है तेरा काल न खाइ। मैं मैं मेरा मरि मरि जाइ॥
तूँ है तेरा रहा समाइ। मैं मैं मेरा गया बिलाइ॥
तूँ है तेरा तुम्हही माहिं। मैं मैं मेरा मैं कछु नाहिं॥
तूँ है तेरा तूँ ही होइ। मैं मैं मेरा मिला न कोइ॥
तूँ है तेरा लाँघइ पार। दादू पाया ज्ञान विचार॥४६॥

टेक। रामबिमुख जग मरि मरि जाइ। जीवहिं संत रहे लव लाइ॥
लीन भये जो आतमरामा। सदा सजीवन कीये नामा॥
अमृत रामरसायन पीया। ता तें अमर कबिरा कीया॥
राम राम कहि राम समाना। जन रयदास मिले भगवाना॥
आदि अंत केते कलि जागे। अमर भये अबिनासी लागे॥
रामरसायन दादू माते। अबिचल भये रामरँग राते॥५०॥

टेक। निकट निरंजन लागि अये। तब हम जीवनमुक्त भये॥
मरि कर मुकति जहाँ जग जाई। तहाँ न मेरा मन पतिआई॥
आगे जनम लहहिं अवतारा। तहाँ न मानइ मना हमारा॥
तन छूटइ गति जो पति होई। मिरतक जीव मिलइ सब कोई॥
जीवत जनम सुफल करि जाना। दादू राम मिले मनमाना॥५१॥

टेक। कादिर कुदरति लखी न जाई। कहाँ तें उपजइ कहाँ समाई॥
कहाँ तें कीन्ह पवन अरु पानी। धरनि गगन गति जाइ न जानी॥
कहाँ तें काया प्रान प्रकासा। कहाँ पंच मिलि एक निवासा॥
कहाँ तें एक अनेक दिखावा। कहाँ तें सकल एक होइ आवा॥
दादू कुदरति बहु हैराना। कहाँ तें राखि रहे रहिमाना॥

सबदहि बंधा सब रहहिं । सबदे ही सब जाइ ॥
सबदे ही सब ऊपजइ । सबदइ सबइ समाइ ॥ ५२ ॥

टेक । अइसा राम हमारा आवइ । वार पार कोइ अंत न पावइ ॥
हलका भारी कहा न जाइ । मोल नाप नहिं रहा समाइ ॥
कीमति लेखा नाहिं परिमान । सब पचि हारे साधु सुजान ॥
आगे पीछे परमित नाहिं । केते पारिख आवहिं जाहिं ॥
आदि अंत मधि कहइ न कोई । दादू देखइ अचरज होई ॥५३॥

प्रश्न ।

टेक । कौन सबद कौन परखनहार । कौन सुरति कहु कौन बिचार ॥
कौन सज्ञाता कौन गियान । कौन उनमनी कौन धियान ॥
कौन सहज कहु कौन समाध । कौन भगति कहु कौन अराध ॥
कौन जाप कहु कौन अभ्यास । कौन प्रेम कहु कौन पियास ॥
सेवा कौन कहै गुरुदेव । दादू पूछइ अलख अभेव ॥ ५४ ॥

उत्तर की साखी ।

आपा गरब गुमान तजि । मद मच्छर अहँकार ॥
गहइ गरीबी बंदगी । सेवा सिरजनहार ॥
आपा मेटइ हरि भजइ । तन मन तजइ बिकार ॥
निरबैरी सब जीव सों । दादू यह मत सार ॥ ५५ ॥

प्रश्न ।

टेक । मैं नहिं जानहुँ सिरजनहार । ज्यों है त्यों ही कहो करतार ॥
मस्तक कहाँ कहाँ कर पाई । अबिगत नाथ कहहु समझाई ॥
कहाँ मुख नैना स्रवना साँई । जान राय सब कहाँ गोसाँई ॥
पेट पीठ कहाँ है काया । परदा खोलि कहहु गुरुराया ॥
ज्यो है त्यों कह अंतरजामी । दादू पूछइ सतगुरु स्वामी ॥५६॥

उत्तर की साखी।

दादू सबइ दिसा सो सरीका। सबइ दिसा मुख बैन॥
सबइ दिसा स्रवनहुँ सुनहिँ। सबइ दिसा कर नैन॥
सबइ दिसा पग सीस है। सबइ दिसा मन चैन॥
सबइ दिसा सनमुख रहइ। सबइ दिसा अँग पेन॥ ५७॥

प्रश्न।

टेक। अलखदेव गुरु देहु बताई। कहाँ रहहु त्रिभुवनपतिराई॥
धरती गगन बसहु कैलास। तिहूँ लोक मेँ कहाँ निवास॥
जल थल पावक पवना पूर। चंदा सूरज निकट की दूर॥
मंदिर कौन कौन घर बार। आसन कौन कहहु करतार॥
अलखदेव गति लखी न जाय। दादू पूछइ कह समझाय॥ ५८॥

उत्तर की साखी।

मुझ ही माहँ मैँ रहूँ। मैँ मेरा घरबार॥
मुझ ही माहँ मैँ बसउँ। आप कहइ करतार॥
मैँ ही मेरा अरस मेँ। मैँ ही मेरा थान॥
मैँ ही मेरी ठौर मेँ। आप कहइ रहिमान॥
मैँ ही मेरे आसरे। मैँ मेरे आधार॥
मेरे तकिये मैँ रहूँ। कहइ सिरजनहार॥
मैँ ही मेरी जाति मेँ। मैँ ही मेरा अंग॥
मैँ ही मेरे जीव मेँ। आप कहइ परसंग॥ ५९॥

पद।

टेक। रामरस मीठा रे। कोई पीवइ साधु सुजान।
सदा रस पीवइ प्रेम सोँ। सो अबिनासी प्रान॥
येहि रस मुनि लागे सबइ। ब्रह्मा बिस्नु महेस॥

सुर नर साधू संत जन। सो रस पीवइ सेस ॥
सिध साधक जोगी जती। सती सबइ सुख देव ॥
पीअत अंत न आवइ। अइसा अलख अभेव ॥
येहि रस राते नामदेव। पिया और रयदास ॥
पीअत कबिरा ना थकइ। अजहूँ प्रेम पियास ॥
यह रस मीठा जिन्ह पिया। इस हीं माहिँ समाइ ॥
मीठे मीठा मिलि रहा। दादू अंत न जाइ ॥ ६० ॥

टेक। मन मतवाला मद पीवइ। पीवइ बारंबार रे ॥
हरि रस राते राम के। सदा रहइ एक तार रे ॥
भाव भगति भाठी भई। काया करनी सारो रे ॥
पिता मेरे प्रेम का। सदा अखंडित धारो रे ॥
ब्रह्मअगिनि जोबन जरइ। चेतन चेत उजासो रे ॥
सुमति कला नीसारवे। पीवइ बिरला दासो रे ॥
आया घन सब सों पिया। तब रस पाया सारो रे ॥
प्रीति पियाले पीवहीं। छिन छिन बारंबारो रे ॥
आपा पर नहिँ जानिया। भूले मायाजालो रे ॥
दादू हरि रस जो पिवहिँ। कधी न लागइ कालो रे ॥ ६१ ॥

टेक। रस के रसिया लीन भये। सकल सिरोमनि तहाँ गये ॥
रामरसायन अमृत माते। अबिचल भये नरक नहिँ जाते ॥
राम रसायन भरि भरि पीवहिँ। सदासजीवन जुग जुग जीवहिँ ॥
रामरसायन त्रिभुवनसार। रामरसिक सब उतरे पार ॥
दादू अमली बहुरि न आये। सुख सागर ता माहिँ समाये ॥६२॥

टेक। भेष न रीझइ मेरो निज भरतार।
ता तेँ कीजइ प्रीति बिचार।
दुराचारिनी रचि भेष बनावइ।

सील साच नहिँ पिय को भावइ ॥
कंत न भावइ करइ सिँगार।
डिंभपनैहिँ रीझइ संसार ॥
जो पतिबरता होइहइ नारी।
सो धन भावइ पीय पियारी ॥
पिय पहिचानहिँ आन नहिँ कोई।
दादू सोई सोहागिन होई ॥६३॥

टेक। सब हम नारी एक भरतार। सब कोई तन करहिँ सिँगार ॥
घर घर अपना सेज सँवारइ। कंत पियारा पंथ निहारइ ॥
आरत अपनी पिय को धावहिँ। मिलइ नाह कब अंग लगावहिँ ॥
अतिआतुर ये खोजत डोलहिँ। बाना परी बियोगिन बोलहिँ ॥
सब हम नारी दादू दीन। दई सोहाग काहु सँग लीन ॥ ६४ ॥

टेक। सोई सोहागिन साच सिँगार।
तन मन लाइ भजइ भरतार ॥
भाव से भगति प्रेम लव लावइ।
नारी सोई सार सुख पावइ ॥
सहज सँतोष सील सब आया।
नारि नाह अमोलिक पाया ॥
तन मन जोबन सौँपि सब दीन्हा।
कंत रीझाइ आप बस कीन्हा ॥
दादू बहुरि बियोग न होई।
पिय सोँ प्रीति सोहागिन सोई ॥ ६५ ॥

टेक। तब हम एक भये रे भाई।
मोहन मिलि साची मन आई ॥
पारस परसि भये सुखदाई।

दुतिया दुरमति दूर गवाँई ॥
मलयागिरी मरम मिलि पाया।
बंस बरन सब भरम गवाँया ॥
हरिजल नीर निकट जब आया।
बुंद बुंद मिलि सहज समाया ॥
नाना भेद भरम सब भागा।
दादू एक रँगहि रँग लागा ॥ ६६ ॥

टेक। अलह राम छूटि गया भरम मोरा।
हिंदू तुरुक भेद कुछ नाहीं देखउँ दरसन तोरा ॥
सोई प्रान पिंड पुनि सोई। सोई लोहू मासा ॥
सोई नैन नासिका सोई। सहजहि कीन्ह तमासा ॥
स्रवनहुँ सबद बाजता सुनिये। जिभ्भा मीठी लागइ ॥
सोई भूख सबनि को व्यापइ। एक जुगुति सोइ जागइ ॥
सोई संध बंद पुनि सोई। सोई सुख सोइ पीरा ॥
सोई हस्त पाव पुनि सोई। सोई एक सरीरा ॥
यह सब खेल खालिक हरि तेरा। तैं हीं एक करि लाना ॥
दादू जुगुति जानि कर अइसी। तब यह प्रान पतीना ॥ ६७ ॥

टेक। भाई रे अइसा पंथ हमारा।
दोइ पखरहित पंथ गहि पूरा ॥
अबरन एक अधारा ॥
बादबिबाद काहू सों नाहीं।
माहिं जगत तें न्यारा ॥
समदृष्टी सो भाइ सहज में।
आपहि आप बिचारा ॥

मैं तैं मेरी यह मति नाहीं। निरबैरी निरकारा॥
पूरन सबइ देखि आपा पर। निरालंब निरधारा॥
काहू के सँग मोह न ममता। संगी सिरजनहारा॥
मन हीं मन सों समझि सयाना। आनँद एक अपारा॥
काम कलपना कधी न कीजइ। पूरन ब्रह्म पियारा॥
येहि पंथ पहुँचि पार गहि दादू। सो तत सहज सँभारा॥६८॥

टेक। अइसो खेल बन्यो मेरे भाई।
कइसहि कहहुँ कछु जान्यों न जाई॥
सुर नर मुनिजन अचरज आई।
रामचरन को भेद न पाई॥
मंदिर माहें सुरति समाई।
कोऊ है सो देहु दिखाई॥
मनहिं बिचार करहु लव लाई।
दिया समाना जोति कहाँ छिपाई॥
दिनहिं राति पुनि लव लाई।
तहाँ कौन रमहिं कौन सुतारे भाई॥
मैं जानहुँ नहिं यह चतुराई।
सोइ गुरु मेरा जिन्ह सुधि पाई॥६९॥

टेक। भाई रे घर ही में घर पाया।
सहज समाइ रहा तो माहीं। सतगुरु खोज बताया॥
ता घर काज सबइ फिरि आया। आपइ आप लखाया॥
खोलि कपाट महल के दीन्हे। थिर अस्थान दिखाया॥
भायो भेद भरम सब भागा। साच सोई मन लाया॥
पिंड परे जहाँ जिव जावइ। ता में सहज समाया॥
निहचल सदा चलइ नहिं कबहूँ। देखा सब में सोई॥
ताही सों मेरा मन लागा। और न दूजा कोई॥

आदि अंत सोई घर पाया। अब मन अनत न जाई॥
दादू एक रँगहि रँग लागा। ता में रहा समाई॥ ७०॥

टेक। इत है नीर नहावहिँ जोग। अंतहि भरम भुला रे लोग॥
तेहि तट न्हाए निरमल होइ। बसतर अँगोच्छ लखइ रे सोइ॥
सुघट घाट अरु तैरीबो तीर। बैठे तहाँ जगतगुरु पीर॥
दादू न जानहिँ तिन्हका भेव। आप लखावइ अंतरदेव॥७१॥

टेक। अइसा ज्ञान कथहु मन ज्ञानी।
येहि घडि होइ सहज सुख जानी॥
गंग जमुन तहाँ नीर नहाइ। सुखमन नारी रंग लगाइ॥
आप तेज तन रहहु समाइ। मैँ बलि ता की देखउँ अघाइ॥
बास निरंतर सो समझाई। बिन नैनहुँ देख तहहुँ जाई॥
दादू रे यह अगम अपार। सो धन मेरे अधर अधार॥७२॥

टेक। अब तो अइसी बन आई। रामचरन बिन रहा न जाई॥
साईं को मिलने कारन। तृकुटी संगम नीर नहाई॥
चरनकमल की तहाँ लव लागइ।
जतन जतन करि प्रीति बनाई॥
जो रस भीना झाँवर आवइ। सुंदर सहजइ संग समाई॥
अनहद बाजे बाजन लागे। जिभ्या ने कीरति गाई॥
कहा कहूँ कछु बरनि न जाई। अबिगति अंतर जोति जगाई॥
दादू उनको मरम न जानइ। आप सो रंगहि बेन बजाई॥७३॥

टेक। नीकहि राम कहत है बपुरा। घर माहैँ घर निरमल राखइ॥
पंचहु धोवइ काया कपडा।
सहज स्मरन सुमिरन सेवा॥
तिरबेनी तट संजम सपरा॥
सुंदर सनमुख जागन लागी। तहाँ मोहन मेरा मन पकरा॥

बिन रसना मोहन गुन गावइ। नाना बानी अनभय अपरा॥
दादू अनहद अइसहि कहिये। भगति तत्त यह मारग सकरा॥७४॥

टेक। अब तूँ कामधेनु गहि राखी। बसि कीन्हीँ अमृत सरवइ॥
आगे चारिन नाखी॥
घोषंता पहिले उठि गरजइ। पीछे हाथ न आवइ॥
भूखा मरइ दूध नित दूना। यो यह धेनु दुहावइ॥
ज्योँ ज्योँ छीन होइ त्योँ दूहइ। मुकती मेवा मारइ॥
घाटा रोक घेरि घर आनहिँ। बाँधी कारज सारइ॥
सहजइ बंधन कभी न छूटइ। करम बँधन छुटि जाई॥
काटइ करम सहज सोँ बाँधइ। सहजइ रहइ समाई॥
छिन छिन माहिँ मनोरथ पूजइ। दिन दिन होइ अनंदा॥
दादू सोई देखता पावइ। कलि अजरामर कंदा॥ ७५॥

टेक। जब घट परगट राम मिले। आतम मंगलचार चहूँ दिस।
जनम सुफल करि जीति चले॥
भगती मुकति अभय करि राखे। सकल सिरोमनि आप किये॥
निरगुन राम निरंजन आपइ। अजरामर उर लाइ लिये॥
अपने अंग संग करि राखे। निरभय नावँ निसान बजावा॥
अबिगत नाथ अमर अबिनासी। परमपुरुष निज सो पावा॥
सोई बड भागी सदा सोहागी। परगट प्रीतम संग भये॥
दादू भाग बडे सरवर करि। सो अजरामर जीति गये॥ ७६॥

टेक। रमइया यह दुख सालइ मोहिँ। सेज सोहागिन प्रीति प्रेमरस॥
दरसन नाहीँ तोहि॥
अंग प्रसंग एक रस नाहीँ। सदा समीप न पावइ॥
ज्योँ रस मेँ रस बहुरि न निकसइ। अइसहिँ होइ न आवइ॥
आतमलीन नहीँ निस बासर। भगति अखंडित सेवा॥

सनमुख सदा परसपर नाहीँ । ता तेँ दुख मोहिँ देवा ॥
मगनगलित महारस माता । तूँ है तब लग पीजइ ॥
दादू जब लग अंत न आवइ । तब लग देखन दीजइ ॥ ७७ ॥

टेक । गुरुमुख पाइये रे । अइसा ज्ञान विचार ॥
समझ समझ समझा नहीँ । लागा रंग अपार ॥
जान जान जाना नहीँ । अइसा उपजी आइ ॥
बूझ बूझ बूझा नहीँ । डोरी लागा जाइ ॥
लेइ लेइ लीया नहीँ । हौस रही मन माहिँ ॥
राख राख राखा नहीँ । मैँ रस पीया नाहिँ ॥
पाय पाय पाया नहीँ । तेजइ तेज समाइ ॥
कर कर कुछ कीया नहीँ । आतम अंग लगाइ ॥
खेल खेल खेला नहीँ । सनमुख सिरजनहार ॥
देख देख देखा नहीँ । दादू सेवक सार ॥ ७८ ॥

टेक । बाबा गुरुमुख ज्ञाना रे । गुरुमुख ध्याना रे ॥
गुरुमुख दाता । गुरुमुख राता ॥
गुरुमुख गवना रे ।
गुरुमुख भवना ।
गुरुमुख बवना । गुरुमुख रवना रे ॥
गुरुमुख पूरा । गुरुमुख सूरा ॥
गुरुमुख बानी रे ।
गुरुमुख देना ।
गुरुमुख लेना । गुरुमुख जानी रे ॥
गुरुमुख गहिबा । गुरुमुख रहिबा ॥
गुरुमुख न्यारा रे ।
गुरुमुख सारा ।
गुरुमुख तारा । गुरुमुख पारा रे ॥

गुरुमुख राया। गुरुमुख पाया॥
गुरुमुख मेला रे।
गुरुमुख तेजम।
गुरुमुख सेजम। गुरुमुख दादू खेला रे॥ ॥ ७६॥

अथ राग गौडी।

टेक। मैं मेरा मैं हेरा। मधि माहिं पीय नेरा॥
जहाँ अगम अनूप अवासा। तहाँ महापुरुष का बासा॥
तहाँ जानइगा जन कोई। हरि माहिं समाना सोई॥
अखंड जोति जहाँ जागइ। तहाँ रामनाम लव लागइ॥
तहाँ राम रहइ भरपूरा। हरि संग रहइ नहिं दूरा॥
त्रिबेणी तट तीरा। तहाँ अमर अमोलिक हीरा॥
उस हीरे सों मन लागा। भरम गया भय भागा॥
दादू देख हरि पावा। हरि सहजहिं संग लखावा॥
पूरन परम निधाना। निज निरखत हउँ भगवाना॥ ८०॥
टेक। मन लागा सकल करा। हम निस दिन हिरदय सो धरा॥
हम हिरदय माहें हेरा। पिय परगट पाया नेरा॥
सो नेर ही निज लीजइ। सहजहिं अमृत पीजइ॥
मनहीं सों मन लागा। जोति सरूपी जागा॥
जोति सरूपी पाया। अंतर माहिं समाया॥
चित में चित्त समाना। हम हरि बिन और न जाना॥
जाना जीवन सोई। अब हरि बिन और न कोई॥
आतम एकइ बासा। परआतम माहिं प्रकासा॥
परकासा पीय पियारा। सो दादू मीत हमारा॥ ८१॥

इति रागगौडीसंपूर्णम्॥ १॥

———:o:———

अथ माली गौड़।

———:o:———

टेक। हे गोविंद नावँ तेरा जीवन मेरा। तारना भव पारा॥
आगे येहि ना लागे। संतन आधारा॥
करि बिचार तत्तसार। पूरन धन पाया॥
अखिल नावँ अगम ठावँ। भाग हमारे आया॥
भगति मूल मुकति मूल। भवजल निसतरना॥
भरम करम भजना भय। कलि बिष सब हरना॥
सकल सिधि नव निधि। पूरन सब कामा॥
राम रूप तत्त अनूप। दादू निज नामा॥ ८२॥

टेक। गोविंद कइसे तरिये।
नावँ नहीं भेव नहीं।
रामबिमुख मरिये॥
ज्ञान नहीं ध्यान नहीं। लय नहीं समाधि नहीं॥
बिरहा बैराग नहीं। पंचहु गुन महीं॥
प्रेम नहीं प्रीति नहीं। नावँ नहीं तेरा॥
भाव नहीं भगति नहीं। कायर जिव मेरा॥
घाट नहीं बाट नहीं। कइसे पग धरिये॥
वार नहीं पार नहीं। दादू बहु डरिये॥ ८३॥

टेक। पिय आव हमारे रे। मिल प्रान पियारे रे॥
बलि जाउँ तुम्हारे रे॥
सुन सखी सयानी रे। मैं सेवा न जानी रे॥
हैं भई दिवानी रे॥
सुन सखी सहेली रे। क्यों रहो अकेली रे॥
है खरी दुलही रे॥

हैं करहु पुकारा रे। सुन सिरजनहारा रे॥
दादू दास तुम्हारा रे॥ ८४॥

टेक। बाला सेज हमारी रे। तूँ आवहु बारी रे॥
हैं दासी तुम्हारी रे॥
तेरा पंथ निहारउँ रे। सुंदर सेज सँवारउँ रे॥
जियरा तुम्ह पर वारउँ रे॥
तेरा अँगना पेखउँ रे। तेरा मुखना देखउँ रे॥
तब जिवना लेखउँ रे॥
मिलि सुखना दीजइ रे। यह लहरा लीजइ रे॥
तुम्ह देखे जीवइ रे॥
तेरे प्रेम की माती रे। तेरे रंगहिं राती रे॥
दादू वारनहिं जाती रे॥ ८५॥

टेक। दरबार तुम्हारे दरदवंद। पिय पीय पुकारइ॥
दीदार दारूनहिं दीजिये। सुनि खसम हमारइ॥
तनहा के तन पीर है। सुन तूँ ही निवारे॥
करम करीमा कीजिये। मिलि पीय पियारे॥
सूर सूरा कइसहि सहहिं। तेगा तन मारइ॥
मिलि साईं सुख दीजिये। तूँ ही तूँ ही सँभारइ॥
मैं सोहदा तन सोखता। बिरहा दुख जारइ॥
जीय तरसइ दीदार को। दादू ना बिसारइ॥ ८६॥

टेक। सइयाँ तूँ है साहिब मेरा। मैं हूँ बंदा तेरा॥
बंदा बरदा चेरा तेरा। हुकुमी मैं बेचारा॥
मेरा मेहरवान गोसाईं। तूँ सिरताज हमारा॥
गुलाम तुम्हारा मुल्लाजादा। लौंडा घर का जाया॥
राजिक रजक जीव तें दीया। हुकुम तुम्हारे आया॥

साबिल बेहाजिर बंदा। हुकुम तुम्हारे माहीँ॥
जभी बुलाया तबही आया। मैँ मैँ वासी नाहीँ॥
खसम हमारा सिरजनहारा। साहिब समरथ साईं॥
मीरा मेरा मेहर मया करि। दादू तुम्हरे ताईं॥ ॥८७॥

टेक। मुझ तेँ कछू न भया रे। यह योँ ही गया रे॥
पछतावा रहा रे॥
मैँ सीस न दीया रे। भरि प्रेम न पीया रे॥
मैँ क्या कीया रे॥
हैं रंग न राता रे। प्रेमरस न माता रे॥
नहिँ गलित गाता रे॥
मैँ पीय न पाया रे। कीया मन का भाया रे॥
कुछ होइ न आया रे॥
हौँ रहूँ उदासा रे। मुझे तेरी आसा रे॥
कहइ दादू दासा रे॥ ८८॥

टेक। मेरा मेरा छाडि गवाँरा। सिर पर तेरे सिरजनहारा॥
अपने मन बिचारत नाहीँ। का ले गये बंस तुम्हारा॥
मेरा कित करता नाहीँ। आवत है हंकारा॥
कालचक्र सोँ खरी परी रे। बिसर गया घर बारा॥
जाइ तहाँ का संजम कीजइ। बिकट पंथ निरधारा॥
दादू रे तन अपना नाहीँ। कइसेहि भया सँसारा ॥८९॥

टेक। दादू दास पुकारइ रे। सिर काल तुम्हारे रे॥
सर साधे मारे रे॥
जम काल भिखारी रे। मन मनसा मारी रे॥
यह जनमं न हारी रे॥
सुख नीँद न सोआ रे। अपना दुःख न रोआ रे।

मन मूल न खोआ रे॥
सिर भार न लीजइ रे। जिसका तिसको दीजइ रे॥
अब ढील न कीजइ रे॥
यह औसर तेरा रे। पंथी जाग सबेरा रे॥
सब बाट बसेरा रे॥
सब तरवर छाया रे। धन जोबन माया रे॥
यह काची काया रे॥
यह भरम न भूलिये। बाजी देख न भूलिये रे॥
सुखसागर झूलिये रे।
रस अमृत पीजिये रे। विष कौं नावँ न लीजिये रे॥
कहा सो कीजिये रे॥
सब आतमजानी रे। अपना पीय पिछानी रे॥
यह दादू बानी रे॥ ६०॥

टेक। पूजउँ पहिले गनपति राइ। पड़िहउँ पावँ चरनहुँ धाइ॥
आगे होइ कर तीर लगावइ। सहजहि अपने बैन सुनाइ॥
काँह कथा कुछ कही न जाइ। इक तिल मैं सबइ समाइ॥
गुनहुँ गहीर धीर तन देही। अइसो समर सबइ सोहाइ॥
जिस दिस देखहुँ वही है रे। आप रहा गिरि तरवर छाइ॥
दादू रे आगे का होवइ। प्रीति पिया कर जोर लगाइ॥ ६१॥

टेक। नीको धन हरि कर मैं जानउँ। मेरा अखई वोही॥
आगे पीछे सोई है रे। और न दूजा कोई॥
कबहुँ न छाडउँ संग पिया को। हरि के दरसन मोही।
भाग हमारे जो है पाऊँ। सरनहि आयो तोही॥
आनँद भयो सखी जिय मेरे। चरनकमल को जोई॥
दादू हरि को बावरो रे। बहुरि वियोग न होई॥ ९२॥

टेक। बाबा मर्द मर्दांगोइ । यह दिल पाक करि हम धोइ ॥
तरक दुनिया दूर कर दिल। फ़र्ज़ फ़ारिक़ होइ ॥
पैवस्त परवरदिगार सोँ । आक़िला सिर सोइ ॥
मनेंह मरदाँ हिरासि-फ़ानी । नफ़सरा पैमाल ॥
बदीरा बर तरक करदाँ । नावँ नेकी ख्याल ॥
ज़िन्दगानी मुर्दः बाशिद । कुंज क़ादिरकार ॥
तालिबाँ राक़ह हासिल । पासबानी यार ॥
मर्द मर्दाँ मालिकाँ सिर । आशिक़ाँ सुलतान ॥
हज़ूरी हुशियार दादू । इहै गो मैदान ॥ ६३ ॥

टेक। ये सब चरित तुम्हारे मोहन । मोहे सब ब्रह्मांड खंडा ॥
मोहे पवन पानी परमेस्वर । सब मुनि मोहे रबि चंडा ॥
सायर सप्त मोहे धरनी धरा। अष्टकुला परबत मेरु मोहे ॥
तीन लोक मोहे जगजीवन । सकल भवन तेरी सेव सोहे ॥
सिव बिरंचि नारद मुनि मोहे । मोहे सुर सब सकल देवा ॥
मोहे इंद्र फनिंद पुनि मोहे। मुनि मोहे तेरी करत सेवा ॥
अगम अगोचर अपार अपरंपारा। को यह तेरे चरित न जानहिँ ॥
यह सोभा तुम्ह को सोहइ सुंदर। बलि बलि जाऊँ दादू न जानहिँ ॥

टेक। अइसा रे गुन ज्ञान लखाया। आवइ जाइ सो दृष्टि न आया॥६४॥
मन थिर करूँगा नाद भरूँगा । राम रमइगा रस माता ॥
अधर रहूँगा करम दहूँगा । एक भजूँगा भगवंता ॥
अलख लखूँगा अकथ कथूँगा । मही महूँगा गोबिंदा ॥
अगह गहूँगा अकह कहूँगा । अलह लहूँगा खोजंता ॥
अचर चरूँगा अजर जरूँगा । अतर तरूँगा आनंदा ॥
यह तन तारहु बिषय निवारहु । आप उबारहु साधंता ॥
आऊँ न जाऊँ उनमन लाऊँ । सहज समाऊँ गुनवंता ॥
नूर पिछान तेजहि जानहु । दादू जोतहि देखंता ॥ ६५ ॥

टेक। बंदे हाज़िराँ हजूर वे। अलह आले नूर वे॥
आशिक़ाँ रा सिदक़ साबित। तालबाँ भरपूर वे॥
औजूद में मौजूद है। पाक परवरदिगार वे॥
देख ले दीदार को। गैब गोता मार वे॥
मौजूद मालिक तख़्त ख़ालिक़। आशिक़ाँ रा अयन वे॥
गुज़र कर दिल मग्ज़ भीतर। अजब है यह सयन वे॥
अर्श ऊपर आप बैठा। दोस्त दानां यार वे॥
खोज कर दिल कब्ज़ कर ले। दुरूँनें दीदार वे॥
हुशियार हाज़िर चुस्त करद्म। मीराँ मिहरवाँन वे॥
देख ले दर हाल दादू। आप है दीवान वे॥ ९६॥

टेक। निर्मल तत निर्मल तत निर्मल तत अइसा॥
निर्गुन निज निधि निरंजन। जइसा हइ तइसा॥
उतपति आकार नाहीं। जीव नाहीं काया॥
काल नाहीं कर्म नाहीं। रहित राम राया॥
सीत नाहीं घाँम नाहीं। धूप नाहीं छाया॥
बान नाहीं बरन नाहीं। मोह नाहीं माया॥
धरनी आकास अगम। चंद सूर नाहीं॥
रजनी निस दिवस नाहीं। पवन नहीं जाहीं॥
कृतम घट कला नाहीं। सकल रहित सोई॥
दादू निज निगम अगम। दूजा नहिं कोई॥ ९७॥

इति॥ २॥ ९७॥

——:o:——

अथ राग कल्यान ।

टेक । मन मेरे कछू भी चेति गँवार ।
पीछे फिरि पछितावहगा रे आव न दूजा बार ॥
काहे रे मन भूला फिरत हइ । काया सोचि विचार ॥
जिन्हि पंथों चलना हइ तुझको । सोई पंथ सँवार ॥
आगे बाट जु बिषमी मन रे । जइसी खाँडे धार ॥
दादू दास साँई सों सूत करि । कूंड़े काम निवार ॥ ६८ ॥

टेक । इस जग सों कहा हमारा । जब देखा नूर तुम्हारा ॥
है परम तेज घर मेरा । सुख सागर माँहि बसेरा ॥
झिलिमिलि आनंदा । पाया हम परमानंदा ॥
तहँ जोति अपार अनंता । सो खेलइ फाग बसंता ॥
तहँ आदि जोई अस्थाना । दादू सोई पहिचाना ॥ ६६ ॥

इति ॥ ३ ॥ ९९ ॥

——:o:——

अथ राग कान्हड़ा।

टेक। दे दरसन देखन तेरा। तौ जिय जक पावइ मेरा॥
पिय तूँ मेरी बेदन जानइ। हौं कहाँ दुराऊँ छानइ॥
मेरा तुम्ह देख मनमानइ॥
पिय करक कलेजे माहीँ। सो क्योँ ही निकसइ नाहीँ॥
पिय पकरि हमारी बाँहीँ॥
पिय रोम रोम दुख सालइ। इन पीरइ पंजर जालइ॥
जिय जाता क्यो ही वालइ॥
पिय सेज अकेली मेरी। मुझ आरति मिलने तेरी॥
धनि दादू वारी फेरी॥ १००॥

टेक॥ आव सलोने देखन दे रे। बलि बलि बलि बलिहारी तेरे॥
आव पिया तूँ सेज हमारी। निस दिन देखउँ बाट तुम्हारी॥
सब गुन तेरे अवगुन मेरे। पीय हमारी आहि न लेरे॥
सब गुनवंता साहिब मेरा। लाड गहेला दादू केरा॥ १०१॥

टेक॥ आव पियारे मीत हमारे। निस दिन देखउँ पावँ तुम्हारे॥
सेज हमारी पीय सँवारी। दासि तुम्हारी सो धन वारी॥
जो तुझे पाऊँ अंग लगाऊँ। क्योँ समझाऊँ वारन जाऊँ॥
पंथ निहारउँ बाट सँवारउँ। दादू तारउँ तन मन वारउँ॥ १०२॥

टेक॥ आ वे साजण आव। सिर पर धर धर पाँव॥
जानीँ मैंडा जिंद असाडे। तूँ रावाँ दा राव वे साजण आव॥
इत्थोँ उत्थोँ जित्थोँ कित्थोँ। मैँ जीवाँ तुझ नाल॥
मीयाँ मैँडा आव असाडे। तूँ लालौँ दा लाल॥
वे साजण आव॥
तन वी देँवाँ मन वी देँवाँ। देवाँ पिंड पराँण॥

साचा साँई मिलया इथाँई । जिद करा़ँ कुरबाँण वे साजण आव ॥
तूँ पाकाँ बिच पाक वे साजण । तूँ खूबाँ बिच खूब ॥
दादू भावइ साजण आवइ । तूँ मिट्ठी महबूब वे साजण आव॥१०३॥

टेक ॥ दयाल अपने चरननि मेरा चित लगायो । नीकइं यही करी ॥
नख सिख सुरति सरीर मैं । तूँ नावँइ रहो भरी ॥
मैं अजान मति हीन जम । पासि थइं रहत डरी ॥
सबइ दोष दादू के परिहरि । तुमहीं रहहु हरी ॥ १०४ ॥

टेक ॥ मन मति हीन धरइ । मूरख, मन कछू समझइ नाहीं ॥
अइसइ जाइ जरइ ॥
नावँ बिसारि अवर चित राखइ । कूडे काज करइ ॥
सेवा हरि की मनहुँ न आनइ । मूरख बहुरि मरइ ॥
नाव सँगम करि लीजइ प्रानी । जम सो कहा डरइ ॥
दादू, राम सँभार लई । तौ सागर तीर तरइ ॥ १०५ ॥

टेक ॥ पीय तें अपने काज सँवारे ।
कोई दुष्ट दीन को मारत सोई गहि तैं मारे ।
मेरु समान ताप तन व्यापइ । सहजइ ही सो टारे ॥
संतन को सुखदाई माधव । बिन पावक फँद जारे ॥
तुम्ह ते होइ सबइ विधि समरथ । आगम सबइ बिचारे ॥
संत उबारि दुष्ट दुख दीन्हेउ । अंध कूप मइँ डारे ॥
अइसा है सिर खसम हमारे । तुम्ह जीते खल हारे ॥
दादू सो अइसइ निरवहिये । प्रेम प्रीति पी प्यारे ॥ १०६ ॥

टेक । काहू ने राम राम न जाना । सब भये दिवाना रे ॥
माया के रस राते माते । जगत भुलाना रे ॥
को काहू का कहा न मानइ । भये अपाना रे ॥

माया मोहे मुदित मगन मन। खाना खाना रे॥
बिषया रस सों अरस परस कर। साँचा ठाना रे॥
आदि अंत सब जीव जंत लों। किया पयाना रे॥
दादू सबइ भरम में भूले। देखि सो दाना रे॥ १०७॥

टेक। तूँ ही तूँ गुरदेव हमारा। सब कुछ मेरे नाउँ तुम्हारा॥
तूँ ही पूजा तूँ ही सेवा। तूँ ही पाती तूँ ही देवा॥
जोग जज्ञ तूँ साधन जाप। तूँ ही मेरे आपइ आप॥
तप तीरथ तूँ ब्रत असनाना। तूँ ही ज्ञाना तूँ ही ध्याना॥
बेद भेद तूँ पाठ पुराना। दादू के तुम्ह पिंड पराना॥ १०८॥

टेक। तूँ ही तूँ आधार हमारे। सेवक सुत हम राम तुम्हारे॥
माइ बाप तूँ साहिब मेरा। भगति हीन मैं सेवक तेरा॥
मात पिता तुम्ह बंधू भाई। तुम्ह ही मेरे सजन सहाई॥
तुम्ह ही तातं तुम्ह ही मातं। तुम्ह ही जातं तुम्ह ही नातं॥
कुल कुटुंब तूँ सब परिवारा। दादू का तूँ तारन हारा॥ १०९॥

टेक। नूर नयन भरि देखन दीजे। अमी महारस भरि भरि पीजे॥
अम्रित धारा वार न पारा। निर्मल सारा तेज तुम्हारा॥
अजर जरंता अमी झरंता। तार अनंता बहु गुनवंता।
झिलिमिलि साईं जोति गुसाईं। दादू माहीं नूर रहाईं॥११०॥

टेक। अयन एक सो मीठा लागे। जोति सरूपी ठाढ़ा आगे॥
झिलिमिलि करना अजरा जरना। नीझर झरना तहँ मन धरना॥
निज निरधारं निरमल सारं। तेज अपारं प्रान अधारं॥
अगहन गहना अकहन कहना। अलहन लहना तहँ मिल रहना॥
निरसँध नूर सकल भर पूरं। सदा हजूरं दादू सूरं॥ १११॥

टेक। तौ काहे की परवाह हमारे। राते माते नाउँ तुम्हारे॥
झिलिमिलि झिलिमिलि तेज तुम्हारा। प्रगटइ खेलइ प्रान हमारा॥

नूर तुम्हारा नैनहुँ माँहीं। तन मन लागा छूटइ नाँहीं॥
सुख का सागर वार न पारा। अमी महारस पीवनहारा॥
प्रेम मगन मतवाला माता। रंग तुम्हारइ दादू राता॥ ११२॥

इति॥ ४॥ ११२॥

——:o:——

राग अड़ाना ।

——:o.——

टेक ॥ भाई रे अइसा सतगुरु कहिये । भगति मुक्ति फल लहिये ॥
अविचल अमर अविनासी । अष्टसिद्धि नौ निद्धी दासी ॥
अइसा सतगुरु राया । चारि पदारथ पाया ॥
अमी महारस माता । अमर अभय-पद-दाता ॥
सो सतगुरु त्रिभुवन तारइ । दादू को पार उतारइ ॥ ११३ ॥

टेक ॥ भाई रे भाँति घड़े गुरु मेरा । मैं सेवक उस केरा ॥
कंचन करि ले काया । घर घर घाट न पाया ॥
मुख दर्पन माहिँ दिखावइ । पिय परगट आनि मिलावइ ॥
सतगुरु साँचा धोवइ । तौ बहुरि न मइला होवइ ॥
तन मन फेरि सँवारइ । दादू कर गहि तारइ ॥ ११४ ॥

टेक ॥ भाई रे तिन्हिँ रूडौ थाये । जे गुरुमुख मारग जाये ॥
कुसंगति परहरिये । सतसंगति अनुसरिये ॥
काम क्रोध नहीं आँनौं । वानीं ब्रह्म वखानों ॥
विषयाँ थीं मन वारइ । ते आपन पौ तारइ ॥
बिख मूकी अमृत लीधौ । दादू रुडौ कीधौ ॥ ११५ ॥

टेक ॥ बाबा मन अपराधी मेरा । कहा न मानइ तेरा ॥
माया मोह मद माता । कनक कामनी राता ॥
काम क्रोध अहँकारा । भावइ विषय विकारा ॥
काल मीच नहिँ सूझइ । आतमराम न बूझइ ॥
समरथ सिरजनहारा । दादू करइ पुकारा ॥ ११६ ॥

टेक । भाई रे यों बिनसइ संसारा । काम क्रोध अहँकारा ॥
लोभ मोह मैं मेरा । मद मत्सर बहुतेरा ॥

आपा पर अभिमाना । केता गरब गुमाना ॥
तीन तिमिर नहिँ जाहीँ । पाँचौ के गुन माहीँ ॥
आतमराम न जाना । दादू जगत दिवाना ॥ ११७ ॥

टेक । भाई रे तब का कथसि गियाना । जब दूसर नाहीँ आना ॥
जब तत्तहि तत्त समाना । जहाँ का तहाँ ले साना ॥
जहाँ का तहाँ मिलावा । ज्यौँ था त्यौँ होइ आवा ॥
संधे संधि मिलाई । जहाँ तहाँ थित पाई ॥
सब अँग सबही ठाईँ । दादू दूसर नाहीँ ॥ ११८ ॥

इति ॥ ९ ॥ ११८ ॥

——:o:——

अथ राग केदारा ।

टेक । म्हारा नाथजी थारो नाउँ लियाँरे । रामरतन हिया मैं राखे ॥
म्हारा बाल्हा जी विषया थौं वारे ॥
बाल्हा बानी नहि मन माहँहि माहै । चिंतन थारो चित राखे ॥
स्रवन नेत्र आ इंद्री नागुन । म्हारा माहिला मलते नाँखे ॥
बाल्हा जी वानइ तौ राम रमारे । मूनै जीया नौ फल ए आये ॥
ता साह्ला ना बिना हौं जिहाँ जिहाँ बाधौं ।
जन दादू ना बंधन का मन साधौ ॥ ११९ ॥

टेक । अरे मेरे सदा सँगाती रे राम । कारनि तेरे ॥
कंथा पहिरउँ भसम लगाऊँ । बइरागिनि होइ ढूँढउँ रे राम ॥
गिरवर बासा रहउँ उदासा । चढि सिर मेरु पुकारउँ रे राम ॥
यह तन जारउँ यह मन गारउँ । करवत सीस चढाऊँ रे राम ॥
सीस उतारउँ तुम्ह पर वारउँ । दादू बलि बलि जाऊँ रे राम ॥१२०॥

टेक । अरे मेरे अमर उपावनहारे रे ख़ालिक़ । आसिक़ तेरा ॥
तुम्ह सौं राता तुम्ह सौं माँता । तुम्ह सौं लागा रंग रे ख़ालिक़ ॥
तुम्ह सौं खेला तुम्ह सौं मेला । तुम्ह सौं प्रेम सनेह रे ख़ालिक़ ॥
तुम्ह सौं लेना तुम्ह सौं देना । तुम्ह ही सौं रत होइ रे ख़ालिक़ ॥
ख़ालिक़ मेरा आसिक़ तेरा । दादू अनत न जाइ रे ख़ालिक़ ॥१२१॥

टेक । अरे मेरे समरथ साहिब । नूर तुम्हारा रे अल्ला ॥
सब दिसि देवइ सब दिसि लेवइ । सब दिसि वार पार रे अल्ला ॥
सब दिसि करता सब दिसि हरता । सब दिसि तारनहार रे अल्ला ॥
सब दिसि बक्ता सब दिसि स्रोता । सब दिसि देखनहार रे अल्ला ॥
तूँ है तइसा कहिये अइसा । दादू आनँद होइ रे अल्ला ॥ १२२ ॥

टेक । हाथ मसाँ जो लाल छे । तो के सब मालूम छे ।
मंझे आँमाँ मंझे बरालाँ । मँझे लगी भाहि छे ॥
मँझे मेड़ी मुच पीआँ । कैं हरि कारियाँ घाहडे ॥
बिरह कसाई मूँ गरेला । मँझे वढे माहडे ॥
सीखों करे कबाबा जीला । इयँ दादू जे छाहडे ॥ १२३ ॥

टेक । पीव जी सेतीं नेह नवेला । अति मीठा मोहि भावइ रे ॥
निस दिन देखउँ बाट तुम्हारी । कब मेरे घर आवइ रे ॥
आइ बनी है साहिब सेतीं । तिस बिन तिल क्यों जावइ रे ॥
दासी को दरसन हरि दीजे । अब क्यों आप छिपावइ रे ॥
तिल तिल देखउँ साहिब मेरा । आनँद अँग न समावइ रे ॥
दादू ऊपरि दया करइ कब । नैनहुँ नैन मिलावइ रे ॥१२४॥

टेक । पीव घर आवइ रे । बेदन म्हारा जानी रे ॥
बिरह सँतापइ कवन पर कीजइ । कहूँ छू दुखनी कहानी रे ॥
अंतरजामी नाथ माहरा । तुझ बिना हउँ शीदानी रे ॥
मंदिर माहरे कोई न आवइ । रजनी जाइ बिहानी रे ॥
थारी बाट हउँ जोइ जोइ थाकी । नैनन खंडइ पानी रे ॥
दादू तुझ बिन दीन दुखी रे । तूँ साथे रह्यौ छै ताँनी रे ॥ १२५ ॥

टेक । चातक मरइ पियासा । निस दिन रहइ उदासा ॥
जीवइ केहि बेसासा ॥
जल बिन कमल कुम्हिलावइ । प्यासा नीर न पावइ
क्यों करि तृखा बुझावइ ॥
मिलि जिनि बिछुरइ कोई । बिछुरे बहु दुख होई ॥
क्यों जन जीवइ सोई ॥
मरना मीत सुहेला । बिछुरन खरा दुहेला ॥
दादू पीय सों मेला होई ॥ १२६ ॥

टेक। पीव हूँ कहा करउँ रे। पाइ परउँ कै प्रान हरउँ रे॥
अब हूँ मरनों सूँ नहीं डरउँ रे॥
गाडि मरउँ कै जारि मरउँ रे। कहउ करवत सीस धरउँ रे॥
धाइ मरउँ क खाइ मरउँ रे। कै हूँ कतहूँ जाइ मरउँ रे॥
तलफि मरउँ कै झूरि मरउँ रे। कै हूँ बिरही रोइ मरउँ रे॥
टेरि कहा मैं मरना गया रे। दादू दुखिया दीन भया रे॥१२७॥

टेक। कब मिळ सो पीव गृह छाती। हौं औरां संग मिलाती॥
तिस जू लागी तिस ही केरी। जनमि जनम सो साथी॥
मीत हमारा पीव पियारा। थारा रंग न राती॥
पीव बिमा मुझे नींद न आवइ। गुन थारा लेइ गाती॥
दादू ऊपरि दया मया करि। थारैं बारनौं जाती॥ १२८॥

टेक। म्हारा रे बाल्हा नैं काजै। रिदइ जो वानैं हूँ ध्यान धरउँ॥
आकुल थाये प्रान म्हारा। कहुँ नैं के हीं परि करउँ॥
सभान्यूँ आवइ रे बाल्हा। बेखाँ वे हीं जौ इठरउँ॥
साथी जी साथहैं थईनैं। पैली तीरैं पार तिरौं॥
पीव पाखैं दिन दुहेला जाये। घडी बरसाँ सो किम भरउँ॥
दादू रे जन हरि गुन गाता। पूरन स्वामी तेह बरउँ॥ १२९॥

टेक। मरिये मीत बिछोहइ। जियरा जाइ अँदोहइ॥
ज्यों जल बिछुरे मीना। तलफि तलफि जिव दीना॥
यों हरि हम स्यों कीन्हा॥
बाल्हा हूँ आनइँ जे रँग भरि रमिये।
म्हारौ नाथ निमिष नहीं मेल्हौं रे॥
अंतरजामी नाह न आवइ। ते दिन आव्यौं छेलउँ रे॥
बाल्हा सेज हमारी एकलडी। तहाँ तुझ नैं कोंइ न पामूँरे॥
ओदत म्हारौं पूरवलौ रे। ते तौ आव्यौं सामूँ रे॥

वाल्हा म्हारा रिदिया भीतरि काँइ न आवइ।
मूँनै चरन बिलंब न दीजइ रे॥
दादू तौ अपराधी थारो। नाथ उधारी लीजइ रे॥ १३०॥

टेक। तूँ छै म्हारो राम गोसाईं। पालवि तीरै बाधी रे॥
तुझ बिना हूँ अतँतर ब्वडियौं। कीधी कमाई लाधी रे॥
जीऊँ जे तिल हरी बिना रे। देहड़ी दुखैं दाधी रे॥
पणीं औतारैं काइ न जाण्यौ। माथै ठोकर खाधी रे॥
छूटिक म्हारौ केही परि पासी। सक्यौ न राम अराधी रे॥
दादू ऊपरि दया मया करि। हूँ थारो अपराधी रे॥ १३१॥

टेक। तूँ ही तूँ तनि म्हारे गोसाईं। तूँ बिना तूँ केन्हैं कहौं रे॥
तूँ तां तूहीं थई रह्यौ रे। सरणि तुम्हारी जई रहौं रे॥
तन मन माहैं जोइये तूँ तां। तुझ दीठाँ हूँ सुख लहौं रे॥
तूँ ताँ जे तिल तजी रहौं रे। तिम तिम थारो दुख सहौं रे
तुम्ह बिन म्हारो कोई नहीं रे। हौं तो थारा बनाँ बहूँ॥
दादू रे जन हरि गुन गाता। मैं मेल्ह्यू म्हारौ मैं हूँ॥ १३२॥

टेक। हमारे तुम हीं हौ रखवाल।
तुम बिन और नहीं कोउ मेरं। भव दुख मेटनहार॥
बैरी पंच निमिष नहिं न्यारे। रोकि रहे जमकाल॥
हा जगदीस दास दुख पावइ। स्वामी करहु सँभाल॥
तुम्ह बिन राम दहहिं येहू बर। दसौ दिसा सब साल॥
देखत दीन दुखी क्यों कीजइ। तुम्ह हौ दीनदयाल॥
निरभै नाउँ हेत हरि दीजइ। दरसन परसन लाल॥
दादू दीन लीन करि लीजइ। मेटहु सब जंजाल॥१३३॥

टेक। ए मन माधौ बरजि बरजि।
अति गति बिषया सौं रात उठत जु गरजि गरजि॥

बिखै बिलास अधिक अति आतुर। बिलसत संक न मानइ ॥
खाइ हलाहल मगन भया मैं। बिख अमृत करि जानइ ॥
पंचन के सँगि बहत चहूँदिसि। उलटि न कबहूँ आवइ ॥
जहाँ जहाँ काल जाइ तहाँ तहाँ। मृगजल ज्यों मन धावइ ॥
साध कहहिं गुरु ज्ञान न मानइ। भाव भजन न तुम्हारा ॥
दादू के तुम्ह सजन सहाई। कछु न बसाइ हमारा ॥ १३४ ॥

टेक ॥ हा हमारे जियरा राम गुन गाइ। येही वचन बिचारि मान ॥
केती कहूँ मन कारनइ। तूँ छोडि रे अभिमान ॥
कहि समझाऊँ बेर बेर। तुझ अजहूँ न आवइ ज्ञान ॥
अइसा संग कहाँ पाइये। गुन गावत आवइ तान ॥
चरनहुँ सों चित राखिये। निस दिन हरि को ध्यान ॥
वे भी लेखा देहिंगे। आप कहावइ खान ॥
जन दादू रे गुन गाइये। पूरन हइ निरबान ॥ १३५ ॥

टेक ॥ बटाऊ रे चलना आज कि कालि। समझि न देखै कहा सुख सोवइ
रे मन राम सँभालि ॥
जैसइ तरवर बिरख बसेरा। पंखी बैठइ आइ ॥
अइसइ यह सब हाट पसारा। आप आप को जाइ ॥
कोई नहीं तेरा सजन सँघाती। जिनि खोवइ मन मूल ॥
यह संसार देखि जनि भूलइ। सबही सेंवल फूल ॥
तन नहीं तेरा धन नहीं तेरा। कहा रह्यौ येहि लागी ॥
दादू हरि बिन क्यों सुख सोवइ। काहे न देखइ जागी ॥ १३६ ॥

टेक ॥ जातकत मद को मातो रे। तन धन जोबन देखि गरबानो
माया रातो रे ॥
अपना ही रूप नैन भरि देखे। कामिनि को सँग भावइ रे ॥
बारंबार बिखै रस मानइ। मरिबौ चित्त न आवइ रे ॥

मैं बड आगे और न आवइ। करत केति अभिमाना रे॥
मेरी मेरी करि करि भूल्यौ। माया मोह भुलाना रे॥
मैं मैं करत जनम सब खोयो। काल सिरहाने आयो रे॥
दादू देख मूढ नर प्रानी। हरि बिन जनम गवाँयो रे॥१३७॥

टेक॥ जागत को कधी न मूसइ कोई। जागत जानि जतन करि राखइ चोर न लागू होई॥
सोवत साह बस्तु नहिं पावइ। चोर मुसइ घर घेरा॥
आसिपासि पहरो कोउ नाहीं। बस्तै कीन्ह नबेरा॥
पीछइ कहु क्या जागे होई। बस्तु हाथ से जाई॥
बीती रैनि बहुरि नहिं आवइ। तब क्या करिहइ भाई॥
पहलेही पहरे जो जागइ। बस्तु कछू नहिं छीजइ॥
दादू जुगुति जानि करि अइसी। करना हइ सो कीजइ॥१३८॥

टेक॥ सजनी रजनी घटती जाई। पल पल छीजइ अवधि दिन आवइ॥ अपनो लाल मनाई॥
अति गति नींद कहाँ सुख सोवइ। यह अउसर चलि जाई॥
यह तन बिछुरे बहुरि कहाँ पावइ। पीछे यही पछताई॥
प्रानपति जागइ सुंदरि क्यों सोवइ। उठि आतुर गहि पाई॥
कोमल बचन करुना करि आगे। नख सिख रहु लपटाई॥
सखी सोहाग सेज सुख पावइ। प्रीतम प्रेम बढाई॥
दादू भाग बडे पिय पावइ। सकल सिरोमनिराई॥१३९॥

टेक॥ कोई जानइ रे मरम माधव केरा। कैसे रहइ करइ का सजनी प्रान मेरा॥
कौन बिनोद करत री सजनी। कवननि संग बसेरो॥
संत साध गमि आये उनके। करत जु प्रेम घनेरो॥
कहाँ निवास बास कहाँ सजनी। कहाँ गवन है तेरो॥
घट घट माहैं रहइ निरंतर। ये प्रभु दादू नेरो॥ १४०॥

टेक ॥ मन बैरागी राम को । संग रहै सुख होइ हो ॥
हरि कारन मन जोगिया । क्यों ही मिलइ मुझ सोइ ॥
निरञ्जन का मोहिं चाव हइ । क्यों आप दिखावइ मोहि हो ॥
हिरदे में हरि आव तूँ । मुख देखउँ मन धोइ ॥
तन मन में तूँ ही बसइ । दया न आवइ तोहि हो ॥
निरञ्जन का मोहि चाव हइ । ए दुख मेरा खोइ ॥
दादू तुम्हारा दास है । नैन देखन को रोइ हो ॥ १४१ ॥

टेक ॥ धरनीधर बाह्या धू तारइ । अँग रस नहीं आपइ रे ॥
कह्यौ हमारौ कोइ न मानइ । मनि भावइ ते थापइ रे ॥
वाही वाही नइ सर्वसलीधौ । अबला कोई न जानइ रे ॥
अलगौ रहइ एनी परितंडै । आपनड़इ घरि आँडइ रे ॥
रमीं रमीं न राम रजावी । केन्हैं अंत न दीधौं रे ॥
गोपि गूँझ ते कोई न जानौं । राहो अचरज कीधौं रे ॥
माता बालिक रुदन करता । वाही वाही ने राखइ रे ॥
जेव्हौ छे तेव्हौं आपणपौ । दादू ते नहि दाखइ रे ॥ १४२ ॥

टेक ॥ सिरजन हार थइ सब होई । उतपति रहनइ करइ आपइ
दूसर नाहीं कोई ।
आप होइ कुलाल करता बूँद थै सब लोइ ॥
आप करि अगोच बइठं । दुनीं मन कौं मोहि ॥
आप थइ उपाइ बाजी । निरखि देखइ सोइ ॥
बाजीगर को यह भेद आवइ । सहजि सौं जस मोहि ॥
जो कुछ किया सो करइ आपइ । यह उपजइ मोहि ॥
दादू रे हरि नाइ सेतीं । मैल कलिमल धोइ ॥ १४३ ॥

टेक ॥ देहु रे मंझे देव पायो । बस्तु अगोच लखायो ॥
अति अनूप जोति पति सोई । अंतरि आयौ ॥

पिंड ब्रह्मंड सम्मि तोलि दिखायौ
सदा प्रकास निवास निरंतरि । सब घट माहिँ समायौ ॥
नैन निरखि नेरो । हिरदै हेत लायौ ॥
पूरब भाग सोहाग सेज सुख । सो हरि लैन पठायो ।
देव कौ दादू पार न पावइ । महो ए उनहीँ चेतायो ॥ १४५ ॥

इति ॥ ६ ॥ १४५ ॥

अथ राग मारू ।

टेक । मना भजि राम राम लीजे । साध संगति सुमरि सुमरि
रसना रस पीजे ॥
साधू जन सुमिरन करि । केते जपि जागे ।
अगम निगम अमर किये । काल कोई न लागे ॥
नीच ऊँच चितन करि । सरनागति लीजे ॥
भगति मुकति आपनी गति । अइसइ जन कीजे ॥
केते तिरि तीर लागे । बंधन भव छूटे ॥
कलिमल विष जुग जुग के । राम नाउँ लूटे ।
भरम करम सब निवारि । जीवन जप सोई ।
दादू दुख दूरीकरन । दूजा नहिँ कोई ॥ १४६ ॥

टेक । मना जपि राम नाम कहिये । राम नाम मन बिश्राम
संगी सो गहिये ॥
जागि जागि सोवइ कहा । काल कंध तेरे ॥
बार बार कर पुकार । आवत बिन नेरे ॥
सोवत सोवत जनम बीते । अजहूँ न जीव जागे ॥
राम सँभारि नीँद निवारि । जन जु राह लागे ॥
आसपास भरम बँध्यौ । नारी गृह मेरा ॥
अंत काल छाँडि चल्यौ । कोई नहिँ तेरा ॥
तजि काम क्रोध मोह माया । राम राम करना ॥
जब लग जीव प्रान पिंड । दादू गह सरना ॥ १४७ ॥

टेक । क्यौँ बिसरइ मेरा पीय प्यारा । जीव का जीवन प्रान हमारा॥
क्यौँ कर जीव मीन जल बिछुरे । तुम्ह बिन प्रान सनेही रे ॥
चिंता मनि जब कर से छूटइ । तब दुख पावइ देही रे ॥

माता बालक दूध देवइ । सो कैसइ करि पीवइ ॥
निरधन का धन अनत भुलाना । सो कैसइ करि जीवइ ॥
बरसहु राम सदा सुख अम्रित । नीझर निरमल धारा ॥
प्रेम पियाला भरि भरि दीजइ । दादू दास तुह्मारा ॥ १४८ ॥

टेक । कोई कहियौ रे म्हारा नाथ नैं । थारी नैन निहारे बाट ॥
दीन दुखिया सुंदरि करनाँ बचन कहै रे ।
तुह्म बिन नाँह बिरहिनी व्याकुल ॥ किम करि नाथ रहै रे ॥
भूधर बिना भावइ नहीं कोई । हरि बिन और न जानइ ॥
देह गेह हूँ तेन्है आपौ । जे कोइ गोबिंद आनइ ॥
जगपति नै जोवा नै काजै । आतुर थई रही रे ॥
दादू नै देषा डौं स्वामी । व्याकुल होइ गई रे ॥ १४९ ॥

टेक । अम्हे बिरहिनिया । रॉम तुह्मार डिया ॥
तुम्ह बिन नाथ अनाथ । काँइ बिसारिडिया ॥
अम्हनै अंग अनल प्रजालै । नाथ निकट नहीं आवइ रे ॥
दरसन कारणि बिरहणि व्याकुल । और नहीं कोई भावइ रे ।
आप अप्रछन अम्हने देखइ । आपण पौन दिखाडइ रे ।
प्राँणी पिंजर लेइ रह्यो रे । आडा अंतर पाडइ रे ॥
देव देव करि दरसन माँगइ । अंतरजामी आपइ रे ॥
दादू बिरहनि बनि बनि ढूँडइ । यह दुख काहु न कापइ रे १५०।

टेक । कबहूँ अइसा बिरह उपावइ रे । पिय बिन देखे जीव जावइ रे ॥
बिपति हमारी सुनहु सहेली । पिय बिन चैन न आवइ रे ॥
ज्यौं जल मीन मीन तन तलफइ । पिय बिन वज्र बिहावइ रे ॥
अइसी प्रीति प्रेम की लागइ । ज्यौं पंखी पीय सुनावइ रे ॥
त्यौं मन मेरा रहै निस वासर । पिय को आनि मिलावइ रे ॥
तौ मन मेरा धीरज धरई । कोई आगम आन जनावइ रे ॥
तौ सुख जीय दादू का पावइ । पल पी जी आप दिखावइ रे ॥१५०

टेक। ए पंथीडा बूझइ बिरहिनी। कहिए पिय की बात॥
कब घर आवइ कब मिलइ। जोऊँ दिन अरु रात॥ पंथीडा॥
कहाँ मेरा प्रीतम बसइ। कहाँ रहइ करि बास॥
कहाँ ढूंढौं कहाँ पाइये। कहाँ रहइ किस पास॥ पंथीडा॥
कवन देस कहँ जाइये। कीजइ कवन उपाय॥
कवन अंग कइसइ रहइ। कहा करइ समझाय॥ पंथीडा॥
परम सनेही प्रान का। सो कत देहु दिखाइ॥
जीवनि मेरे जीव की। सो मुझ आनि मिलाइ॥ पंथीडा॥
नैन न आवइ नींदडी। निस दिन तलफत जाइ॥
दादू आतुर बिरहिनी। क्योँ करि रइन बिहाइ॥ पंथीडा॥१५१॥

टेक। पंथीड़ा पंथ पिछाँणी रे पिय का। गही बिरह का बाट॥
जीवत मिरतक ह्वै चलइ। लंघइ अउघट घाट॥ पंथीडा॥
सतगुर सिर परि राखिये। निर्मल ज्ञान बिचार॥
प्रेम भगति करि प्रीति सौँ। सनमुख सिरजन हार॥ पंथीडा॥
पर आतम सौँ आतमा। ज्योँ जल जलहि समाइ॥
मन हीँ सौँ मन लाइये। लै के मारग जाइ॥ पंथीडा॥
ताला बेली ऊपजइ। आतुर पीड पुकार॥
सुमिरि सनेही आपना। निस दिन बारं बार॥ पंथीडा॥
देखि देखि पग राखिये। मारग खंडाधार॥
मनसा बाचा करमनां। दादू लंघइ पार॥ पंथीडा॥ १५२॥

टेक। साध कहइ उपदेस॥ बिरहनी।
तन भूलइ तब पाइये निकट भया परदेस॥ बिरहनी॥
तुम्ह ही माँहीँ ते बसइ। तहाँ रहे करि बास॥
तहाँ ढूँढे पिय पाइये। जीवन जीय के पास॥ बिरहनी॥
परम देस तहाँ जाइये। आतम लीन उपाइ॥
एक अंग अइसे रहइ। ज्योँ जल जलहि समाइ॥ बिरहनी॥

सदा सँगाती आपना । कबहूँ दूर न जाइ ॥
प्रान सनेही पाइये । तन मन लेहु लगाइ ॥ बिरहनी ॥
जागे जगपति देखिये । परगट मिलिहइ आइ ॥
दादू सनमुख होइ रहा । आनँद अँग न समाइ ॥ बिरहनी ॥१५३॥

टेक ॥ गोविंदा गाइबा दे रे गाइबा दे । आन दी आनि निवार रे ॥
अनदिन अंतर आनँद कीजइ । भाँति प्रेम रस सार रे ॥
अनभय आतम अभय एक रस । निरभय काइन कीजे रे ॥
अमी महारस अम्रित आपइ । अम्हेँ रसिक रस पीजे रे ॥
अविचल अमर अलख अविनासी । ते रस कोइ ना दीजे रे ॥
आतमराम अधार अम्हारौ । जनम सुफल करि लीजे रे ॥
देव दयाल कृपाल दमोदर । प्रेम बिना किमि रहिये रे ॥
दादू रँग भरि राम रमाडौं । भगति बछल तूँ कहिये रे ॥१५४॥

टेक । गोविंदा जोइबा दे रे । जोइबा दे जेवर जइते वारि रे ॥
आदि पुरष तूँ अछै अम्हारौ । कंत तुम्हारी नारि रे ॥
अंगइ संगइ रंगइ रहिये । देवा दूर न कीजइ रे ॥
रस माँहइ रस इम थइ रहिये । ए सुख अम्ह न दीजइ रे ॥
सेजड़िये सुख रंग भरि रमिये । प्रेम भगति रस लीजइ रे ॥
एक मेक रस केलि करंता । अम्हेँ अबला इम जीजइ रे ॥
समथ स्वामी अंतरजामी । बार बार काँई बाहइ रे ॥
आदि अंत तेज है तुम्हारौ । दादू देखइ गाये रे ॥ १५५ ॥

टेक । तुम्हँ सरसी रँग रमाँडि । अप्रछन थई करि मूनँमा भ्रमाँडि ॥
मूँनै मोल बिकाँइ थई बेगलौँ । आपण पौ दिखाँणि ॥
कैसे जीऊँ हौं एकली । बिरहुँनिया नारि ॥
मूँनैं बाहिसिमाँ अलगी थई । आत्माँ उधारि ॥
दादू सौं रमिये सदा । ऐनी पेरे तारि ॥ १५६ ॥

टेक । जागि रे किस नींदड़ी सूता । रैन बिहारगमी सब गई ॥
दिन आय पहूँता ॥
सो क्यों सोवइ नींदड़ी । जिस मरनाँ होवइ रे ॥
औराँ बेरी जागनाँ । जीव तूँ क्यों सोवइ रे ॥
जाके सिर परि जम खड़ा । सर साँध मारइ रे ॥
सो क्यों सोवइ नींदड़ी । कहि क्यों न पुकारइ रे ॥
दिन प्रति निस काल जगइ । जीव न जागइ रे ॥
दादू सूता नींदड़ी । उस अंगि न लागइ रे ॥ १५७ ॥

टेक । जागि रे सब न बिहानी । जाई जन्म अँजुली को पानी ॥
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावइ । जो दिन जाइ सो बहुरि न आवइ॥
सूरज चंद कहइ समझाइ । दिन दिन आयू घटती जाइ ॥
सरवर पानी तरवर छाया । निस दिन काल गरासइ काया ॥
हंस बटाऊ प्रान पयाना । दादू आतमराम न जाना ॥१५८॥

टेक । आदि काल अंतिकाल । मद्धिकाल भाई ॥
जन्मकाल जुहा काल । काल सँग सदाई ॥
जागत काल सोवत काल । काल झँपे आई ॥
काल चलत काल फिरत । कबहूँ ले जाई ॥
आवत काल जात काल । काल कठिन खाई ॥
लेत काल देत काल । काल ग्रसइ धाई ॥
कहत काल सुनत काल । करत काल सगाई ॥
काम काल क्रोध काल । काल जाल छाई ॥
काल आगै काल पीछै । काल सँग समाई ॥
काल रहित राम गहित । दादू लव लाई ॥ १५९ ॥

टेक । तो को केता कह्या मन मेरे । खिन इक मांहै जाइ अनेरे ॥
प्रान उधारी ले रे ॥
आगे इह मन करि बिसासिन । लेखा माँगइ दे रे ॥

काहे सोवइ नींद भरी रे । किस बिचारे तेरे ॥
तैं परि कीजइ मन बिचारे । राखहु चरनहुँ नेरे ॥
रती एक जीवन मोहिं न सूझइ । दादू चेत सबेरे ॥ १६० ॥

टेक । मन बाल्हा रे कछु बिचारी खेल । पड़ि सिरे गढ भेल ॥
बहु भाँतइ दुख देइगा रे बाल्हा । ज्यों तिल में लीजइ तेल ॥
करनी थारी सोधसी । होसी रे सिर हेल ॥
इवहीं थइ करि लीजिये रे बाल्हा । साईं सेतीं मेल ॥
दादू संग न बाडी पिय का । पाइ हइ गुन की बेल ॥ १६१ ॥

टेक । मन बावरे हो अनत जिन जाई । अमर फल काहे न खाई ॥
तौ तूँ जीवइ अमीरस पीवइ ॥
रहि चरन सरन सुख पावइ । देखहु नयन अघाई ॥
भाग तेरे पिय नेरे । थिर थाँन बताई ॥
सँग तेरे रहइ घेरे । सहजइ अंग समाई ॥
सरीर माहँइं सोधि साईं । अनहद ध्यान लगाई ॥
पिय पासि आवइ सुख पावइ । तन की तपति बुझाई ॥
दादू रे जहाँ नाद ऊपजइ । पिय पास दिखाई ॥ १६२ ॥

टेक । निरंजन अंजन कीन्हा रे । सब आतम लीन्हा रे ॥
अंजन माया अंजन काया । अंजन बाया रे ॥
अंजन मेरा अंजन तेरा । अंजन मेला रे ।
अंजन लीया अंजन दीया । अंजन खेला रे ॥
अंजन देवा अंजन सेवा । अंजन पूजा रे ॥
अंजन ध्याना अंजन ज्ञाना । अंजन दूजा रे ॥
अंजन वक्ता अंजन श्रोता । अंजन भावइ रे ॥
अंजन राम निरंजन कीन्हा । दादू गावइ रे ॥ १६३ ॥

टेक । अइन बइन चइन होवइ । सुनता सुख लागइ रे ॥
तीनउँ गुन त्रिविधि तिमर । भरम करम भागइ रे ॥

होइ प्रकास अति उजाल । परम तत्त सूझइ रे ॥
परम सार निर्विकार । बिरला कोइ बूझइ रे ॥
परम थान सुख निधान । परम सुनि खेलइ रे ॥
सहज भाइ सुख समाई । जीव ब्रह्म मेलइ रे ॥
अगम निगम होइ सुगम । इतर तीर आवइ रे ॥
आदि पुरख दरस परस । दादू सो पावइ रे ॥ १६४ ॥

टेक । कोइ राम का रीता रे । कोइ प्रेम का मीता रे ॥
कोइ मन को मारइ रे । कोइ तन को तारइ रे ॥
कोइ आपा उबारइ रे ॥
कोई जोग जुगता रे । कोइ मोखि मुकता रे ॥
कोइ हइ भगवता रे ॥
कोइ सदगति सारा रे । कोइ तारनहारा रे ॥
कोइ पिय का प्यारा रे ॥
कोइ पार का पाया रे । कोइ मिल कर आया रे ॥
कोइ मन का भाया रे ॥
कोइ हइ बड भागी रे । कोइ सेज सुहागी रे ॥
कोइ हइ अनुरागी रे ॥
कोइ सबसुख-दाता रे । कोइ रूप-बिधाता रे ॥
कोइ अम्रित खाता रे ॥
कोइ नूर पिछानइ रे । कोइ तेज को जानइ रे ॥
कोइ जोति बखानइ रे ॥
कोइ साहिब जइसा रे । कोइ साईं तइसा रे ॥
कोइ दादू अइसा रे ॥ १६५ ॥

टेक । सदगति साधवा रे । सनमुख सिरजन हार ।
भवजल आप तरहिँ ते तारहिँ । प्रान उधारनहार
पूरनब्रह्म राम रँग राते । निरमल नाम अधार ॥

सुख संतोष सदा मत संजम । मति गति वार न पार ॥
जुग जुग राते जुग जुग माते । जुग जुग संगति सार ॥
जुग जुग मेला जुग जुग जीवन । जुग जुग ज्ञान बिचार ॥
सकल सिरोमनि सब सुखदाता । दुर्लभ यहि संसार ॥
दादू हंस रहइ सुख सागर । आये पर उपकार ॥ १६६ ॥

टेक । अम्हाँ घरि पाँहुणाये । आव्या आतमराम ॥
चहुँ दिसि मंगलचार । आनंद अति घणाये ॥
बरत्या जय जय कार । बिरद बधावणाये ॥
गावहु मंगलचार । आज बधावणाये ॥
सुपनों देखउँ साँच । पिव घर आवणाये ॥
कनक कलस रस माहिं । सखी भरि ल्याविज्यौ ये ॥
आनँद अंगि न माई । अम्हारे आविज्यौ ये ॥
भावइ भगति अपार । सेवा कीजिये ये ॥
सनमुख सिरजनहार । सदा सुख लीजिये ये ॥
धन्य अम्हारा भाग । आव्या अम्ह भणी ये ॥
दादू सेज सुहाग । तूँ त्रिभुवन धणी ये ॥ १६७ ॥

टेक । भाव कलस जल प्रेम का । सब सखियन कै सीस ॥
गावत चली बधावना । जय जय जय जगदीस ॥
पदम कोटि रवि झिलमिले । अँग अँग तेज अनंत ॥
बिगसि बदन बिरहिनि मिली । घर आये हरि कंत ॥
सुंदरि सुरति सिँगार करि । सनमुख परसन पीव ॥
मो मंदिर मोहन आविया । वारउँ तन मन जीव ॥
कवल निरंतर नरहरी । प्रगट भये भगवंत ॥
जहाँ बिरहिनी गुन बीनवइ । खेलइ फाग बसंत ॥
बर आयो बिरहिन मिली । अरस परस सब अंग ॥
दादू सुंदरि सुख भया । जुग जुग यह रस रंग ॥ १६८ ॥

टेक । कनक कलस रस माँहि । सखी भरि ल्याव ज्यों वे ॥

आनंद अंग न माइ । अम्हारे आविज्यो वे ॥

भावइ भगति अपार । सेवा कीजये वे ॥

ए सनमुख सिरजनहार । सदा सुख लीजिये वे ॥

धनि अम्हारा भाग । आव्या अम्हे भणि वे ॥

दादू सेज सुहाग । तूँ त्रिभुवन धणि वे ॥ २४ ॥

इति राग ॥ ८ ॥ पद ॥ १६६ ॥

——:o:——

अथ राग रामकली ।

टेक । सबदिं समाना जे रहइ । गुर बाइक बीधा ॥
उनहीं लागा एक सों । सोई जन सीधा ॥
अइसी लागी मने की । तन मन सब भूला ॥
जीवत मिरतक होइ रहइ । गहि आतम मूठा ॥
चेतनि चितइ न बीसरइ । महारस मीठा ॥
सबद निरंजन गहि रहा । उन साहिब दीठा ॥
एक सबद जन ऊधरं । सुनि सहजइ जागे ।
अंतर रति एक सों । सरस न मुख लागे ॥
सबद समाना सनमुख रहइ । पर आतम आगे ॥
दादू सीझे देखता । अबिनासी लागे ॥ १ ॥

टेक । अहो नर नीका है हरि नाम । दूजा नहीं नाउँ बिन नीका कहि ले केवल राम ॥
निरमल सदा एक अबिनासी । अजर अकल रस अइसा ॥
दिढ गहि राखि मूल मन माहीं । निरखि देख निज कइसा ॥
यह रस मीठा महाअमीरस । अमर अनूपम पावइ ॥
राता रहइ प्रेम सों माता । अइसइ जुग जुग जावइ ॥
दुर्जन ही और को अइसा । गुरु अंजन करि सूझइ ॥
दादू मोंदे भाग हमारे । दास बसे की बूझइ ॥ २ ॥

टेक । कब आवइगा कब आवइगा परगट आप दिखावइगा ॥
मिलना मुझ को भावइगा ॥
कँठडे लागि रहों रे । नैनहु में वाहि धरों रे ॥
तुझ बिन झूरि मरों रे ॥
पाऊँ मस्तक मेरा रे । तन मन पिय जी तेरा ॥

हौं राखौं नैनौं नेरा रे ॥
हियड़ै हेत लगाऊँ रे। अब कइ जे पीतम पाऊँ रे ॥
तो बेर बेर बलि जाऊँ रे ॥
सजड़िये पिय आवइ रे। तब आनँद अंग न मावइ रे ॥
जब दादू दरस दिखावइ रे ॥ ३ ॥

टेक। पिरी तूँ प्राण पसाइ डे। मूँ तनि लगी भाहि डे ॥
पांधी वीं दांनं करीला। आसां सान गल्हाइ डे
साईं सिक्का सडु केला। गुझ गाल्हि सुनाइ डे ॥
पसाँ पाक दीदार केला। सिक असाँ जी लाहिडे ॥
दादू मँझि कलूब मइला। तोड़े बिमान काइडे ॥ ४ ॥

टेक। को मेड़ी दोस जणा। सुहारी सुरति केला ॥
लगे डीहु घणा ॥
पिरिया संदी गाल्ह डीला। पाँधीड़ा पुछाँ ॥
केडी ईंदो मूँग रेला। डीहो बाँह असाँ ॥
आहे सिक दीदार जीला। पिरी पूर वसाँ ॥
इयं दादू जे ज्यँद येला। सजणा साँण रहा ॥ ५ ॥

टेक। हरि हाँ दिखावहु नैना। सुंदरि मूरति मोहना ॥
बोलि सुनावो बैना ॥
प्रगट पुरातन खंडना। महीमान सुख मंडना ॥
अबिनासी अपरं परा। दीनदयाल गगन धरा ॥
पार ब्रह्म पर पूरना। दरस देहु दुख दूरना ॥
करि कृपा करुनामई। तब दादू देखइ तुम दई ॥ ६ ॥

टेक। राम सुख सेवक जाने रे। दूजा दुख करि माने रे ॥
और अगिनी की झाला। फंध रोके हइ जमजाला ॥
सम काल कठिन सर पेखइ। यह सिंह रूप सब देखइ।
बिष सागर लहरि तरंगा। यह अइसा कूप भवंगा ॥

मैं भीत भयानक भारी । रिपु करवत मीच बिचारी ॥
यह ऐसा रूप छलावा । ठग पासी हारा आवा ॥
सब ऐसा देखि बिचारे । ये प्रान घात बटपारे ॥
ऐसा जन सेवक सोई । मन और न भावइ कोई ॥
हरि प्रेम मगन रँग राता । दादू राम रमइ रसि माता ॥ ७ ॥

टेक । आप निरंजन यौं कहइ । कीरति करतार ॥
मैं जन सेवक द्वै नहीं । एकइ अँगसार ॥
मम कारन सब परहरइ । आपा अभिमान ॥
सदा अखंडित उर धरइ । बोलइ भगवान ॥
अंतर पट जीवइ नहीं । तबही मरि जाइ ॥
बिछुरे तलपइ मीन ज्यूँ । जीवइ जल आइ ॥
छीर नीर ज्यों मिलि रहइ । जल जलहि समान ॥
आतम पानी नून ज्यों । दूजा नाहिं आन ॥
मैं जन सेवक द्वै नहीं । मेरा विस्राम ॥
मेरा जन मुझ सारिखा । दादू कहइ राम ॥ ८ ॥

टेक । सरन तुम्हारी केसवा । मैं अनंत सुख पाया ॥
भाग बडे तूं मैं दिया । हौं चरनौं आया ॥
मेरी तपति मिटी तुम देखत । सीतल भयेउ भारी ॥
भव बंधन मुक्ता भये । अब मिलहु मुरारी ॥
भरम भेद सब भूलिया । चेतनि चित लाया ॥
पारस सों परचा भया । उन सहजि लखाया ॥
मेरा चंचल चित निहचल भया । अब अनत न जाई ।
मगन भयेउ सर बेधियौ । रस पियो अघाई ॥
सनमुख होइ तैं सुख दिया । यह कुछ दया तुम्हारी
दादू दरसन पावई । पिव प्रान अधारी ॥ ९ ॥

टेक । गोविंद राखहु अपनी ओट । काम क्रोध भये बटपारे ।

तकि मारहि उर चोट ॥
बैरी पाँच सबल सँगि मेरे। मारगि रोकि रहे ॥
काल अहेरी बधिक होइ लागे। ज्यौं जिव बाज गहे ॥
ज्ञान ध्यान हिरदइँ हरि लीन्हा। सबहि घेरि रहे ॥
समझि न परइ बाप अरु मइया। तुम्ह बिन सूल सहे ॥
सरनि तुम्हारी राखऊँ गोविँद। इन सौँ संग न दीजे।
इन के सँग बहुत दुख पाया। दादू को गहि लीजे ॥ १० ॥

टेक। राम कृपा करि होहु दयाला। दरसन देहु करहु प्रतिपाला ॥
बालक दूध न देई माता। तो वह क्यौँ करि जीवइ बिधाता ॥
गुन अवगुन सब कछु न विचारइ। अंतरि हेत प्रीति करि पालइ॥
अपनौ जानि करइ प्रतिपाला। नइन निकटि उर धरइ गोपाला॥
दादू कहइ नहीँ बस मेरा। तुम्ह माता मैँ बालक तेरा ॥११॥

टेक। भगति माँगउँ बाप भगति माँगउँ।
मूँनै ताहरा नाँम नौँ प्रेम लागौँ ॥
सिवपुर ब्रह्म पुर सर्व सूँ कीजिये।
अमर थवा नहीँ लोक माँगौँ ॥
आपि अवलंबनँ ताहरा अँगनो।
भगति सजीवनी रँगी राचौँ ॥
देह ने ग्रेह ने वास बैकुँठ तणौ।
इन्द्री आसन नहीँ मुक्ति जाँचौँ ॥
भगति वाल्ही खरी आप अविचल हरी।
निरमलौ नाम रस पान भावे ॥
सिधि नइँ रिधि नइँ राज रुडो नहीँ।
देवपद माहुरै काज नावे ॥
आतमा अंतर सदा निरंतर।
ताहरी बापजी भगति दीजे।

कहइ दादू हिवै कोडि दस आपइ ।
तुम बिना तो अम्हें नहीँ लीजे ॥ १२ ॥

टेक । एवो एक तूँ राम जी नाम रूड़ो ।
ताहा नाम बिना बीजौ सर्व कूड़ो ॥
तुम बिना और कोई कलमा नहीँ ।
सुमिरता संत ने साध आपे ॥
क्रम कीधा कोड़ि छोडवइ बाधौ ।
नाम लेता खिणा हियो काँपे ।
संत ने साँकड़ी दुष्ट पीड़ा करे ।
बाहरे वहलौ वेगि आवे ॥
पाप ना पुंज पहाड़ करि लीधौ ।
भाँजिया भइ भ्रम जोनि नावे ॥
साधनैं दुहिलौँ तहाँ तूं आकुलौ ।
मान्हौ मान्हौ करी नइ धावै ॥
दुष्ट ने मारिवा संत ने तारिवा ।
प्रगट थावा तहाँ आप जावे ॥
नाँम लेताँ खिनाँ नाँथ तैँ एक लैँ ।
कोटि नाँ क्रनाँ छेद कीधा ॥
कहे दादू हवैँ तुम्ह बिना को नहीँ ।
साखि बोले जे सरण लीधा ॥ १३ ॥

टेक । हरि नाम देहु निरंजन तेरा । हरि हरि कहै अपइ जिय मेरा ॥
भाव भक्ति हेत हरि दीजइ । प्रेम उमँगि मनि आवइ ॥
कोमल बचन दीनता दीजइ । राम रसायन भावइ
बिरह बैराग प्रीत मोहिँ दीजइ । हिरदै साँच सति भाखउँ ॥
चित चरनों चिंतामनि दीजइ । अंतर दिढ़ करि राखउँ ॥
सहज संतोष सील सब दीजइ । मन निहचल तुम लागइ ॥

चेतन चेतन सदा निवासी। सँगे तुम्हारे जागइ ॥
ज्ञान ध्यान मोहन मोहिँ दीजइ। सुरति सदा सँग तेरे ॥
दीनदयाल दादू को दीजइ। परम जोति घट मेरे ॥ १४ ॥

टेक। जै जै जै जगदीस तूँ। तूँ समरथ साँईं ॥
सकल भुवन भाँनै घड़ै। दूजा को नाहीं ॥
काल मीँच करना करइ। जम किँकर माया ॥
महा जोध बलिवंत बली। त्रै कंपइ राया ॥
जुरा मरन तुमथी डरइ। मन कूँ भै भारी ॥
काम दलन करुना मई। तूँ देव मुरारी ॥
सब कंपै करतार थी। भव बंधन पासा ॥
अरि रिख भँजन भै गता। सब विघन बिनासा ॥
सिर ऊपरि साँईं रखना। सोई हम मांहीं ॥
दादू सेवक राम का। निरभइ न डराहीं ॥ १५ ॥

टेक। हरि के चरन पकरि मन मेरा। इय अविनासी घर तेरा ॥
जब चरन कमल रज पावइ। तब काल ब्याल बौरावइ ॥
तब तिरविधि ताप तन नासइ। तब सुख की रासि बिलासइ ॥
जब चरन कमल चित लागइ। तब माथैं मीच न जागइ ॥
तब जनम जुरा सब खीना। तब पद पावन उर लीना ॥
जब चरन कमल रस पीवइ। तब माया न ब्यापइ जीवइ ॥
तब भरम कर्म भौ भाजइ। तब तीनों लोक बिराजइ ॥
जब चरन कमल रुचि तेरी। तब चारि पदारथ चेरी ॥
तब दादू और न बाँछइ। जब मन लागइ साँचइ ॥ १६ ॥

टेक। संतौ और कहो क्या कहिये। हम तुम सखि इह सतगुर की ॥
निकटि राम के रहिये ॥
हम तुम्ह माहिं बसइ जो स्वामी। सोचि सचु लहिये ॥
दरसन परसन जुगि जुगि कीजइ। काहे को दुख सहिये ॥

हम तुम संग निकट रहइ नेरइ। हरि केवल कर गहिये ॥
चरन कमल छाडि करि अइसे। अनत कहीँ क्योँ बहिये ॥
हम तुम्ह तारन तेज घन सुंदर। नीके सोँ निरबहिये ॥
दादू देखु और दुख सबहीँ। तामेँ तन क्योँ दहिते ॥ १७ ॥

टेक। मन रे बहुरि न अइसा होई। पीछे फिर पछतावइगा रे।
नीँद भरे जिन सोई ॥
आगम सारे सोच करी ले। तौ सुख होवइ तोही ॥
प्रीति करी पिय पाइये रे। चरनौँ राखइ मोही ॥
संसार सागर बिषम अतिभारी। जिनि राखइ मन मोहि ॥
दादू रे जन राम नाम सोँ। कस्मल देहीँ धोइ ॥ १८ ॥

टेक। साथी सावधान होइ रहिये। पलक माहिँ परमेश्वर जानइ।
कहा होइ का कहिये ॥
बाबा, बाट घाट कछु समुझ न आवइ। दूरि गवन हम जाना ॥
परदेसी पँथ चलइ अकेला। औघट घाट पयाना ॥
बाबा, संग न साथी कोइ नहीँ तेरा। यह सब हाट पसारा ॥
तरवर पंखी सबै सिधाये। तेरा कौँन गवारा ॥
बाबा, सबइ बटाऊ पंथ सिरानेइ। अस्थिर नाहीँ कोई ॥
अँतकाल को आगेँ पीछे। बिछुरत बार न होइ ॥
बाबा, काची काया कौन भरोसा। रैन गई क्या सोवइ ॥
दादू सँबल सुकरित कीजइ। सावधान किन होवइ ॥ १९ ॥

टेक। मेरा मेरा काहे को कीजइ। जे कुछ संग न आवइ ॥
अनँत करी नैँ धन धरिआरे। तेऊ तौ रीता जावइ ॥
माया बंधन अंध न चेतइ। मेरे माँहिँ लपटाया ॥
ते जानौँ हुये हविलासौँ। अँनत विरोधे खाया ॥
आप सवारथ यह बिध धारे। आगम मरम न जागेँ ॥
जम कर माथे बाँन धरीला। तत्तो मानि न जागैँ ॥

मन बिचारि सारी ते लीजइ । तिल माहैं तन पड़िवा ॥
दादू रे तहाँ तन ताड़ी जइ । जे नइ मारग चढ़िवा ॥ २० ॥

टेक । सनमुख भइला रे । तब दुख गइला रे ॥
तैं मेरे प्रान अधारी । निराकार निरंजन देषा रे ॥
लेषा तेह बिचारी ॥

अपरंपार परम निज सोई । अलख तोरा बिस्तारं ॥
अंकुर बीजै सहज समाना रे । अइसा समरथ सारं ॥
जे ते कीन्हा किन इक चीन्हा रे । भइला तेरी मानं ॥
अविगति तोरी बिगति न जानूँ । मैं मूरखा अयानं ॥
सहजैं तोरा ये मन मोरा । साधन सोँ रँग आई ॥
दादू तोरी गति नहिँ जानइ । निरवारहु कर लाई ॥ २१ ॥

टेक । हरि मारग मस्तक दीजिये । तब निकट परम पद लीजिये ॥
इस मारग माहैंइ मरना । तिल पीछे पाव न धरना ॥
अब आगेइ होइ सो होई । पीछे सोच न करना कोई ॥
ज्यौं सूरा रन जूझइ । तब आपा पर नहिँ बूझइ ॥
सिर साहिब काज सँवारइ । घण घावा आपा डारइ ॥
सती सत गहि सोचा बोल । मन निहचल कधीन डोलइ ॥
वाके सोच पोच जीया न आवइ । जग देखत आप लजावइ ॥
इस सिर सोँ साटा कीजइ । तब अबिनासी पद लीजइ ॥
ताका तब सिर स्याबति होवइ । जब दादू आपा खोजइ ॥२२।

टेक । झूठा कलिजुग कहइ न जाइ । अम्रित को बिष कहइ बनाइ ॥
धन को निरधन निरधन को धन । नीति अनीति पुकारइ ॥
निरमल मैला मैला निरमल । साध चोर करि मारइ ॥
कंचन काँच काँच को कंचन । हीरा कंकर भाखइ ॥
मानिक मनियाँ मनियाँ मानिक साँच झूठ करि नाखइ ॥
पारस पैत्थर पत्थर पारस । कामधेनु पसु गावइ ॥

चंदन काठ काठ को चंदन। अइसी बहुत बनाबइ॥
रस को अनरस अनरस को रस। मीठा खारा होई॥
दादू कलिजुग अइसा बरनइ। साँचा बिरला कोई॥ २३॥

टेक। दादू मोहिँ भरोसा मोटा। तारन तरन सोई सँग मेरे।
कहा करइ कलि खोटा॥
दौँ लागी दरिया थैं न्यारी। दरिया मंझि न जाई॥
मच्छ कच्छ रहहिँ जल जेते। तिन्ह को काल न खाई॥
जब सोवज पिंजर घर पाया। बाज रह्या बन माहीँ॥
जिन्हका समरथ राखनहारा। तिन्हकौं कोउ डर नाहीँ॥
साँचइ झूठ न पूजइ कबहूँ। सेति न लागहिँ काँई॥
दादू साँचा सहज समाना। फिरि वै झूठ बिलाई॥ २४॥

टेक। साँईँ को साँच पियारा। साँचे साँच सुहावे देखहु
साँचा सिरजनहारा॥
ज्यों घण घाँवाँ सार घड़ीजै। झूठ सबै झड़ि जाई॥
घण के घाँऊँ सार रहइगा। झूठि न माहि समाई॥
कनक कसौटी अगिनि मुख दीजइ। कंक सबइ जलि जाई॥
यौँ तो कसनीँ साँच सहइगा। झूठ सहइ नहिँ भाई॥
ज्योँ घृत को लेइ ताता कीजइ। ताइ ताइ तत कीना॥
ततैँ तत्त रहइगा भाई। झूठ सबइ जलि खीना॥
यौँ तौ कसनीँ साँच सहइगा। साँचा कसि कसि लेवै॥
दादू दरसन साँचा पावे। झूठे दरसन देवे॥ २५॥

टेक। बातैँ बाति जाहि गी भइये। तुम्ह जिनि जानौ बातनि पइये॥
जब लग अपना आप न जानइ। तब लग कथनी काची॥
आपा जानि साईँ को जानइ। तब कथनी सब साँची॥
करनी बिना कंत नहिँ पावइ। कहे सुने कहा होई॥
अइसी कहइ करइगा तइसी। पावइगा जन सोई॥

बातनि ही जउँ निरमल होवइ। तौ काहे को कासि लीजइ॥
सोना अगिनि दहइ दस बारा। तब यह प्रान पतीजइ॥
यों हम जाना मन पतियान। करनी कठिन अपारा॥
दादू तन का आपा जारइ। तौ तिरत न लागइ बारा॥ २६॥

टेक। पंडित राम मिलइ सो कीजे। पढ़ि पढ़ि वेद पुरान बखाना।
सोइ तत्त कहि कीजे॥
आतम रोगी बिषम बियाधी। सोई करि औषधि सारा॥
परसत प्रानी होइ परम सुख। छूटइ सब संसारा॥
ऐगुन इंद्री अगिनि अपारा। तासनि जलइ सरीरा॥
तन मन सीतल होइ सदा सुख। सो जल नावउँ नीरा॥
सोई मारग हमहिं बतावो। जेहि पँथ पहुचँइ पारा॥
भूलि न परइ उलटि नहिं आवइ। सो कुछ करउ बिचारा॥
गुरु-उपदेस देहु कर दीपक। तिमिर मिटइ सब सूझइ॥
दादू सोई पंडित ज्ञाता। राम मिलन की बूझइ॥ २७॥

टेक। हरिराम बिना सब भ्रम गये। कोइ जन तेरा साँच भये॥
पीवइ नीर तृषा तन भाजइ। ज्ञान गुरू बिन कौन लहइ॥
परगट पूरा समझि न आवइ। तायैं सब जल दूरि रहइ॥
हरष सोक दोऊ सम करि राखइ। एक एक संगि न बहइ॥
अनत जाइ तहाँ दुख पावइ। आपहि आपा आप दहइ॥
आपा पर भरम सब छाडइ। तीँनि लोक परि ताहि धरइ॥
सो जन सही साँच को परसइ। अमर मिलइ कबहूँ नहिं मरइ॥
पारब्रह्म सौं प्रीति निरंतर। राम रसायन भरि पीवइ॥
सदा अनंद सुखी साँचे सौं। कहइ दादू सो जन जीवइ॥२८॥

टेक। जग अंधा नयन न सूझइ। जिन सिरजे ताहि न बूझइ॥
पाहन की पूजा करइ। करि आतमघाता॥
निरमल नयन न आवइ। दोजग दिसि जाता॥

पूजइ देव दिहाडिया । महामाई मानइ ॥
परगट देव निरंजना । ताकी सेव न जानइ ॥
भइरों भूत सब भ्रम के । पसु प्रानी ध्यावइ ॥
सिरजनहारा सबनि का । ताको नहिँ पावइ ॥
आप सँवारथ मेदनी । का का नहीँ करई ॥
दादू साँचे राम बिन । मरि मरि दुख भरई ॥ २६ ॥

टेक । साँचा राम न जानहिँ रे । सब झूठ बखानहिँ रे ॥
झूठे देवा झूठी सेवा । झूठा करइ पसारा ॥
झूठी पूजा झूठी पाती । झूठा पूजनहारा ॥
झूठा पाक करइ रे प्रानी । झूठा भोग लगावइ ॥
झूठा आडा पड़दा देवइ । झूठा थाल बजावइ ॥
झूठे बकता झूठे सुरता । झूठी कथा सुनावइ ॥
झूठा कलिजुग सब को मानइ । झूठा भरम दिढावइ ॥
थावर जंगम जल थल महियल । घटि घटि तेज समाना ॥
दादू आतमराम हमारा । आदि पुरुष पहिचाना ॥ ३० ॥

टेक । मइँ पंथ एक अपार के । मन और न भावइ ॥
सोई पंथ पावइ पिव का । जिसे आप लखावइ ॥
को पंथ हिंदू तुरक के । को काहू राता ॥
को पंथि सोफी सेवड़े । को सन्यासी माता ॥
को पंथ जोगी जंगमा । को सकति पंथि ध्यावइ ॥
को पंथि कमडे कापडी । को बहुत मनावइ ॥
को पंथि काहू के चलइ । मइँ और न जानउँ ॥
दादू जिन्ह जग सिरजिया । ताही को मानउँ ॥ ३१ ॥

टेक । आज हमारे राम जी । साध घरि आये ॥
मंगल चार चहुँदिस । भये आनंद बधाये ॥
चौक पुराऊँ मोतियाँ । घसि चंदन लाऊँ ॥

पंच पदारथ पोइ करि। बहु माल चढाऊँ॥
तन मन धन करउँ वारनो। परदखिना दीजइ॥
सीस हमारा जीव ले। नेवछावर कीजइ॥
भाव भगति करि प्रीति सौँ। प्रेम रस पीजइ।
सेवा बंदन आरती। यह लाहा लीजइ॥
भाग हमारा हे सखी। सुख सागर पाया॥
दादू का दरसन किया। मिला त्रिभुवनराया॥ ३२॥

टेक। निरंजन नाउँ के रस माते। कोई पूरे प्रानी राते॥
सदा सनेही राम के। सोई जन साँचे॥
तुम्ह बिन और न जानहीँ। रागहि तेरे राँचे॥
आनन भावइ एक तूँ। सति साधू सोई॥
प्रेम पियासे पीय के। अइसा जन कोई॥
तुम्ह हीँ जीवनि उर रहे। आनँद अनुरागी॥
प्रेम मगन पिय प्रीतडी। लेइ तुम्ह सोँ लागी॥
जे जन तेरे रँग रंगे। दूजा रँग नाहीँ॥
जनम सुफल करि लीजिये। दादू उन माहीँ॥ ३३॥

टेक। चलु रे मन जहाँ अम्रित बना। निरमल नीके संत जना॥
निरगुन नाउँ फल अगम अपार। संतन जीवन प्रान अधार॥
सीतल छाया सुखी सरीर। चरन सरोवर निर्मल नीर॥
सुफल सदा फल बारह मास। नाना बानी धुनि प्रकास॥
तहाँ बास बसि अमर अनेक। तहाँ चलि दादू यह बिबेक॥३४॥

टेक। चलउ मन माहा जहाँ मित्र अम्हारा।
जहाँ जीवन मरन न जानिये।
नहीँ जानिये॥
जहाँ मोहन माया मेरा न तेरा। आवागवन नहीँ जम फेरा॥
जहाँ पिंड पडइ नहीँ प्रान न छूटइ।

काल न लागइ आयु न खूटइ ॥
अमर लोक तहाँ अखिल सरीरा । ब्याधि बिकार न ब्यापइ पीरा॥
राम राज कोइ भिडइ न भाजइ । अस्थिर रहना बइठा छाजइ ॥
अलख निरंजन और न कोई । मित्र हमारा दादू सोई ॥ ३५ ॥

टेक । बेली आनँद प्रेम समाइ । सहजहि मगन रामरस सींचइ
दिन दिन बधती जाइ ॥
सतगुरु सहजहि बाही बेली । सहजि गगन घर छाया ॥
सहजहि सहजइ कूँपल मेलइ । जानहिँ अवधूराया ॥
आतम बेली सहजहि फूलइ । सदा फूल फल होई ॥
काया बाडी सहजहि उपजइ । जानइ बिरला कोई ॥
मन हठ बेली सूखन लागी । सहजहि जुग जुग जीवइ ॥
दादू बेलि अमर फल लागइ । सहजि सदा रस पीवइ ॥ ३६ ॥

टेक । संतो राम बान मोहिँ लागे । मारत मन मरन तब पायउ
सब संगी मिलि जागे ॥
चित चेतनि चिंतामनि चीन्हा । उलटि अपूठा आया ॥
मंदिर पइसि बहुरि नहिँ निकसइ । परम तत्त घर पाया ॥
आवइ न जाइ जाइ नहिँ आवइ । तिहि रसि मनवाँ माता ॥
पान करत परमानँद पायउ । थकित भयउ चलि जाता ॥
भयउ अपंग पंक नहिँ लागइ । निर्मल संग सहाई ॥
पूरन ब्रह्म अखिल अबिनासी । तेहि तजि अनत न जाई ॥
सो सर लागि प्रेम प्रकासा । प्रगटी प्रीतम बानी ॥
दादू दीनदयालहि जानइ । सुख मेँ सुरति समानी ॥३७॥

टेक । अखि नैन निरखउँ सदा । सो सहज सरूप ॥
देखत ही मन मोहिया । सो तत्त अनूप ॥
त्रिबेनी तट पाइया । मूरति अबिनासी ॥
जुग जुग मेरा भावता । सो सुख रासी ॥

तारुनी तट देखिहउँ। तहाँ अस्थाना ॥
सेवक स्वामी संग हइ। बइठे भगवाना ॥
प्रेमइ थान सुहात सो। तहाँ सेवक स्वामी ॥
अनेक जतन करि पाइया। मैं अंतरजामी ॥
तेज तार परमिति नहीं। अइसा उँजियारा ॥
दादू पार न पावई। सो सरूप सँभारा ॥ ३८ ॥

टेक। निकट निरंजन देखि हौं। छिन दूरि न जाई ॥
बाहर भीतरि एक सा। सब रहा समाई ॥
सतगुरु भेद बताइया। तब पूरा पाया ॥
नैननही निरखउँ सदा। घरि सहजै आया ॥
पूरे सों परचा भया। पूरी मति जागी ॥
जीव जानि जीवनि मिलेउ। अइसे बड भागी ॥
रोम रोम मैं रमि रहा। सो जीवन मेरा ॥
जीव पीव न्यारा नहीं। सब संग बसेरा ॥
सुंदरि सो सहजहि रहइ। घट अंतरजामी ॥
दादू सोई देखिहउँ। सारउँ सँग स्वामी ॥ ३९ ॥

टेक। सहज सहेलडी हइ। तूँ निर्मल नैन निहारि ॥
रूप अरूप त्रिगुन आगुन मैं। त्रिभुवन देव मुरारि ॥
बारंबार निरखि जग जीवन। येहि घरि हरि अबिनासी ॥
सुंदरि जाइ सेज सुख बिलसइ। पूरन परम निवासी ॥
सहजहि संग परसि जग जीवन। आसन अमर अकेला ॥
सुंदरि जाइ सेज सुख सोवइ। ब्रह्म जीव का मेला ॥
मिलि आनंद प्रीति करि पावन। अगम निगम जहाँ राजा ॥
जाइ तहाँ परसि पावन को। सुंदरि सारइ काजा ॥
मंगलचार चहुँ दिसि रोपइ। जब सुंदरि पिय पावइ ॥
परम जोति पूरे सों मिलि करि। दादू रंग लगावइ ॥ ४० ॥

टेक । तहाँ आपइ आप निरंजना । तहाँ निस बासर नहीं संजमा ॥
तहाँ धरती अंबर नाहीं । तहाँ धूप न दीसइ छाहीं ॥
तहाँ पवन न चालइ पानी । तहाँ आपइ एक बिनानी ॥
तहाँ चंद न ऊगइ सूरा । मुख काल न बाजइ तूरा ॥
तहाँ सुख दुख का गम नाहीं । वो तउ अगम अगोचर माहीं ॥
तहाँ काल काया नहीं लागइ । तहाँ को सोवइ को जागइ ॥
तहाँ पाप पुन्न नहिं कोई । तहाँ अलख निरंजन सोई ॥
तहाँ सहजि रहइ सो स्वामी । सब घटि घटि अंतरजामी ॥
सकल निरंतर बासा । रटि दादू संगम पासा ॥ ४१ ॥

टेक । अवधू बोल निरंजन बानी । तहाँ एकइ अनहद जानी ॥
तहाँ बसुधा कावलि नाहीं । तहाँ गगन घाम नहिं छाहीं ॥
तहाँ चंद सूर नहिं आई । तहाँ काल काया नहिं ताई ॥
तहाँ रैनि दिवस नहिं छाया । तहाँ बायु बरन नहिं माया ॥
तहाँ उदय अस्त नहिं होई । तहाँ मरइ न जीवइ कोई ॥
तहाँ नाहीं पाठ पुराना । तहाँ अगम निगम नहिं जाना ॥
तहाँ बिद्या बाद नहीं ज्ञाना । नहीं तहाँ जोग अरु ध्याना ॥
तहाँ निराकार निज अइसा । तहाँ जारायाँ जाइ न तइसा ॥
तहाँ सब गुन रहिता गहिये । तहाँ दादू अनहद कहिये ॥४२॥

टेक । बाबा को अइसा जन जोगी । अंजन छाडइ रहइ निरंजन ।
सहज सदा रस भोगी ॥
छाया माया रहइ बिवर्जित । पिंड ब्रह्मंड नियारे ॥
चंद सूर तें अगम अगोचर । सो गहि तत्त बिचारे ॥
पाप पुन्य लिपइ नाहिं कबहूँ । दोइ पख रहिता सोई ॥
धरनि अकास ताहि तें ऊपरि । तहाँ जाइ रत होई ॥
जीवन मरन न बांछइ कबहूँ । आवागवन न फेरा ॥

पानी पवन परस नाहिँ लागइ। तेहि सँग करइ बसेरा ॥
गुन आकार जहाँ गम नाहीँ। आपही आप अकेला ॥
दादू जाइ जहाँ जन जोगी। परम पुरष सोँ मेला ॥ ४३ ॥

टेक। जोगी जानि जानि जन जीवइ। बिनही मनसा मनहिँ बिचारइ।
बिन रसना रस पीवइ ॥
बिनही लोचन निरखि नैन बिन। स्रवन रहित सुनि सोई ॥
अइसइ आतम रहइ एक रस। तउ दूसर नाउँ न होई ॥
बिनही मारग चलइ चरन बिन। निहचल बइठा आई।
बिनही काया मिलइ परसपर। ज्योँ जल जलहि समाई ॥
बिनही ठाहर आसन पूरइ। बिन कर बेन बजावइ ॥
बिनही पाउँ नाचइ निस दिन। बिन जिभ्भा गुन गावइ ॥
सब गुन रहिता सकल बियापी। बिन इंद्री रस भोगी ॥
दादू अइसा गुरू हमारा। आप निरंजन जोगी ॥ ४४ ॥

टेक। इहइ परम गुरु जोग। अमी महारस भोग ॥
मन पवना थिर साध। अबिगत नाथ अराध ॥
तहाँ सबद अनहद नाद।
पंच सखी परमोद। अगम ज्ञान गुरुबोध।
तहाँ नाथ निरंजन सोध ॥
सतगुरु माहिँ बतावा। निराधार घर छावा।
तहाँ जोति सरूपी पावा ॥
सहजइ सदा प्रकास। पूरन ब्रह्म बिलास ॥
तहाँ सेवक दादू दास ॥ ४५ ॥

टेक। मूनैँ यह अचँभो थाये। कीडी ये हस्ती बिडार्यो।
तिन्हैँ बैठी खाये ॥

आनहुँ ते तौ बैठी हारे । आजम तिन्हैं तो बाहि ॥
पाँगुलौऊ आवा लागौ । तेन्हैं बार की साहै ॥
नाँन्हौं डुलौ ते मोटो थयौ । गगन मँडल नहिं मायै ॥
मोटेरो बिस्तार भवी जे । ते तौ कान्हो जाये ॥
ते जानौ जे निरखी जोवै । खोजी नै बलि मायै ॥
दादू तेन्हो मरम न जानइ । जे जिभ्या बिहीनो गायै ॥ ७८ ॥

इति समकली संपूर्णा ॥ ९ ॥ २१९ ॥

———:o:———

अथ राग असावरी ॥

टेक । तूँ ही मेरे रसना । तूँ ही मेरे बैना ॥
तूँ ही मेरे स्रवना । तूँ ही मेरे नैना ॥
तूँ ही मेरे आतम कवल करी। तूँ ही मेरी मनसा तुम्ह परिवारी॥
तूँ ही मेरे मनही तूँ ही मेरे मनसा ।
तूँ ही मेरे सुरतैं प्रान निवासा ॥
तूँ ही मेरे नख सिख सकल सरीरा ।
तूँ ही मेरे जीये रे ज्यौं जल नीरा ॥
तुम्ह बिन मेरे और कोउ नाहीं ।
तूँ ही मेरी जीवनि दादू माहीं ॥ १ ॥

टेक । तुम्हरे नावँ लागि हरि जीवनि मेरा ।
मेरे साधन सकल नाउँ निज तेरा ॥
दान पुन्न तप तीरथ मेरे । केवल नाम तुम्हारा ॥
ए सब मेरी सेवा पूजा । अइसा बरत हमारा ॥
ए सब मेरे बेद पुराना । सुचि संजम हइ सोई ॥
ज्ञान ध्यान एई सब मेरे । और न दूजा कोई ॥
काम क्रोध काया बलि करना । ए सब मेरे नामा ॥
मुक्ता गुप्ता परगट कहिये । मेरे केवल रामा ॥
तारन तिरन नाउँ निज तेरा । तुमही एक अधारा ॥
दादू अंग एक रस लागा । नाउँ गहइ भौ पारा ॥ २ ॥

टेक । हरि केवल एक अधारा । सोई तारन तरन हमारा ॥
ना मैं पंडित पढि गुन जानउँ । ना कुछ ज्ञान बिचारा ॥
ना मैं अगमी जोति न जानउँ । ना मुझ रूप सिँगारा ॥
ना तप मेरे इंद्री निग्रह । ना कुछ तीरथ फिरना ॥

देवल पूजा मेरे नाहीं। ध्यान कछू नहीं धरना ॥
जोग जुगुति कछू नाहीं मेरे। ना मैं साधन जानउँ ॥
ओखदि मूली मेरे नाहीं। ना मैं देख बखानउँ ॥
मैं तौ और कछू नहीं जानउँ। कहहु और का कीजइ ॥
दादू एक ललित गोबिंद सौं। येहि बिधि प्रान पतीजइ ॥ ३ ॥

टेक। पीय घर आवनौं ये। अहो मोहि भावनौं ये ॥
मोहन नीकौ रे हरी। देखौंगी अँखिया भरी ॥
राखउँ हौं उर धरी। प्रीति खरी ॥
मोहन मेरी री माई। रहउँ हउँ चरन धाई ॥
आनंद बधाई। हरि के गुन जाई ॥
दादू रे चरन गहिये। जाइ नैं तहाँ तौ रहिये ॥
तन मन सुख लहिये। बिनती कहिये ॥ ४ ॥

टेक। हो माई मेरो राम बइरागी। तजि जिनि जाई ॥
राम बिनोद करत उर अंतर। मिलि हौं बैरागनि धाई ॥
जोगिनि ह्वै करि फिरूँ गी बिदेसा। राम नाम लव लाई ॥
दादू को स्वामी हइ रे उदासी। रहिहउँ नयन दोइ लाइ ॥५॥

टेक। रे मन गोबिंद गाइ रे गाइ। जनम अबिरथा जाइ रे जाइ ॥
अइसा जनम न बारंबारा। ता तें जपि ले राम पियारा ॥
यह तन अइसा बहुरि न पावइ। ताते गोबिंद काहे न गावइ ॥
बहुरि न पावइ मनुषा देही। ता तै करि ले राम सनेही ॥
अब कइ दादू किया निहाला। गाइ निरंजन दीनदयाला ॥६॥

टेक। मन रे सोवत रैन बिहानी। तैं अजहूँ जाग न जानी ॥
बीती रैन बहुरि नहिं आवइ। जीव जागि जिनि सोवइ ॥
चारौ दिसा चोर घर लागे। जागि देखि क्या होवइ ॥
भोर भये पछितावन लागउ। माहिं महल कुछ नाहीं ॥

जब जाइ काल काया करि लागइ। तब सोभइ घर माहीं ॥
जागि जतन करि राखउ सोई। तब तन तत्त न जाई ॥
चेतनि पहरइ चेतन नाहीं। कह दादू समझाई ॥ ७ ॥

टेक। देखत ही दिन आइ गये। पलटि केस सब सेत भये ॥
आइ जुरा मीच अरु मरना। आयो काल अबइ क्या करना ॥
स्रवनहु सुरति गइ नयन न सूझइ। सुधि बुधि नाठी कहा न बूझइ ॥
मुख तें सबद विकल भइ बानी। जनम गया सब रैन बिहानी ॥
प्रान पुरुष पछितावन लागा। दादू अउसर काहे न जागा ॥८॥

टेक। हरि बिन हाँ हो कहूँ सच नाहीं। देखत जाइ विषय फल खाहीं ॥
रस रसना के मीन मन भीरा। जल थें जाइ हीं दहइ सरीरा ॥
गज के ज्ञान मनन मदि माता। अंकुस डोरि गहइ फँद गाता ॥
मरकट मूठी माहिं मन लागा। दुखकी रासि भरमे भरमिक भागा
दादू देखु हरी सुख दाता। ताको छाँडि कहाँ मन राता ॥ ९ ॥

टेक। साईं बिना संतोख न पावइ। भावइ घर तजि बन बन धावइ ॥
भावइ पढि गुनि बेद उचारइ। आगम निगमा सबइ बिचारइ ॥
भावइ नव खँडि सब फिरि आवइ। अजहूँ आगइ काहे न जावइ ॥
भावइ सब तजि रहइ अकेला। भाई बंध न काहू मेला ॥
दादू देखइ साईं सोई। साच बिना संतोख न होई ॥ १० ॥

टेक। मन माया रातौ भूले। मेरी मेरी करि करि बोले।
कहा मुगध नर फूले ॥
माया कारन मूल गवाँवइ। समझि देख मन मेरा ॥
अंतकाल जब आइ पहूँचा। कोई नहीं तब तेरा ॥

मेरी मेरी करि करि जानइ। मन मेरी करि रहिया॥
तब यह मेरी कामिन आवइ। प्रान पुरुष जब गहिया॥
राव रंक सब राजा राना। सबहिन को बौरावइ॥
छत्रपति भूपति तिनहूँ क संगी। चलती बेर न आवइ॥
चेति बिचारि जानि जिय अपने। माया संगि न जाई॥
दादू हरि भजि समझि सयाना। रहउ राम लव लाई॥११॥

टेक। रहसी एकउ पावनहारा। और चलसी सब संसारा॥
चलसी गगन धरनि सब चलसी। चलसी पवन अरु पानी॥
चलसी चंद सूर पुनि चलसी। चलसी सबइ उपानी॥
चलिसी दिवस रैनि भी चलसी। चलसी जुग जम बारा॥
चलसी काल व्याल पुनि चलसी। चलसी सबइ पसारा॥
चलसी भाग मकर भी चलसी। चलसी भवचन हारा॥
चलसी सुख दुःख भी चलसी। चलसी करम बिचारा॥
चलसी चंचल निहचल रहसी। चलिसी जे कुछ कीन्हा॥
दादू देखु रहइ अबिनासी। और सबै घट खीन्हा॥ १२॥

टेक। येहि कलि हम मरने को आये। मरन मीत उन संग पठाये॥
जब तें नहि हम मरन बिचारा। तब तें आगम पंथ सँवारा॥
मरनी देखि हम गरब न कीन्हा। मरन पठाया सो हम लीन्हा॥
मरना मीठा लागै मोहि। येहि मरने मीठा सुख होइ॥
मरने पहले मरै जे कोई। दादू सो अजरामर होई॥ १३॥

टेक। रे मन मरने कहा डराई। आगे पीछे मरना रे भाई॥
जे कुछ आवै थिर न रहाई। देखत सबइ चला जग जाई॥
पीर पैगंबर किया पयाना। सेख मसाइक सबइ समाना॥
ब्रह्मा बिष्नु महेस महाबलि। मोटे मुनि जन गये सबै चलि॥
निहचल सदा सोइ मन लाइ। दादू हरखि राम गुन गाइ॥ १४॥

टेक। अइसा तत्त अनूपम भाई। मरइ न जीवइ काल न खाई॥
पावक जरइ न मारे मरई। काट्यौ कटइ न टार्‌यौ टरई॥
आखिर खिरइ न लागइ कोई। सीत घाम जल डूबि न जाई॥
माटी मिलइ न गगन बिलाई। अघट एक रस रहा समाई॥
अइसा तत्त अनूपम कहिये। सो गहि दादू काहे न रहिये॥१५॥

टेक। मन रे सेव निरंजन राई। ताको सेवो रे चित लाई॥
आदइ अंतइ सोई उपावइ। परलै लेइ छिपाई॥
बिन खंभा जिनि गगन रहाया। सो रहा सबनि में समाई॥
पाताल माहैं जे आराधइ। बासि गरे गुन गाई॥
सहस मुख जिभ्या है ताके। सो भी पार न पाई॥
सुर नर जाको पार न पावइ। कोटि मुनी जन धाई॥
दादू रे तन ताको हइ रे। जाको सकल लोक आराही॥१६॥

टेक। निरंजन जोगी जानि ले चेला। सकल बियापी रहइ अकेला॥
खपर न झोली डंड अधारी। मटी न काया लेहु बिचारी॥
सींगी मुद्रा बिभूति न कंथा। जटा जाप आसन नहिँ पंथा॥
तीरथ बरत न बनखँड बासा। माँगि न खाइ नहीँ जग आसा॥
अमर गुरू अबिनासी जोगी। दादू चेला महारस भोगी॥१७॥

टेक। जोगिया बइरागी बाबा। रहे अकेला उनमनि लागा॥
आतम जोगी धीरज कंथा। निहचल आसन अउर न पंथा॥
सहजइ मुद्रा अलख अधारी। अनहद सींगी रहनि हमारी॥
काया बनखँड पंचो चेला। ग्यान गुफा में रहइ अकेला॥
दादू दरसन कारन जागइ। निरँजन नगरी भिच्छा माँगइ॥१८॥

टेक। बाबा कहु दूजा क्या कहिये। ता तेँ येहि संसै दुख सहिये॥
येहि मति अइसी पसुवा जैसी। काहे चेतत नाहीँ॥
अपना अंग आप नहिँ जानइ। देखइ दरपन माहीँ॥
येहि मति मीच मरन के ताँई। कूप सिंघ तहाँ आया॥

बूडि मुवा मन मर्म न जाना । देखि आपनी छाया ॥
मद के माते समुझत नाहीँ । मैँ गल की मति आई ॥
आपहि आप आप दुख दीन्हा । देखि आपनी झाँई ॥
मन समझइ तौ दूजा नाहीँ । बिन समझइ दुख पावइ ॥
दादू ज्ञान गुरू का नाहीँ । समझि कहाँ तेँ आवइ ॥ १९ ॥

टेक । बाबा नाहीँ दूजा कोई । एक अनेक नाउँ तुम्हारे ॥
मो पइ और न होई ॥
अलख इलाही एक तूँ । तूँ ही राम रहीम ॥
तूँ ही मालिक मोहना । केसो नाउँ करीम ॥
साईं सिरजनहार तूँ । तूँ पावन तूँ पाक ॥
तूँ काइम करतार तूँ । तूँ हरि हाजिर आप ॥
मिता राजिक एक तूँ । तूँ सारंग सुभान ॥
कादिर करता एक तूँ । तूँ साहिब सुलतान ॥
अबिगति अल्लह एक तूँ । गनी गोसाईँ एक ॥
अजब अनूपम आप हइ । दादू नाउँ अनेक ॥२०॥

टेक । जीवत मारे मुये जिलाये । बोलत गूँगे गूँग बुलाये ॥
जागत निसभरि सोइ सुलाये । सोवत रइनी साईँ जगाये ॥
सूझत नयनहु लोयन लाये । अंध बिचारे ता मुख हाये ॥
चलते भारी ते बिठलाये । अपंग बिचारे सेइ चलाये ॥
अइसा अद्‌भुत हम कुछ पावा । दादू सतगुरु कहि समझावा ॥२१॥

टेक । क्योँ कर यह जग रचेउ गोसाईँ ।
तेरे कौन बिनोद बनेउ मन माहीँ ॥
कइ तुम्ह आपा परगट करना । कइ यहु रचि ले जीव उधरना ॥
कइ यहु तुम्ह को सेवक जानइ ।

कइ यह रचि ले मन के मानइ ॥
कइ यह तुम्ह को सेवक भावइ ।
कइ यह रचिले खेल दिखावइ ॥
कइ यह तुम्ह को खेल पियारा ।
कइ यह भावइ कीन्ह पसारा ॥
यह सब दादू अकथ कहानी । कहि समझावो सारँग पानी ॥२२॥

उत्तर की साखी ।

परमारथ को सब किया । आप सवारथ नाहिँ ॥
परमेस्वर परमारथी । कै साधू कलि माहिँ ॥
खालिक खेलइ खेल करि । बूझइ बिरला कोइ ॥
ले करि सुखिया नाँ भया । दे करि सुखिया होइ ॥ २३ ॥

टेक । हरे हरे सकल भवन भरे । जुगि जुगि सब करइ ॥
जुगि जुगि सब धरइ । अकल सकल जरइ हरे हरे ॥
सकल भवन छीजइ । सकल भवन राजइ ॥
सकल कहइ धरती अंबर गहइ । चंद सूर सुधि लहइ ।
पवन प्रगट बहइ ॥
घट घट आप देवइ । घट घट आप लेवइ ॥
मंडित माया । जहाँ तहाँ आप राया ॥
जहाँ तहाँ आप छाया । अगम अगम पाया ॥
रस माहैँ रस राता । रस माहैँ, रसमाता ॥
अम्रित पीया । नूर माहैँ नूर लीया ॥
तेज माहइँ तेज कीया । दादू दरस दीया ॥ २४ ॥

टेक । पीय पीय आदि अंति पीय । परसि परसि अंग संग ।
पीव तहाँ जीव ॥
मन पवन भवन गवँन । प्रान कवल माहिँ ॥
निधि निवास बिधि बिलास ।

राति दिवस नाहिं ॥
सास बस न आसपास । आत्म अँगि लगाइ ॥
अइन बइन निरखि नइन । गाइ गाइ रिझाइ ॥
आदि तेज अंति तेज । सहजि सहजि आइ ॥
आदि नूर अंति नूर । दादू बलि जाइ ॥ २५ ॥

टेक । नूर नूर अवलि आखिर नूर । दाइम काइम काइम दाइम ।
हाजिर हइ भरपूर ॥
असमान नूर जिमी नूर । पाक परवरदिगार ॥
आब नूर बाद नूर । खूब खूबाँ यार ॥
जाहिर बातनि हाजरि नाजरि । दाना तूँ दीवान ॥
अजब अजाइब नूर दीदाँ । दादू हइ हइरान ॥ २६ ॥

टेक । मैं अमली मतिवाला माता । प्रेम मगन मेरा मन राता ॥
अमीं महारस भरि भरि पीवइ । मन मतवाला जोगी जीवइ॥
रहइ निरंतर गगन मँझारी । प्रेम पियाला सहजि खुमारी ॥
आसनि अवधू अम्रितधारा । जुगि जुगि जीवइ पीवन हारा ॥
दादू अमली येहि रस माते । राम रसायन पीवत छाके ॥ २७ ॥

टेक । सुख दुख संसा दूरि किया । तब हम केवल राम लिया ॥
सुख दुख दोऊ भरम बिचारा । इन सौं बँधा हइ जग सारा ॥
मेरी मेरा सुख के ताहीं । जाइ जन्म नर चेतइ नाहीं ॥
सुख के ताँईं झूठा बोलइ । बाँधइ बंधन कबहूँ न खोलइ ॥
दादू सुख दुख संगि न जाईं । प्रेम प्रीति पिय सउँ लव लाईं ॥२८॥

टेक । कासौं कहउँ हो अगम हरि बाता ।
गगन न धरनि दिवस नहिं राता ॥
संग न साथी गुरू न चेला। आस न पास यौं रहइ अकेला ॥
बेद न भेद न करत बिचारा । अबरन बरन सबनि तें न्यारा ॥

प्रान न पिंड रूप नाहिँ रेखा। सोइ तत सार नयन बिन देखा॥
जोग न भोग मोह नहिँ माया। दादू देखु काल नाहिँ काया॥२९

टेक। मेरा गुरु अइसा ज्ञान बतावइ। काल न लागइ संसा भागइ॥
ज्योँ हइ त्योँ समझावइ॥
अमर गुरू कइ आसनि रहिये। परम जोति तहाँ लहिये॥
परम तेज सो दिढ करि गहिये। गहिये लहिये रहिये॥
मन पवन गहि आतम खेला। सहज सुन्नि घर मेला॥
अगम अगोचर आप अकेला। अकेला मेला खेला॥
धरती अंबर चंद न सूरा। सकल निरंतर पूरा॥
सबद अनाहद बाजइ तूरा। तूरा पूरा सूरा॥
अबिचल अमर अभइ पद दाता। तहाँ निरंजन राता॥
ज्ञान गुरू ले दादू माता। माता राता दाता॥ ३०॥

टेक। मेरा गुरू आप अकेला खेलइ। आपइ देवइ आपइ लेवइ।
आपइ दुइ कर मेलइ॥
आपइ आप उपावइ माया। पंच तत्त करि काया॥
जीव जनम लै जग मेँ आया। आया काया माया॥
धरती अंबर मरम उपाया। सब जग धंधइ लाया॥
आपइ अलख निरंजन राया। राया लाया उपाया॥
चंद सूर दुइ दीपक कीन्हा। राति दिवस करि लीन्हा॥
राजिक रिजक सबनि को दीन्हा। दीन्हा लीन्हा कीन्हा॥
परम गुरू सोँ प्रान हमारा। सब सुख देवइ सारा
दादू खेलइ अनँत अपारा। अपारा सारा हमारा॥ ३१॥

टेक। थकित भयेउ मन कहेउ न जाई। सहज समाधि रहेउ लवलाइ॥
जे कुछ कहिये सोच बिचारा। ज्ञान अगोचर अगम अपारा॥
साइर बूँद कइसे करि तोलइ। आप अबोल कहा करि बोलइ॥

अनल पंख परइ परि दूरि । अइसइ राम रहेउ भर पूरि ॥
अब मन मेरा अइसै रे भाई । दादू कहिबा कहा न जाई ॥ ३२॥

टेक । अबिगत की गति कौन लहइ । सब अपना उनमान कहइ ॥
केते ब्रह्मा बेद बिचारइ । केते पंडित पाठ पढइ ॥
केते अनभै आतम खोजहिँ । केते सुरनर नाउँ रटहिँ ॥
केते ईस्वर आसनि बैठे । केते जोगी ध्यान धरहिँ ॥
केते मुनिवर मन को मारहिँ । केते ज्ञानी ज्ञान करहिँ ॥
केते पीर केते पैगंबर । केते पढहिँ कुराना ॥
केते काजी केते मुल्ला । केते सेख सयाना ॥
केते पारिख अंत न पावहिँ । वार पार कुछ नाहीँ ॥
दादू कीमति कोइ न जानइ । केते आवहिँ जाहीँ ॥ ३३ ॥

टेक । यहीँ बूझ रही पीव जैसा है । तैसा कौन कहइ ॥
अगम अगाध अपार अगोचर । सुधि बुधि कौन लहइ ॥
वार पार कोइ अंत न पावइ । आदि अंत मधि नाहीँ रे ॥
खरे सयाने भये दिवाने । कइसा कहाँ रहाइ रे ॥
ब्रह्मा बिष्णु महेसर बूझे । केता कोई बतावइ रे ॥
सेख मसाइक पीर पैगंबर । हइ कोइ अगहि गहावइ रे ॥
अंबर धरती सूर ससि बूझे । बाघ बरन सध सोधे रे ॥
दादू चकित है हैराना । को है करम दहइ रे ॥ ३४ ॥

इति ॥ राग असावरी सम्पूर्ण ॥ १० ॥ २४९ ॥

:-0-:

राग सिंधड़ा ॥

टेक । हंस सरोवर तहाँ रमैं । सूभर हरि जल नीर ॥
प्रानी आप पखालिये । निर्मल सदा हो सरीर ॥
मुक्ता हल मन मानियाँ । चूगहि हंस सुजान ॥
मधि निरंतर झूलिये । मधुर विमल रस पान ॥
भँवर कवँल रस बासना । रातौ राम पिवंत ॥
अरस परस आनंद करइ । तहँ मन सदा जिवंत ॥
मीन मगन मांहे रहइ । मुदित सरोवर माहिँ ॥
सुख सागर क्रीडा करइ । पूरन परमिति नाहिँ ॥
निरभय तहँ भय कोइ नहीं । बिलसइ बारंबार ॥
दादू दरसन कीजिये । सनमुख सिरजनहार ॥ १ ॥

टेक । सुख सागर महँ झूलिबो । कसमल भरे अपार ॥
निरमल प्रानी होइबो । मिलिबोइ सिरजनहार ॥
तेहि संजम पावन सदा । पंक न लागइ प्रान ॥
कवँल बिगासइ तेहि तनइ । उपजेउ ब्रह्म गियान ॥
अगम निगम तहँ गमि करइ । तातैँ तत्त मिलान ॥
आसनि गुरु कइ आइबौ । मुकैँ महल समान ॥
प्रानी परिपूजा करइ । पूरे प्रेम बिलास ॥
सहजइ सुंदर सेइये । लागी लइ कबिलास ॥
रइनि दिवस दीसइ नहीं । सहजइ पुंज प्रकास ॥
दादू दरसन दीजिये । योहिँ रस राता दास ॥ २ ॥

टेक । अविनासी सँगि आतमाँ । रमइ रइन दिन राम ॥
एक निरंतर तेहि भजइ । हरि को प्रानी नाम ॥

सदा अखंडित पुरि बसइ। सो मन जानी लेत ॥
सकल निरंतर पूरि सब। आतम रातौ जेत ॥
निराधार निज बैसनौ। तेहि तति आसन पूरि ॥
गुर सिख आनँद ऊपजइ। सनमुख सदा हजुरि ॥
निहचल तेहि चालइ नहीं। प्रानी ते परमान ॥
साथी साथहिं ते रहहिं। जानहिं जान सुजान ॥
ते निर्गुन आगुन धरी। माहैं कौतिगहार ॥
देह अछत अलगौ रहइ। दादू सेवि अपार ॥३॥

टेक। पारब्रह्म भज प्रानियाँ। अबिगत एक अपार ॥
अविनासी गुरु सेविये। सहजइ प्रान अधार ॥
ते पुर प्रानी तेहनौ। अविचल सदा रहंत ॥
आदि पुरुष ते आपनो। पूरन परम अनंत ॥
अविगत आसन कीजिये। आपइ आप निधान ॥
निरालंब भजि तेहनौ। आनँद आतम राम ॥
निरगुन निहचल थिर रहइ। निराकार निज सोइ ॥
ते सति प्रानी सेविये। लै समाधि रति होई ॥
अमर आप रमता रमइ। घटि घटि सिरजनहार ॥
गुन अतीत भज प्रानिया। दादू एह बिचार ॥ ४ ॥

टेक। क्यौं भाजइ सेवक तेरा। अइसा सिर साहिब मेरा ॥
जाके धरती गगन अकासा। जा के चंद सूर कबिलासा ॥
जाके तेज पवन जल साजा। जाके पंच तत्त के बाजा ॥
जाके अठार भार बनमाला। गिरि परबत दीनदयाला ॥
जाके साइर अनँत तरंगा। जाके चौरासी लख संगा ॥
जाके अइसे लोक अनंता। रचि राखे बिधि बहु भंता ॥
जाके अइसा खेल पसारा। सब देखइ कौतिगहारा ॥
जाके काल मीच डर नाहीं। सो बरति रहा सब माहीं ॥

मनभावइ खल सो खेला । अइसा है आप अकेला ॥
जा के ब्रह्म न ईस सुर संगा । सब मुनि जन लागे संगा ॥
जाके साध सिद्ध सब माहीँ । परपूरन परमित नाहीँ ॥
सोई मानइ घडइ सँवारइ । जुग केते कबहूँ न हारइ ॥
अइसा हरि साहिब पूरा । सब जीवन आतम पूरा ॥
सो सबहिन की सुधि जानइ । जो जइसा तइसी बानइ ॥
अवँगी राम सयाना । हरि करइ सो होइ निदाना ॥
जे हरि जन सेवक भाजइ । तउ अइसा साहिब लाजइ ॥
अब मरन माँडि हरि आगइ । तउ दादू बान न लागइ ॥ ५ ॥

टेक । हरि भजता किमि भाजिये । भाजे भल नाहीँ ॥
भाजे भल क्योँ पाइये । पछितावइ काहीँ ॥
सूरो सो सहजइ भिडइ । सार उर झेलइ ॥
रन रोकइ भाजइ नहीँ । ते मान न मेलइ ॥
सती सत साँचा गहइ । मरन न डराइ ॥
प्रान तजइ जग देखता । पीयडो उर लाइ ॥
प्रान पतगा योँ तजइ । ओ अंग न मोडइ ॥
जोबन जालइ जोति सोँ । नइना भल जोडइ ॥
सेवक सो स्वामी भजइ । तन मन तजि आसा ॥
दादू दरसन ते लहहिँ । सुख संगम पासा ॥ ६ ॥

टेक । सुन तूँ मना रे । मूरख मूढ बिचार ॥
आवइ लहरि बिहावनी । दवइ देह अपार ॥
करिबौ हइ तिमि कीजिये रे । सुमिरि सो आधार ॥
चरन बिहूनो चालिबौ रे । संभारि ले सार ॥
दादू ते हज लीजिये रे । साँचौ सिरजनहार ॥ ७ ॥

टेक । रे मन साथी माहरा । तूँ समझायो कै बारो रे ॥
रातो रंग कसुंभ कइ । तइ बिसारयो आधारो रे ॥

सुपना सुख के कारने। फिरि पीछइ दुख होई रे॥
दीपक दृष्टि पतंग ज्यौं। यों भ्रम जलइ जिनि कोई रे॥ ॥
जिभ्या स्वारथ आपनो। ज्यौं मीन मरइ तजि नीर रे॥
माँहँ जाल ने जानियों। ता तें उपनैं दुख सरीर रे॥
स्वादै ही संकटि पड़्यों। देखत ही नर अंधो रे॥
मूरख मूँठी छाडि दे। होइ रहउ निरबंधो रे॥ ॥
मानि सिखावनि माहरी। तूँ हरि भजि महारी रे॥
सुख सागर सोइ सेवियै। जन दादू राम सँभारी रे॥ ८॥

इति॥ राग सीधँड़ा संपूर्ण॥११॥ २९७॥

राग देवगंधार ।

टेक ॥सरनि तुम्हारी आइ परे ।

जहाँ तहाँ हम फिरिआये । राखि राखि हम दुखित परे ॥

कसि कसि काया तप ब्रत करि करि ।

भ्रमत भ्रमत हम भूलि परे ॥

कहुँ सीतल कहुँ तपति दहे तन । कहुँ हम करवत सीस धरे ॥

कहुँ बन तीरथ फिरि फिरि थाके । कहुँ गिरि परवत जाइ चढे ॥

कहुँ सिखर चढि परे धरनि परि । कहुँ हनि आपा प्रान हरे ॥

अंध भये हम निकट न सूझइ । ताते तुम्ह तजि जाइ जरे ॥

हा हा हरि अब दीन लीन करि । दादू बहु अपराध भरे ॥१॥

टेक । बौरी तूँ बार बार बौरानी ।

सखी सोहागिनि पावइ अइसइ ॥ कइसे भरमि भुलानी ॥

चरनौं चेरी चित नहि राखउँ । पातिब्रत नाहिन जानउँ ॥

सुंदर सेज संग नहि जानइ । पीय सों मन नाहिं मानउँ ॥

तन मन सबइ सरीर न सौंपेउ । सीस नवाइ न ठाढी ॥

एकरस प्रीति रही नहिं कबहूँ । प्रेम उमंगि न बाढी ॥

प्रीतम अपनौ परम सनेही । नैन निरखि न अघानी ॥

निसबासर न आनि उर अंतर । परम पुजि नहि जानी ॥

पतिब्रत आगइ जिनि जिनि पाल्यौ । सुंदरि तिन सब छाजइ ॥

दादू पिव बिन और न जानइ । ताहि सोहाग बिराजइ ॥ २ ॥

टेक । मन मूरखा तैं यौंही जनम गवाँयो ।

साईं केरी सेव न कीन्ही । यहि कलि काहे को आयो ॥

जिनि बातनि तेरो छुटको नाहीं । सोई मन तेरे भायो ॥
कामी ह्वै बिखया सँग लागेउ । रोम रोम लपटायो ॥
कुछ एक चेति बिचारी देखौ । कहा पाप जिय लायो ॥
दादू दास भजन करि लीजइ । सुपनइ जग डहकायो ॥३॥

इति राग देवगंधार संपूर्ण ॥ १२ ॥

—— :0: ——

राग कान्हरा ।

टेक। वाल्हा हूँ तान्ही तूँ मान्ही नाथ। तुम्ह सौं पहिली प्रीतडी।
पूरिब लौं साथ ॥
वाल्हा मै तुमान्हौं ओलखियो रे। राखसि तूँ नैं रिदा मँझारि
हौं प्राम्यूँ पीव आपनो रे। त्रिभुवनदाता देव मुरारि ॥
वाल्हा मन माहैं मन माहैं राखसि। आतम एक निरंजन देव।
चित्त माहैं चित सदा निरंतर। पेनी परइ तुम्हारी सेव ॥
वाल्हा भाव भगति हरि भजन तुम्हारो।
प्रेमै पुरिस कँवल विकास ॥
अभिअंतरि आँनंद अविनासी। दादू निहिचै पूरीआस ॥ १ ॥

टेक। वारहिंवार कहूँ रे गहिलां। राम नाम काइँ बिसारो रे ॥
जनम अमोलिक प्राँनिया। यहौ रतन काँईं हारो रे ॥
विखिवाहुं नैं तिहाँ धायो। कीधौं नहिं मारो वारौ रे ॥
माया धन जोई नैं भूलौ। खरथई येनौ हारो रे ॥
गरभवास देहदमैंतौ प्राँनी। आस्रम तेह सँभारो रे ॥
दादू रे जन राम भनी जै। नहीं तौ जथा बघहारो रे ॥ २ ॥

राग परज ।

टेक। नूर रहा भरपूर अमी रस पीजिये।
रस माहैं रस होइ। लाहा लीजिये ॥
प्रगट तेज अनंत पार नहिं पाइये।
झिलिमिलिं झिलिमिलि होइ।
तहाँ मन लाइये ॥
सहजइ सदा प्रकास जोति जल पूरिया।

तहाँ रहइ निज दास सेवक सुखिया॥
सुख सागर वार न पार हमारा वास है।
हंस रहइ ता माहिं दादू दास है॥ १५॥

राग भाँणमली।

टेक। माह्रौं वालहा रे ताह्रै सरनि रहेस। बीनतड़ी वालहा नइँ कहताँ॥
अनंत सुख लहेस॥
स्वामी तनों हौं संग न मेल्हौं बीनतड़ी कहेस।
हौं अबला तूँ बलवंत राजा। ताह्रा बनाँ बहेस॥
संगि रहौं ता सब सुख पायूँ। अंतर थैं दहेस॥
दादू ऊपरि दया करी नइँ। आवै प्रानी वेस॥ १॥

टेक। चरन दिखानि तौ प्रमाण। स्वामी म्हारो नैणें नृखौं॥
माँगौं यह जमाण॥
जोऊँ तुझ नइँ आस्या मुझनइँ। लागौ येहज ध्यान॥
वाल्हौ माह्रौ मेलौ रे सहियं। आवै केवल ज्ञान॥
जेणी पेरें हौ देखौं तुझनइँ। मुझनइँ आलौ जान।
पीवतनौ हौं परि नहीं जानौं। दादू रे अजान॥ २॥

टेक। ते हरि मेलौ म्हारो नाथ॥
ते कारनि आकली व्याकली रे। ऊभी करौं बिलाप॥
स्वामी माह्रौ नैणे नृखौ। तेहि तनी मूनें तात॥
एक बार घरि आवै रे वाल्हा। नवि मेल्हौं कर हाथ॥
ए बीनती साभलि स्वामी। दादू ताह्रौ दास॥ ३॥

टेक। ते किम पामिये रे। दुलभ जे आधार॥
ते बिन तारन को नहीं रे। किम ऊतरिये पार॥
केही परि कीजे आपनों रे। तत बते छै सार॥

मन मनोरथ पूरै माहौं । तन चौ ताप निवारि ॥
संभाऱ्यौ आवै रे वालहा । एजा वह आवार ॥
विरहणी बिलाप करै । तिम दादू मन बिचार ॥ ४ ॥

इति राग भौंणमली संपूर्णम् ॥ १२ । २६१ ॥

———:-o:———

राग सारंग ।

टेक । हो ऐसा ज्ञान ध्यान गुर बिन क्यूँ पावइ ।

बार पार पार बार । दुर तिरि आवइ हो ॥

भवन गवन गवन भवन । मन ही मन लावै ॥

खन छवन छवन खन । सतगुर समझावइ हो ॥

खीर नीर नीर खीर । प्रेम भगति भावइ ॥

प्रान कवल बिगसि बिगसि । गोविँद गुन गावइ हो ॥

जोति जुगुति बाट घाट । लेइ समाधि धावइ ॥

परम नूर परम तेज । दादू बिख लावइ हो ॥ १ ॥

टेक । तौ निबहइ जन सेवक तेरा । अइसइ दया करि साहिब मेरा ॥

ज्योँ हम तोरहिँ त्योँ तूँ जोरइ ।

हम तोरहिँ पै तूं नाहेँ तोरइ ॥

हम बिसरहिँ पै तूँ नहिँ बिसरइ ।

हम बिगरहिँ पै तूँ नहिँ बिगरइ ॥

हम भूलहिँ तूँ आनि मिलावइ । हम बिछुरहिँ तूँ अंग लगावइ

तुम्ह भावइ सो हम पै नाहीँ । दादू दरसन देहु गोसाईँ ॥२॥

टेक । माया संसार सब की झूठी । मात पिता सब ऊभे भाई ॥

तिन्हहीँ देखता छूटी ॥

जब लग जीव काया मइँ थारे । खिन बैठी खिन ऊठी ॥

हंस जो था सो खेलि गया रे । तब थइँ संगति छूटी ॥

ये दिन पूगे आउ घटानी । तब निश्चित है सूनी ॥

दादू दास कहै अइसी काया । जइसी गगरिया फूटी ॥ ३ ॥

टेक । अइसइ गृह मेँ क्यों न रहइ । मनसा बाचा राम कहइ ॥

संपति बिपति नहीँ मैँ मेरा । हरखि सोक दोउ नाहीँ ॥

राग दोख रहित दुख सुख थाँ। बैठी हरि पद माहिँ॥
तन धन माया मोह न बाँधइ। बैरी मीत न कोई॥
आपा परसइ रहइ निरंतर। निज जन सेवक सोई॥
सरवर कवँल रहइ जल जइसै। दधि मथि घृत करि लीन्हा॥
अइसइ बन में रहे बटाऊ। काहू हित नहिं कीन्हा॥
भाव भक्ति रहै रस माता। प्रेम मगन गुन गावइ॥
जीवत मुक्ति होइ जन दादू। अमर अभय पद पावइ॥ ४॥

टेक। चल रे मन तहाँ जाइये॥ चरन बिन चलिबो।
श्रवन बिन सुनिबो। बिन कर बेन बजाइये॥
तन नाहीँ जहाँ मन नाहीँ। जहाँ प्रान नहीँ तहाँ जाइये॥
सबद नहीँ जहाँ जीव नहीँ। तहाँ बिन रसना मुख गाइये॥
पवन पावक नहीँ धरनि अंबर नहीँ। उभै नहीँ तहाँ लाइये॥
चंद नहीँ जहाँ सूर नहीँ। तहाँ परम जोति सुख पाइये॥
तेज पुंज सो सुख का सागर। झिलि मिलि समुद नहाइये॥
तहाँ चलि दादू अगम अगोचर। ता महँ सहजि समाइये॥५॥

इति सारंग संपूर्ण॥ १३॥ २१६॥

—:0:—

राग टोडी ।

टेक । सो तन सहजइ सुख मन कहना ।
साच पकडि मन जुगि जुगि रहना ॥
प्रेम प्रीति करि नीका राखइ ।
बारंबार सहज नर भाखइ ॥
सुख हिरदइ सो सहजि सँभारइ ।
तेहि तित रहना कबहि न बिसारइ ॥
अंतरि सोई नीका जानइ ।
निमिष न बिसरइ ब्रह्म बखानइ ॥
सोई सुजान सुधारस पीवइ ।
दादू देखु जुगे जुग जीवइ ॥ १ ॥

टेक । नाउँ रे नाउँ रे । सकल सिरोमनि नाउँ रे ।
मैं बलिहारी जाउँ रे ॥
दूत तारइ पार उतारइ । नरक बिचारइ नाउँ रे ॥
तारनहारा भवजल पारा । निरमल सारा नाउँ रे ॥
नूर देखावइ तेज मिलावइ । जोति जगावइ नाउँ रे ॥
सब सुख दाता अम्रित राता । दादू माता नाउँ रे ॥ २ ॥

टेक । राइ रे राइ रे । सकल भुवनपति राइ रे ॥
अम्रित देहु अघाइ रे राइ ॥
परगट राता परगट माता । परगट नूर दिखाइ रे राइ ॥
अस्थिर ज्ञाना अस्थिर ध्याना । अस्थिर देत मिलाइ रे राइ ॥
अविचल मेला अविचल खेला । अविचल जोति समाइ रे राइ॥
निहचल बैना निहचल नैना । दादू बलि बलि जाइ रे राइ ॥३॥

टेक। हरि रस माते मगन रहइ।

निरमल भगति प्रेम रस पीवइ। आन न दूजा भाव धरइ ॥
सहजइ सदा राम रस राते। मुक्ति बिकुंठइ कहा करइ ॥
गाइ गाइ रस लीन भये हैं। कछू न माँगे संत जना ॥
और अनेक देहु धन आगइ। आन न भावइ राम बिना ॥
इक टक ध्यान रहइ लउ लागे। छाकि परे हरि रस पीवइ ॥
दादू मगन रहइ रस माते। अइसइ हरि के जन जीवइ ॥४॥

टेक। ते मइँ कीधला रामजी। जे तइँ वार्‍या ते ॥

मारग मेलि अमारग अनसरि। अकरम करम हरे ॥
साधू को सँग छाडी नइँ। असंगति अनसारियों ॥
सुकृत मूकि अविद्या साधी। बिखया बिस्तरियों ॥
आन कह्यो आन साभलियो। नैणो आन दीठों ॥
अमृत कड़वो बिख इम लागो। खाता अति मीठो ॥
राम रिदे थों विसारिमइँ। माया मन दीधों ॥
पाँचइ प्रान गुरमुखि बरजा। ते दादू कीधों ॥५॥

टेक। कहो क्यों जन जीवइ साँइया। दे चरन कवँल आधार हो ॥

डूबत हइ भौसागरा। कारी करउ करतार हो ॥
मीन मरइ बिन पानिया। तुम्ह बिन येह बिचार हो ॥
जल बिन कैसे जीवहीं। इब तो किती इक बार हो ॥
ज्यों परइ पतंगा जोति में। देखि देखि निज सार हो ॥
प्यासा बूँद न पावहीं। तब बनि बनि करहिं पुकार हो ॥
निस दिन पीर पुकारहीं। तन की ताप निवारि हो ॥
दादू बिपति सुनावहीं। करि लोचन सनमुख चारि हो ॥६॥

टेक। तूँ साचा साहिब मेरा। करम करीम कृपाल निहारउ।
मैं जन बंदा तेरा ॥

तुम्ह दीवान सबहि की जानहु । दीनानाथ दयाला ॥
दिखाइ दीदार मौज बंद को । काइम करउ निहाला ॥
मालिक सबइ मुलिक के साईं । समरथ सिरजनहारा ॥
खैर खुदाइ खलक मैं खेलत । दे दीदार तुम्हारा ॥
मैं सिकिस्ता दरगा तेरी । हरि हाजुरि तूँ कहिये ॥
दादू द्वार दीन पुकारइ । काहे न दरसन लहिये ॥ ७ ॥

टेक । कछु चेति रे कहि क्या आया रे ।
इन महँ बइठा फूलि करि । तैं देखी माया ।
तूँ जानि जानइ तन धन मेरा । मूरख देखि भुलाया ॥
आज कालिह चलि जावइ देही । अइसी सुंदर काया ॥
राम नाम निज लीजिये । मैं कहि समझाया ॥
दादू हरि की सेवा कीजइ । सुंदरि साज मिलाया ॥ ८ ॥

टेक । नेहि दरइ माटी मैं मिलना । मोडि मोडि देह काहे को चलना॥
काहे को अपना मन डोलावइ । यह तन अपना नीका धरना ॥
कोटि बरस तूं काहे न जीवइ । विचारि देखि आगे है मरना ॥
काहे न अपनी बात सँवारइ । संजम रहना सुमिरन करना ॥
गहिला दादू गरब न कीजइ । यहु संसार पाँच दिन भरना ॥ ६॥

टेक । जाइ रे तन जाइ रे । जनम सुफल करि लेहु राम रमि ।
सुमिरि सुमिरि गुन गाइ रे ॥
नर नारायन सकल सिरोमनि । जनम अमोलिक आइ रे ॥
सो तन जाइ जगत नहिँ जानइ । सकइ न ठाहर लाइ रे ॥
जुरा काल दिन जाइ गरासइ । तासौं कछु न बसाइ रे ॥
छिन छिन छीजत जाइ मुगध नर । अंत काल दिन आइ रे ॥
प्रेम भगति साध की संगति । नाउँ निरंतर गाइ रे ॥
जो सिर भाग तो साज सुफल करि । दादू बिलम न लाइ रे॥१०

टेक। काहे रे बकि मूल गवाँवइ । राम के नाम भलइ सचुपावइ ॥
बाद बिबाद न कीजइ सोई । बाद बिबाद न हरि रस होई ॥
मैं तैं मेरी मानइ नाहीं । मैं तैं मेटि मिलइ हरि माहीं ॥
हारि जीति सों हरि रस जाई । समझि देखि मेरे मन भाई ॥
मूल न छाडी दादू बौरे । जिनि भूलइ तूं बकि बे औरें ॥ ११ ॥

टेक। हुसियार हाकिम न्याव है । साईं के दीवान ॥
कुल का हसेब होइगा । समझि मुसलमान ॥
नीयति नेकी सालिहाँ । रास्ता ईमान ॥
इखलास अंदर आपनै । रखना सुबहान ॥
हुकम हाजरि होइ बाबा । मुसल्म मिहरबान ॥
अकलि सेती आपमाँ । सोधि लेहु सुजान ॥
हक सौं हजूरी होना । देखना करि ज्ञान ॥
दोस्त दाना दीन का । मनना फुरमान ॥
गुस्सा हैवानी दूरि करि । छाडि देह अभिमान ॥
दूई दरोगा नाहिं खसिया । दादू लेहु पिछान ॥१२॥

टेक। निरपख रहना राम राम कहना । काम क्रोध में देह न धरना ॥
जे नैं मारग संसार जाइला । तेनैं प्राना आप बहाइला ॥
जे जे करनी जगत करीला । सो करनी संत दूरि धरीला ॥
जेनइ पंथइ लोक राता । तेनइ पंथइ साध न जाता ॥
दादू राम अइसइ कहिये । राम रमत आपहि मिलि रहिये ॥१३॥

टेक। हम पाया हम पाया रे भाई । भेख बनाइ अइसी मनि आई ॥
भीतर का यह भेद न जानइ । कहइ सोहागिन क्यों मन मानइ ॥
अंतरि पिय सों परचा नाहीं । भई सोहागनि लोगन माहीं ॥
साईं सपनइ कबहूं न आयइ । कहिबा अइसइ महिल बुलावइ ॥
इहि बातहि माहिं अचरज आवइ । पटमा किये बिन पिय क्यों पावइ ॥
दादू सोहागनि अइसइ कोई । आपा मेटि रामरत होई ॥ १४ ॥

टेक। अइसइ बाबा राम रमीजइ। आतम सो अंतरि नहिँ कीजइ।
जइसइ आतम आपा लेखइ। जीव जंत अइसइ करि लेखइ।
एक राम अइसइ करि जानइ। आपा पर अंतर नहिँ आनइ॥
सब घटि आतम एक बिचारइ। राम सनेही प्रान हमारइ॥
दादू साची राम सगाई। अइसा भाव हमारइ भाई॥ १५॥

टेक। माधइयौ माधइयौ मीठौ री माई।
मोहनो मोहनो भँटियो भाई॥
कान्हइयौ कान्हइयौ करता जाइ। केसवो केसवो केसवो धाइ॥
भूधरौ भूधरौ भूधरौ भाइ। रामइयौ रामइयौ रह्यौ समाइ॥
नरहरि नरहरि नरहरि राइ। गोविंदौ गोविंदौ दादू गाइ॥१६॥

टेक। एकहि एकइ भया अनंद। एकहि एकइ भागे दंद॥
एकहि एकइ एक समान। एकहि एकइ पद निरबान॥
एकहि एकइ त्रिभुवनसार। एकहि एकइ अगम अपार॥
एकहि एकइ निरभय होइं। एकहि एकइ काल न कोइ॥
एकहि एकइ घट परकास। एकहि एक निरंजन बास॥
एकहि एकइ आपहि आप। एकहि एकइ माइ न बाप॥
एकहि एकइ सहज सरूप। एकहि एकइ भए अनूप॥
एकहि एकइ अनत न जाइ। एकहि एकइ रहे समाइ॥
एकहि एकइ भए लउलीन। एकहि एकइ दादू दीन॥ १७॥

टेक। आदि हइ आदि अनादि मेरा। संसार सागर भक्ति तेरा॥
आदि हइ अंति हइ। आदि हइ बिरद तेरा॥
काल हइ झाल हइ झाल हइ काल हइ।
राखिले राखिले प्रान घेरा॥
जीव का जनम का जनम का जीव का।
आपहि आप ले भानि झेरा॥

मरम का करम का करम का मरम का
आइबा जाइबा मेटि फेरा ॥
तारि ले पारि ले पारि ले तारि ले।
जीव सोँ सीव हइ निकटि नेरा ॥
आतमा राम हइ राम हइ आतमा।
जोति हइ जुगति सोँ करउ मेला॥
तेज हइ सेज हइ सेज हइ तेज हइ।
एक रस दादू खेल खेला ॥ १८ ॥

टेक। सुंदर राम राया।
परम ज्ञान परम ध्यान। परम पिरान आया ॥
अकल सकल अति अनूप। छाया नहीँ माया ॥
निराकार निराधार। वार पार न पाया ॥
गँभीर धीर निधि सरीर। निरगुन निराकारा ॥
अखिल अमर परम पुरख। निरमल निज सारा ॥
परम नूर परम तेज। परम जोति प्रकासा ॥
परम पुंज परापरं। दादू निज दासा ॥ १९ ॥

टेक। अखिल भाव अखिल भगति। अखिल नाम देवा ॥
अखिल प्रेम अखिल प्रीति। अखिल सुरति सेवा ॥
अखिल अंग अखिल संग। अखिल रंग रामा ॥
अखिल रत अखिल मत। अखिल निज नामा ॥
अखिल ज्ञान अखिल ध्यान। अखिल आनँद कीजइ ॥
अखिलालइ अखिलामइ। अखिलरस पीजइ ॥
अखिल मगन अखिल मुदित। अखिल गलित साईँ ॥
अखिल दरस अखिल परस। दादू तुम्ह माहीँ ॥ २० ॥

इति टोडी ॥

——:o:——

राग हुसेनी बंगालै ॥

टेक। दई दाना दिलदार मेरे कान्हा ॥

तूँ ही मेरे जान जिगर। यार मेरे खाना ॥

तूँ ही मेरे मादर पिदर। आलम बेगाना ॥

साहिब सिरताज मेरे। तूँ ही सुलताना ॥

दोस्त दिल तूँ ही मेरे। किस का खिलखाना ॥

नूरचसम जिंद मेरे। तूँ ही रहिमाना ॥

एकइ अस नाउँ मेरे। तूँ ही हम जाना ॥

जानिब अजीज मेरे। खूब खज़ाना ॥

नेक नज़र मिहर मीराँ। बंदा मैं तेरा ॥

दादू दरबार तेरे। खूब साहिब मेरा ॥ १ ॥

टेक। तूँ घरि आव सुलच्छन पीव। हक तिल दिखलावहु मेरा। क्या तरसावइ जीव ॥

जिस दिन तेरा पंथ निहारउँ। तूँ घर मेरे आव ॥

हिरदा भीतरि हेत सौं रे वाल्हा। तेरा मुख दिखलाव ॥

वारी फेरी बलि गई। सोभित सोई कपोल ॥

दादू ऊपर दया करि। कइ सुनाइ सुहावे बोल ॥ २ ॥

इति ॥ राग हुसेनी बंगाली संपूर्ण ॥

——:o:——

राग नटनारायण ॥

ताको काहे न प्रान सँभारइ । कोटि अपराध कलप के लागे ।
माहिँ महूरत टालइ ॥
अनेक जनम के बंधन बाढ़इ । बिन पावक फँध जालइ ॥
अइसो हइ मन नाउँ हरी को । कबहूँ दुःख न सालइ ॥
चिंतामनी जुगति सोँ राखइ । ज्योँ जननी सुत पालइ ॥
दादू देखु दया करि अइसी । जन को जाल निरालइ ॥ १ ॥

टेक । गोविँद कबहुँ मिलइ पिव मेरा । चरन कवँल क्योँहीं करि देखउँ
राखहु नैनहुँ नेरा ॥
निरखन का मोहिँ चाव घनेरा । कब मुख देखउँ तेरा ॥
प्रान मिलन को भये उदासी । मिल तूँ मीत सबेरा ॥
ब्याकुल ताथइँ भइ तन देही । सिर परि जम को हेरा ॥
दादू रे जन राम मिलन को । तपइ तन बहुतेरा ॥ २ ॥

टेक । कब देखउँ नैनहुँ रेख रती । प्रान मिलन को भई मती ॥
हरि सोँ क्योँ खेलउँ हरि गती । कब मिलिहइँ मोहिँ प्रानपती ॥
बलि कीती देखूँगी रे । मुझ माहइँ अति बात अनेरी ॥
सुन साहिब इक बिनती मेरी । जनम जनम हउँ दासी तेरी ॥
कहु दादू सो सुनि सो साईँ । हौँ अबला बल मुझ मइँ नाहीँ ॥
करम करी घर मेरे आइ । तउ सोभा पिव तेरे ताईं ॥ ३ ॥

टेक । नीके मोहन सोँ प्रीति लाई । तन मन प्रान देत बजाई ।
रंग रस के बनाई ॥
येही जियरे वेही पियरे । छोरयौ न जाई माई ॥
बान भेद के देत लगाई । देखत ही मुरझाई ॥
निरमल नेह पिया सोँ लागो । रती राखी काई ॥

दादू रे तिल तन मइ जावइ। संग न छाडउँ माई ॥ ४ ॥

टेक। तुम्ह बिन अइसइ कौन करइ। गरीब निवाज गोसाईं मेरो। माथइ मुकुट धरइ ॥

नीच ऊँच ले करइ गोसाईं। टार्‌यौ हूँ न टरइ ॥
हस्तकवँल की छाया राखइ। काहू थइँ न डरइ ॥
जाकी जोति जगत को लागइ। ता परि तूँ ही ढरइ ॥
अमर आप लेइ करइ गोसाईं। मार्‌यौ हूँ न मरइ ॥
नाम देव अरु कबीर जुलाहौ। जन रै दास तरइ ॥
दादू बेगि बार नहिं लागइ। हरि सों सबइ सरइ ॥ ५ ॥

नमो नमो हरि नमो नमो। ताहि गोसाईं नमो नमो ॥
अकल निरंजन नमो नमो। सकल बियापी जेंहि जग कीन्हा ॥ नारायन निज नमो नमो ॥
जन सिरजे जल सीस चरन कर। अबिगत जीव दियौ ॥
स्रवन सँवारि नइन रसना मुख। अइसा चित्र कियौ ॥
आप उपाइ किये जग जीवन। सुर नर संकर साजे ॥
पीर पैगंवर सिध अरु साधक। अपनइ ताहि निवाजे ॥
धरती अंबर सूर चंद जिनि। पानी पवन किये ॥
भानन घडन पलक मइँ केते। सकल सँवारि लिये ॥
आप अखंडित खंडित नाहीं। सब समि पूरि रहे ॥
दादू दीन ताहि नइ बंदित। अगम अगाधि कहे ॥

टेक। हम थइँ दूरी रही गति तेरी। तुम्ह ही तइसे तुम्ह ही जानउ। कहा बपुरी मति तेरी ॥

मन थइँ अगम दृष्टि अगोचर। मनसा का गमि नाहीं ॥
सुरति समाइ बुद्धि बल थाके। बचन न पहुँचइ ताही ॥
जोग न ध्यान ज्ञान गमि नाहीं। समझि समझि सब हारे ॥
उनमन रहत प्रान घट सोधा। पार न गहत तुम्हारे ॥

खोजि परे गति जाइ न जानी। अगह गहन कइसइ आवइ ॥
दादू अबिगत देव दया करि। भाग बड़े सौँ पावइ ॥ ७ ॥

राग सोरठ।

टेक। कोली साल न छाडइ रे। सब धावर काढइ रे।
प्रेम प्रान लगाई धागइ। तत्त तेल निज दीया ॥
एक मना इस आरँभ लागा। ज्ञान राछ भरि लीया ॥
नाउँ नली भरि बुन कर लागा। अंतर गति रँग राता।
तानइँ बानइँ जीव जुलाहा। परम तत्त सौँ माता ॥
सकल सिरोमनि तुनइ बिचारा। सान्हा सूत न तोडइ ॥
सदा सुचेत रहइ लउ लागा। ज्योँ टूटइ त्योँ जोडइ ॥
अइसइ तनि बुनि गहर गजीना। साँईँ के मन भावइ ॥
दादू कोली करता के सँगि। बहुरि न येहि जुग आवइ ॥ १ ॥

टेक। बिरहिनि बपु न सँभारइ। निस दिन तलपइ राम के कारनि॥
अंतरि एक बिचारइ। आतुर भई मिलन के कारनि ॥
कहि कहि राम पुकारइ। सास उसास निमिख नहीँ बिसरइ॥
जित नित पंथ निहारइ ॥
फिरइ उदास चहूँ दिसि चितवत। नइन नीर भरि आवइ ॥
राम बियोग बिरह की जारी। और न कोई भावइ ॥
व्याकुल भई सरीर न समझइ। बिषमबान हरि मारे ॥
दादू दरसन बिन क्योँ जीवइ। राम सनेही हमारे ॥ २ ॥

टेक। मन रे राम रटत क्योँ रहिये। यह तत बार बार क्योँ कहिये ॥
जब लग जिभ्या बानी। तौ लौँ जपि ले सारंगप्रानी ॥
जब पवना चलि जावइ। तब प्रानी पछितावइ ॥
जब लग स्रवन सुनीजइ। तौ लौँ साधसबद सुनि लीजइ ॥
स्रवनहु सुरति जब जाई। ये तब का सुनिहइ भाई ॥

जब लग नइनहुँ पेखइ। तौ लौं चरन कवँल किन देखइ॥
जब नइनहुँ कछु न सूझइ। ये तब मूरख क्या बूझइ॥
जब लग तन मन नीका। तब लग जी पल जीवनि जीका॥
जब दादू जिय आवइ। तब हरि के मन भावइ॥ ३॥

टेक। मन रे तेरा कौन गवाँरा। जप जीवन प्रान अधारा॥
मात पिता कुल जाती। धन जोबन सजन सँघाती॥
रे ग्रिह दारा सुत भाई। हरि बिन सब झूठा है जाई॥
रे तूँ अंत अकेला जावइ। काहू के सँग न आवइ॥
रे तूँ ना करि मेरी मेरा। हरि राम बिना को तेरा॥
रे तूँ चेत न देखइ अंधा। यह माया मोह सब धंधा॥
रे काल मीच सिर जागइ। हरि सुमिरन काहे न लागइ॥
यह अवसर बहुरि न आवइ। फिरि मनुखा जनम न पावइ॥
अब दादू ढील न कीजइ। हरि राम भजन करि लीजइ॥ ४।

टेक। मन रे देखत जनम गयो। तातेँ काज न कोई भयो॥
मन इंद्री ज्ञान बिचारा। तातेँ जनम जुवा ज्यों हारा॥
मन झूठ साच करि जानइ। हरि साध कहइ नहिँ मानइ॥
मन रे बादि गहइ चतुराई। तातेँ मन मूरख बात बनाई॥
मन आप आप को थापइ। करता होइ बइठा आपइ॥
मन स्वादी बहुत बनावइ। मन जाना बिखइ बतावइ॥
मन मानइ सोई दीजइ। हमहीं राम दुखी क्योँ कीजइ॥
मन सबही छाडि बिकारा। प्रानी होइ गुनन तेँ न्यारा॥
निरगुन निज गहि रहिये। दादू साध कहइ सो कहिये॥ ५॥

टेक। मन रे अंतकाल दिन आया। यह सब भया पराया
स्रवनों सुनइ न नैनहुँ देखइ। रसना कह्यो न जाई॥
सीस चरन कर काँपन लागे। सो दिन पहुँचा आई।
काले धोले बरनहु पलटा। तन मन का बल भागा॥

जोबन गया जरा चलि आई । तब पछितावन लागा ॥
आइ घटइ घट छीजइ काया । यह तन भया पुराना ॥
पाँचउ थाके कहा न मानहिं । ता का मरम न जाना ॥
हंस बटाऊ प्रान पयाना । समझि देख मन माहीं ॥
दिन दिन काल गरासइ जियरा । दादू चेतइ नाहीं ॥ ६ ॥

टेक । मन रे तूँ देखइ सो नाहीं । हइ सो अगम अगोचर माहीं ॥
निस अँधियारी कछू न सूझइ । संसइ सपन दिखावा ॥
अइसइ अंध जगत नहिँ जानइ । जीव जेवडी खावा ॥
मृग जल देखि तहाँ मन धावइ । दिन दिन झूठी आसा ॥
जहँ जहँ जाइ तहाँ जल नाहीं । निहचइ मरइ पियासा ॥
भरम बिलास बहुत बिधि कीन्हा । ज्योँ सपने सुख पावइ ॥
जागत झूठ तहाँ कछु नाहीं । फिरि पाछइ पछितावइ ॥
जब लग सूता तब लग देखइ । जागत भरम बिलाना ॥
दादू अंत इहाँ कुछ नाहीं । हइ सोँ सोधि सयाना ॥ ७ ॥

टेक । भाइ रे बाजीगर नट खेला । अइसइ आपइ रहइ अकेला ॥
यह बाजी खेल पसारा । सब मोहे कौतिगहारा
यह बाजी खेल दिखावा । बाजीगर किनहूँ न पावा ॥
यह बाजीगर जगत भुलाना । बाजीगर किनहूँ न जाना ॥
कुछ नाहीँ सो पेखा । बाजीगर किनहूँ न देखा ॥
कुछ अइसा चेटक कीन्हा । तन मन सब हरि लीन्हा ॥
बाजीगर भुरकी बाही । काहू पइ लखी न जाई ॥
बाजीगर किया प्रकासा । यह बाजी झूठ तमासा ॥
दादू पावा सोई । जो येहि बाजी लिपत न होई ॥ ८ ॥

टेक । भाइरे अइसा एक बिचारा । जो हरि गुरु कहइ हमारा ॥
जागत सूते सोवत सूते । जबलग राम न जाना ॥

जागत जागे सोवत जागे। जब राम नाम मनमाना ॥
देखत अंधे अंध भी अंधे। जबलग सत्त न सूझइ।
देखत देखइ अंध भी देखइ। जब राम सनेही बूझइ ॥
बोलत गूँगे गूँग भी गूँगे। जबलग तन नहिँ चीन्हा ॥
बोलत बोले गूँग भी बोले। जब राम नाम कहि दीन्हा ॥
जीवत मुये मुये भी मुये। जबलग नहिँ परकासा ॥
जीवत जीये मूये भी जीये। दादू राम निवासा ॥ ९ ॥

टेक। राम जी नाउँ बिना दुख भारा। तेरे साधन नहीँ बिचारा ॥
केई जोग ध्यान गहि रहिया। कुल के मारग बहिया ॥
केई सकल देव को ध्यावैँ। केई रिधि सिध चाहैँ पावैँ ॥
केई बेद पुरानी माते। केई माया के संग राते ॥
केई देश दिसंतर डोलैँ। केई ज्ञानी है बहु बोलैँ ॥
केई काया कसैँ अपारा। केई मरैँ खडग की धारा ॥
केई अनँत जीवनि की आसा। केई करैँ गुफा मेँ बासा ॥
आदि अंत जे जागे। सो तो राम नाम ल्यौ लागे ॥
अब दादू इहै बिचारा। हरि लागा प्रान हमारा ॥ १० ॥
साधौ हरि सौँ हेत हमारा। जिन्ह यह कीन्ह पसारा ॥
जा कारन ब्रत कीजै। तिल तिल यहु तन छीजै ॥
सहजैँ ही सो जाना। हरि जानत ही मन माना ॥
जा कारन तप जइये। धूपसात सिर सहिये ॥
सहजैँ ही सो आवा। हरि आवत ही सचुपावा ॥
जो कारन बहु फिरिये। करि तीरथ भ्रमि भ्रमि मरिये ॥
सहजैँ ही सो चीन्हा। हरि चीन्हे सब सुख लीन्हा ॥
प्रेम भगति जिन्ह जानी। सो काहे को भ्रमै प्रानी ॥
हरि सहजैँ ही भल मानैँ। तातैँ दादू और न जानैँ ॥ ११ ॥

टेक। राम जी जिनि भ्रमावे हम को। ताथैं करौं बीनती तुम्ह सौं ॥
चरन तुम्हारे सबही देखौं। तप तीरथ व्रत दाना ॥
गंग जमुन पास पाइनि के। तहाँ देहु असनाना ॥
सग तुम्हारे सबही लागे। जोग जाग जे कीजै ॥
साधन सकल एई सब मेरे। संग आपनो दीजै ॥
पूजा पाती देवी देवल। सब देखौं तुम्ह माहीं ॥
मोंको ओट आपनी दीजै। चरन कवँल की छाहीं ॥
ए अरदास दास की सुनिये। दूर करउ भ्रम मेरा ॥
दादू तुम्ह बिन और न जानै। राखहु चरनौं चेरा ॥ १२ ॥

टेक। सोई देव पूजों जे टाँकी नहीं घड़ियाँ। गरभवास नहिं औतरियाँ
बिन जल संजम सदा सोइ देवा। भाव भगति करउ हरि सेवा॥
पाती प्रान हरिदेव चढाऊँ। सहजि समाधि प्रेम ल्यौ लाऊँ ॥
येहि विधि सदा तहाँ होई। अलख निरंजन लखइ न कोई ॥
ए पूजा मेरे मन मानै। जेहि बिधि होइ सो दादू न जानै ॥१३॥

टेक। रामराइ मोंको अचरज आवै। तेरा पार न कोई पावै ॥
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद। नेत नेत जे गावैं ॥
सरन तुम्हारी रहैं निसि बासर। तिन को तूँ न लखावै ॥
सकर सेस सबै सुर मुनि जन। तिन को तूँ न जनावै ॥
तीनि लोक रटैं रसना भरि। तिन को तूँ न दिखावै ॥
दीन लीन राम रँग राते। तिन को तूँ सँग लावै ॥
अपने अँग की जुगति न जानैं सो मति तेरे भावै ॥
सेवा संजम कर जप पूजा। सबद न तिन को सुनावै ॥
मैं अछोप हीन मति मेरी। दादू को दिखलावै ॥ १४ ॥

इति ॥ २० ॥ ३११ ॥

———:o:———

रागगुंड ।

टेक । दरसन दे दरसन दे । हौं तो तेरी मुकति न माँगौं रे ॥
सिधि न माँगौं रिधि न माँगौं । तुम्हही माँगौं गोविंदा ॥
जोग न माँगौं भोग न माँगौं । तुम्हहीं माँगौ राम जी ॥
घर नहिं माँगौं बर नही माँगौं । तुम्हहीं माँगौं देव जी ॥
दादू तुम्ह बिन और न जानै । दरसन माँगै देहु जी ॥ १ ॥

टेक । तूँ आपे ही बिचारि । तुझ बिन क्यों रहौं ॥
मेरे और न दूजा कोई । दुख किस को कहौं ॥
मीत हमारा सोई । आदै जे पीया ॥
मुझै मिलावै कोई । वै जीवन जीया ॥
तेरे नैन दिखाई । जीवौं जिस आसिरे ॥
साधन जीवै क्यों नहीं । जिस पासिरे ॥
खंजर माहिं प्रान तुझ बिन जाइसी । जन दादू माँगै मान ।
कब घर आइसी ॥ २ ॥

टेक । हौं जोइ रही रे बाट । तूँ घरि आविनैं ॥
तान्हा दरसन थैं सुख होइ । ते तूँ ल्याविनैं ॥
चरन जोबानी खाँती । ते तूँ दिखाडिनइ ॥
तुझइ बिना जीव देइ । दुहेली कामिनीं ॥
नैंन निहारउँ बाट । ऊभी चावनी ॥
तूँ अंतर ते उन्हौ आव । देही जाननीं ॥
तूँ दया करि घरि आव । दासी गावनीं ॥
जन दादू राम सँभालि । बइन सुनावनीं ॥ ३ ।

टेक । पीव देखे बिन क्यों रहा । जिय तलपइ मेरा ॥
सब सुख आनँद पाइये । मुख देखउँ तेरा ॥

पिय बिन कइसा जीवना। मोहिं चैन न आवइ ॥
निरधन ज्यों धन पाइये। जब दरस दिखावइ ॥
तुझ बिन क्यों धीरज धरउँ। जौ लौं तोहि न पाऊँ ॥
सनमुख होइ सुख दीजिये। बलिहारी जाऊँ ॥
बिरह वियोग न सहि सकूँ। काइर घट काचा ॥
पावन परसन पाइये। सुनि साहिब साचा ॥
सुनियो मेरी बीनती। अब दरसन दीजइ ॥
दादू देखन पावई। तइसइ कुछ कीजइ ॥ ४ ॥

टेक। येहि बिधि बेध्यौ मोर मना। ज्यों लै भृंगी काटि तना ॥
चातक रटतइ रइनि बिहाई। पीर पडे पइ बानि न जाई ॥
मरइ मीन बिसरइ नहिं पानी। प्रान तें जीवन और न जानी॥
जलइ सरीर न मोडइ अंगा। जोति न छाड़इ पडइ पतंगा ॥
दादू अब थइ अइसइ होई। पीर पड़इ नहिं छाडउँ तोई ॥५॥

टेक। आवहु राम दया करि मेरे। बार बार बलिहारी तेरे ॥
बिरहिनि आतुर पंथ निहारइ। राम नाम कहि पीव पुकारइ ॥
पंथी बूझइ मारग जोवइ। नैन नीर जल भरि भरि रोवइ ॥
निस दिन तलफइ फिरइ उदास। आतमराम तुम्हारे पास ॥
बप बिसरे तन की सुधि नाहीं। दादू बिरहिनि मिरतक माहीं।६

टेक। निरंजन क्यों रहइ। मौनि गहइ बैराग।
केते जुग गये ॥
जागइ जगपति राइ। हँसी बोलइ नहीं ॥
परगट घूँघट माहिं। पट खोलइ नहीं ॥
सदकइ करउँ सँसार। सब जग वारनो ॥
छाड़उँ सब परिवार। तेरे कारनो ॥
वारउ पिंड परान। पाउँ सिर धरउँ ॥

ज्यौँ ज्यौँ भावइ राम। त्यौँ सेवा करउँ ॥
दीनानाथ दयाल। बिलंब न कीजिये ॥
दादू बलि बलि जाइ। सेज सुख दीजिये ॥ ७ ॥

टेक। निरंजन यौँ रहइ। काहू लिपत न होइ ॥
जल थल थावर जंगमा। गुन नहीँ लागइ कोइ ॥
धर अंबर लागइ नहीँ। नहिँ लागइ ससि हर सूर ॥
पानी पवन लागइ नहीँ। जहाँ तहाँ भरपूर ॥
निस बासर लागइ नहीँ। नहिँ लागइ सीतल घाम ॥
छुधा तृषा लागइ नहीँ। घटि घटि आतमराम ॥
माया मोह लागइ नहीँ। नहिँ लागइ काया जीव ॥
काल करम लागइ नहीँ। परगट मेरा पीव ॥
एकरस एकइ तूँ रहइ। एकरस एकइ तेज ॥
एकरस एकइ जोति हइ। दादू खेलइ सेज ॥ ८ ॥

टेक। जगजीवन प्रान अधार। बाचा पालना ॥
हौँ कहाँ पुकारउँ जाइ। मेरे लालना ॥
मेरे दरद् भाग अपार। सो दुख टालना ॥
सागर ये निसतारि। गहरा अति घना ॥
अंतर हइ सो टालि। कीजइ आपना ॥
मेरे तुम्ह बिन और न कोइ। इहइ बिचारना ॥
तातेँ करउँ पुकार। यह तन चालना ॥
दादू को दरसन देहु। जाइ दुख सालना ॥ ९ ॥

टेक। मेरे तुम्हही राखनहार दूजा कोउ नहीँ ॥
ये चंचल चहुँदिसि जाइ। काल तहीँ तहीँ ॥
मैँ केते किये उपाइ। निहचल ना रहइ ॥
जहाँ बरजौँ तहाँ जाइ। मदमातौ बहइ ॥
जहाँ आँनोँ तहाँ जाइ। तुम्ह तेँ ना डरइ ॥

तासों कहा बसाइ। भावइ त्यौं करइ ॥
सकल पुकारइ साध। मैं केता कहा ॥
गुर अंकुस मानइ नहीं। निरभइ होइ रहा ॥
तुम्ह बिन और न कोइ। इस मन को गहइ ॥
तूँ राखइ राखनहार। दादू तौ रहइ ॥ १० ॥

टेक। निरँजन काइर कँपइ प्रानियाँ। देखियहु दरिया ॥
वार पार सूझइ नहीं। मन मेरा डरिया ॥
अतिअथाह भवजाला। अउसंग नहीं आवइ ॥
देखि देखि डरपइ घना। प्रानी दुख पावइ ॥
बिख जल भरिया सागर। सब थके सयाना ॥
तुम्ह बिन कहु कइसइ तरौं। मैं मूढ़ अयाना ॥
आगइ ही डरपइ घना। मेरा का कहिये ॥
कर गहि काढहु केसवा। पार तौ लहिये ॥
एक भरोसा तोर हइ। जो तुम्ह होहु दयाला ॥
दादू कहु कइसइ तरइ। तूँ तार गोपाला ॥ ११ ॥

टेक। समरथ मेरा साइँयाँ। सकल अघ जारइ ॥
सुखदाता मेरे प्रान का। संकोच निवारइ ॥
तिरविधि ताप तन की हरइ। चौथे जन राखइ ॥
आप समागम सेवका। साध यों भाखइ ॥
आप करइ प्रतिपालना। दारुन दुख टारइ ॥
इच्छा जन की पूरवइ। सब कारज सारइ ॥
करम कोटि भय भंजनो। सुख मंडन सोई ॥
मन के मनोरथ पूरना। अइसा और नाहिँ कोई ॥
अइसा और न देखिहउँ। सब पूरन कामा ॥
दादू साध सँगी किये। उन्ह आतम रामा ॥ १२ ॥

टेक। तुम्ह बिन राम कौन कलि माँहैं। बिखिया तैं कोइ बारइ रे॥
सुनियर मोटा मनवैं भाया। येन्हाँ कौन मनोरथ मारइ रे॥
छिन एकइँ मन वौ मरकट म्हारौ। घर घर बार नचावइ रे॥
छिन एकइँ मन वौं चँचल माहरौ। छिन एकैं घरमाँ आवइ रे॥
छिन एकइ मन वौं मीन अम्हारौं। स चराचर मैं ध्याये रे॥
छिन एकइँ मन वौं उदमति मातउ। स्वादौं लागउ खाये रे॥
छिन एकइँ मन वौं जोति पतंगाँ। भ्रमि भ्रमि स्वादैं दाझइ रे॥
छिन एकइँ मन वौं लोभैं लागौं। माया परमइ बाझइ रे॥
छिन एकइँ मन वौं कुँजर म्हारो। बन बन माँहि भ्रमाँडइँ रे॥
छिन एकइ मनवौं काँमीं माह्यौ। बिखिया रँग रमाडइ रे॥
छिन एकइँ मनवौं मृग अम्हारौ। नादैं मौह्यउ जाये रे॥
छिन एकइँ मनवौं माया रातउ। छिन एकइ अम्ह नैं बाहइ रे॥
छिन एकइँ मनवौं भवर अम्हारौं। बासैं कवल बँधानउँ रे॥
छिन एकइँ मन वौं चहुँ दिसि जाये। मनवाँ नैं कोई मानउ रे॥
तुम्ह बिन राखइ कौन विधाता। सुनियर साखी आनउँ रे॥
दादू मृतक छिन मों जीवइ। मनवाँनाँ चरतन जानउँ रे॥१३॥

टेक। करनी पोच सोच सुख करई।
लोह की नाव कइसइ भौजल तिरई॥
दखिन जात पछिम कइसइ आवइ। नैन बिन भूलि बाट कत पावइ॥
बिख बन बोझि अमृत फल चाहइ। खाइ हलाहल अमर उमाहइ॥
अग्गि गृह पइसि करि सुख क्यूँ सोवइ।
जलनि लागी घनीं सीत क्यूँ होवइ॥
पाप पाखँड किये पुनि क्यूँ पाइये।
कूप खँनि पडि बाग गन क्यूँ जाइये॥
कहइ दादू मोहिँ अचरज भारी।
हिरदइ कपट क्यूँ मिलइ मुरारी॥१४॥

टेक। मेरा मन के मन सउँ। मन लागा ॥
शब्द के शब्द सौं नाउ बागा ॥
श्रवणा के श्रवण सुनि सुख पाया
नैंन के नैंन सौं निरखि राया ॥
प्रान के प्रान सउँ खेलि प्रानी। मुख के मुख सउँ बोलिं बानी ॥
जीव के जीव सउँ रंगि राता। चित्त के चित्त सउँ प्रेम माता ॥
सीस के सीस के सीस मेरा। देखि ले दादू भाग तेरा ॥१५॥

टेक। खेर सिखर चढ़ि बोलि मन मेरा।
राम जल बरख सबद सुनि तोरा ॥
आरति आतुर पीव पुकारइ। सोवत जागत पंथ निहारइ ॥
निसि बासर कहि अम्रित बानी। राम नाम लउ लाइ ले प्रानी ॥
टेरि मन भाई जब लग जीयइ। प्रीति करि गाढी प्रेम रस पीयइ ॥
दादू अउसरि जे जन जागइ। राम घटा जल बरषन लागइ॥१६॥

टेक। नारि नेह न कीजिये। जे तुझ राम पियारा ॥
माया मोह न बँधिये। तजिये संसारा ॥
बिखिया रँगि राचइ नहीं। नहिँ करइ पसारा ॥
देह गेह परिवार में। सब तें रहइ न्यारा ॥
आपा पर उरझइ नहीं। नाहीं मैं मेरा ॥
मनसा बाचा करमना। साईं सब तेरा ॥
मन इंद्री अस्थिर करइ। कतहूँ नहिँ डोलइ ॥
जग बिकार सब परहरइ। मिथ्या नहिँ बोलइ ॥
रहइ निरंतर राम सउँ। अंतर गति राता ॥
गावइ गुन गोबिंद का। दादू रसमाता ॥ १७ ॥

टेक। तूँ राखइ तूँ ही रहइ। तेई जन तेरा ॥
तुम्ह बिन और न जानई। सो सेवक नेरा ॥

अंबर आपै ही धरा। अजहूँ उपकारी॥
धरती धारी आप तैं। सब ही सुख कारी॥
पवन पास सब के चलइ। जइसइ तुम्ह कीना॥
पानी परगट देखिहउँ। सब सउँ रहइ भीना॥
चंद चिराकी चहुँ दिसा। सब सीतल जानइ॥
सूरज भी सेवा करइ। जइसइ भल मानइ॥
ये निज सेवक तेरउं। सब आज्ञाकारी॥
मोकूँ अइसइ कीजिये। दादू बलिहारी॥ १८॥

टेक। निंदक बाबा बीर हमारा। बिनही कोडइ वहइ बिचारा॥
क्रम कोटि के कसमल काटइ। काम सँवारइ बिनहीं साटइ॥
आपन डूबइ और को तारइ। अइसा प्रीतम पार उतारइ॥
जुग जुग जीवउ निंदक मोरा। राम देव तुम्ह करउँ निहोरा॥
निंदक बपुरा परउपकारी। दादू निंदा करइ हमारी॥१९॥

टेक। देहु जी देहु जी प्रेम पियाला देहु जी। देकरि बहुरि न लेहु जी।
ज्यों ज्यों नूर न देखउँ तेरा। त्यों त्यों जियरा तलपइ मेरा।
अमी महारस नाउँ न आवइ। त्यों त्यों प्रान बहुत दुख पावइ।
प्रेम भगति रस पावइ नाहीं। त्यों त्यों सालइ मनही माहीं।
सेज सोहाग सदा सुख दीजइ। दादू दुखिया बिलँब न कीजइ॥२०।

टेक। बरखहु राम अमृत धारा। झिलिमिलि झिलिमिलि सींचन हारा॥
प्रान बलि निज नीर न पावइ। जलहर बिना कवँल कुँभिलावइ॥
सूखइ बेलि सकल बनराई। राम देहु जल बरखहु आई॥
आतम बेली मरइ पियास। नीर न पावइ दादूदास॥ २१॥

इति॥ २१॥ ३३२॥ २१॥

राग विलावल ॥

टेक। दया तुम्हारी दरसन पइये। जानत हउँ तुम्ह अंतर जामी ॥
जानराइ तुम्ह सउँ का कहिये।
तुम्ह सउँ कहा चतुराई कीजइ। कउन कम करि तुम्ह पाये ॥
को नहीँ मिलइ प्रान बल अपनइ। दया तुम्हारी तुम्ह आये॥
कहा हमारउ आन तुम्ह आगइ। कउन कला करि बसि करिये॥
जीतइँ कउन बुधिबल पौरुख। रुचि अपनी नैँ सरनि लिये ॥
तुम्ह ही आदि अंत जुग तुम्ह हीँ। तुम्ह करता तिनलोक मँझार॥
कुछ नाहीँ थैँ कहाँ होत है। दादू बलि पावइ दीदार ॥१॥

टेक। मालिक मिहरवाँन करीम। गुनहगार हर रोज हर दम ॥
पनाह राखि रहीम।
अवलि आखरि बंदा गुनहीँ। अमल बद बसियार ॥
गरक दुनियाँ सितार साहिब। दरदबंद पुकार ॥
फरामोस नेकी बदी। करदम बुराई बद फैल ॥
बकसिंद तूँ अजाव आखरि। हुकम हाजिर सैल
नाँउँ नेक रहिम राजिक। पाक परवर दिगार ॥
गुनहफिल कर देहु दादू। तलब दर दीदार ॥ ॥ २ ॥
टेक। कौन आदमी न बिचारा। किस को पूजइ गरीब चिजारा ॥
मैँ जन एक अनेक पसारा। भौजल भरिया अधिक अपारा ॥
एक होइ तो कहि समझाऊँ। अनेक अरुझे क्योँ सुरझाऊँ ॥
मैँ हौँ निबल सबल ये सारे। क्योँ करि पूजउँ बहुत पसारे ॥
नबी-पुकारत समुझत नाहीँ। दादू देखु दसउँ दिसि जाहीँ ॥३॥
टेक। जागहु जियरा काहे सोवइ। सेइ करीमाँ तौ सुख होवइ ॥

आथइ जीवनाँ सो तैँ बिसारा । पछिम जाँना पंथ न सँवारा ॥
मैँ मेरी करि बहुत भुलाना । अजहूँ न चेतइ दूरि पयाना ॥
साईँ केरी सेवा नाहीँ । फिरि फिरि डूबइ दरिया माहीँ ॥
ओर न आवइ पार न पावा । झूठा जीव बहुत भुलावा ॥
मूल न राखा लाह न लीया । कौडी बदलइ हीरा दीया ॥
फिरि पछिताना संबल नाहीँ । हारि चला क्योँ पावइ साईँ ॥
अब सुख कारन फिरि दुख पावइ। अजहूँ न चेतइ क्योँ डहकावइ॥
दादू कहइ सीख सुनि मेरी । कहहु करीम सँभालि सवेरी ॥४॥

टेक । बार बार तन नहीँ बावरे । काहे को बाद गवाँवइ रे ॥
बिनसत बार कछू नहीँ लागइ । बहुरि कहाँ को पावइ रे ॥
तेरे भाग बडे भाव धरि कीन्हा । क्योँ करि चित्र बनावइ रे ॥
सो तूँ लेइ बिख मेँ डारइ । कंचन छार मिलावइ रे ॥
तूँ मति जानइ बहुरि पाइये । अब कइ जिनि डहकावइ रे ॥
तीन लोक की पूँजी तेरी । बनिज बेगि सो आवइ रे ॥
जब लग घट मेँ सास बास है । तब लग काहे न धावइ रे ॥
दादू तन धरि नाउँ न लीन्हा । सो प्रानी पछतावइ रे ॥ ५ ॥

टेक । राम बिसारेउ रे जगनाथ । हीरा हारेउ देखतही रे ।
कौडी कीन्ही हाथ ॥
काच हुता कंचन करि जानइ । भूलेउ रे भ्रम पास ॥
साचे सोँ पल परचा नाहीँ । करि काचे की आस ॥
बिख ता को अमृत करि जानइ । सो संग न आवइ साथ ॥
सेबल के फूल रंग परि फूलेउ । चूकेउ अबकी घात ॥
हरि भजि रे मन सहज पिछानी । ये सुनि साची बात ॥
दादू रे इथथइ करि लीजइ । आउ घटइ दिन जात ॥ ६ ॥

टेक । मन चंचल मेरो कहा न मानइ । दसउ दिसा दउरावइ रे ॥

आवत जात बार नाहिँ लागइ । बहुत भाँति बउरावइ रे ॥
बेर बेर बरजत या मन कउँ । किंचित सीख न मानइ रे ॥
अइसइ निकसि जाइ या तन तैँ । जइसइ जीव न जानइ रे ॥
कोटिक जतन करत या मन को । निहचल निमिख न होई रे ॥
चंचल चपल चहुँदिस भरमइ । कहा करइ जन कोई रे ॥
सदा सोच रहत घट भीतरि । मन थिर कइसइ कीजइ रे ॥
सहजइ सहज साध की संगति । दादू हरि भजि लीजइ रे॥७॥

टेक । इन कामिनि घर घालइ रे । प्रीति लगाइ प्रान सब सोखइ ॥
बिन पावक जिय जारइ रे ॥
अंग लगाइ सार सब लेवइ । इन तैँ कोई न बाँचइ रे ॥
यह संसार जीति सब लीया । मिलन न देइ साचइ रे ॥
हेत लगाइ सबइ धन लेवइ । बाकी कछू न राखइ रे ॥
माखन माँहि सोधि सब लेवइ । छाछि छिया करि नाखइ रे ॥
जो जन जानि जुगति सो त्यागइ । तिसको निज पद परसइ रे॥
काल न खाइ मरइ नहि कबहूँ । दादू तिसको दरसइ रे ॥ ८ ॥

टेक । जिनि सत छाडइ बावरे । पूरि कहइ पूरा ॥
सिरजे की सब चेत हइ । देवे को सूरा ॥
गरभ बास जिन राखिया । पावक तैँ न्यारा ॥
जुगति जतन करि सींचिँया । दे प्रान अधारा ॥
कुंज कहाँ धरि सँचरइ । तहाँ को रखवारा ॥
हेम हरत जिन राखिया । सो खसम हमारा ॥
जल थल जीव जिते रहइ । सो सब को पूरइ ॥
सँपत सिला मेँ देत हइ । काहे नर झूरइ ॥
जिन यहु भार उठाइया । निरबाहइ सांई ॥
दादू छिन न बिसारिये । ता तैँ जीवन होई ॥ ९ ॥

टेक । मोहि राम सँभालि जियरा । प्रान पिंड जिन दीन्हा रे ॥
अँबर आप उपजावनहारा । माहिँ चित्र जिन कीन्हा रे ॥
चंद सूर जिन्ह किये चिरागा । चरनउँ बिना चलावइ रे ॥
इक सीतल इक ताता डोलइ । अनत काल दिखलावइ रे ॥
धरती धरन बरन बहु बानी । रचि ले सपत समंदा रे ॥
जल थल जीव सभालनिहारा । पूरि रहा सब संगा रे ॥
प्रगट पवन पानी जिन कीन्हा । बरखावइ बहु धारा रे ॥
अठारह भार बिरिख बहु बिधि के । सबका सींचनहारा रे ॥
पंच तत्त जिन किया पसारा । सब करि देखन लागा रे ॥
निहचल राम जपइ मेरे जियरा । दादू जातइ जागा रे ॥१०॥

टेक । जब मइँ रहिते की रहि जानी । काल काया के निकट न आवइ। पावत हइ सुख प्रानी ॥
सोक सँताप नैन नहिँ देखउँ । राग दोख नहिँ आवइ ॥
जागत हइ जासोँ रुचि मेरी । सपनइ सोई दिखावइ ॥
भरम करम मोह नहिँ ममता । बाद बिबाद न जानउँ ॥
मोहन सोँ मेरी बनि आई। रसना सोई बखानउँ ॥
निसबासर मोहन तन मेरे । चरन कँवल मन मानइ ॥
सोइ निधि निरखि देखि सचपाऊँ । दादू और न जानइ ॥११॥

टेक । जब मइँ सच की सुधि पाई । तब तेँ अंग और नहिँ आवइ । देखत हउँ सुखदाई ।
ता दिन तेँ तन ताप न व्यापइ । सुख दुख संग न जाऊँ ॥
पावन पीव परसि पद लीन्हा । आनँद भरि गुन गाऊँ ॥
सब सोँ संग नहीँ पुनि मेरे । एक अनँत सोई सँग मेरे ॥
तन मन माहिँ सोधि सो लीन्हा । निरखत हउँ निज सारा ॥
सोई संग सबइ सुखदाई । दादू भाग हमारा ॥ १२ ॥

टेक। हरि बिन निहचल कहूँ देखौं। तीनि लोक फिरि सो धारे॥
जे दीसइ सो बिनासि जाइ गा। अइसा गुन परमोधा रे॥
धरती गगन पवन अरु पानीं। चँद सूर थिर नाहीं रे॥
रैनि दिवस रहत नहीं दिसइ। एक रहइ कलि माहीं रे॥
पीर पैगंबर सेख मसाइक। सिव बिरंचि सब देवा रे॥
कलि आया सो कोई न रहसी। रहसी अलख अभेवा रे॥
सवा लाख मेरु गिरि परबत। समँद न रहसी धीरा रे॥
नहीं निवान कछू नहिं दीसइ। रहसी अकल सरीरा रे॥
अबिनासी वह एक रहइगा। जिन्ह यह सब कुछ कीन्हा रे॥
दादू जाता सब जग देखउँ। एक रहित सो चीन्हा रे॥१३॥

टेक। मूल सींचि बधइ ज्यौं बेला। सो तत तरवर रहइ अकेला॥
देवी देखत फिरइ ज्यौं भूले। खाइ हलाहल बिख के फूले॥
सुख के चाह पडइ गल पासी। देखत हीरा हाथ थइँ जासी॥
कै पूजा रचि ध्यान लगावइ। देवल देखइ खबरि न पावइ॥
तोरे पाती जुगति न जानी। येहि भ्रम भूलि रहे अभिमानी॥
तीरथ बरत न पूजइ आसा। बनखँडि जाइ के रहइ उदासा॥
क्यों तप करि करि देह जलावइ। भरमत डोलइ जनम गवाँवइ॥
सत गुरु मिलइ न संसा जाई। ए बंधन सब देइ छुडाई॥
तबही दादू परमगति पावइ। सो निज मूरति माहिँ लखावइ॥१४॥

टेक। सोई साध सिरोमनी। गोबिँद गुन गावइ॥
राम भजइ बिखया तजइ। आपा न जनावइ॥
मिथ्या मुख बोलइ नहीं। पर निंदा नाहीं॥
अउगुन छाडइ गुन गहइ। मन हरिपद माहीं॥
निरबइरी सब आतमा। पर आतम न जानइ॥
सुखदाई समता गहइ। आपा नहिं आनइ॥
आपा पर अंतर नहीं। निरमल निज सारा॥

सतबादी साचा कहइ । लय लीन बिचारा ॥
निरभय भजि न्यारा रहइ । काहू लिपत न होई ॥
दादू सब संसार मँ । अइसा जन कोई ॥ १५ ॥

टेक । राम मिला यों जानिये । जउँ काल न व्यापइ ॥
जुरा मरन ता कहँ नहीँ । अरु मेटइ आपइ ॥

सुख दुख कबहुँ न उपजइ । अरु सब जग सूझइ ॥
करम को बाधइ नहीँ । सब आगम बूझइ ॥

जागत हइ सो जन रहइ । अरु जुग जुग जागइ ॥
अंतरजामी सो रहइ । कुछ काइ न लागइ ॥
काम दहइ सहजइ रहइ । अरु सुन्न बिचारइ ॥
दादू सो सब की लहइ । अरु कबहूँ न हारइ ॥ १६ ॥

टेक । इन्ह बातन मेरउ मन मानइ । दुतिया दोइ नहीँ उर अंतर ।
एक एक करि पिउ को जानइ ॥
पूरन ब्रह्म देखइ सबहिन में । भ्रम जिन काहू थइँ आनइ ॥
होइ दयाल दीनता सब सउँ । अरि पंचन को करइ किसानइ॥
आपा पर सम सब तत चीन्हइ । हरि भजि केवल जस गानइ॥
दादू सोई सहज घरि आनइ । सकट सबई जिय के भानइ ॥१७॥

टेक । ये मन मेरा पीव सउँ । अउरन सउँ नाहीँ ॥
पिव बिन पलहि न जीव सउँ । ये उपजइ माहीँ ॥

देखी सुख सब जीव सउँ । तहाँ धूप न छाहीँ ॥
अजरामर मन बांधिया । ता थइँ अनत न जाहीँ ॥
तेज पुंज फल पाइया । तहाँ रस खाहीँ ॥
अमर बोलि अम्रित झरइ । पिव पीव आघाहीँ ॥
प्रानपति तहाँ पाइया । जहाँ उलटि समाहीँ ॥
दादू पिव परचा भया । हियरे हित लाहीँ ॥ १८ ॥

टेक। आज प्रभात मिले हरि लाल।
दिल की बिथा पीर सब भागी।
मिट्यो है सब जीव कइ साल॥
देखत नय संतोख भयो हइ।
यह तुम्हारउ ख्याल॥
दादू जन सउँ हिलि मिलि रहिबउ।
तुम्ह हउ दीनदयाल॥ १९॥

टेक। अरस इलाही रबदा। इथाँई रहिमान वे॥
मक्का बीच मुसाफिरी। मदीना मुलतान वे॥
नबी नालि पैगंबरे। पीरो हँदा थाँन वे॥
जनतहु लेंहि कसाला। इथाँ भिस्त मुकाँम वे॥
इथाँ आव जम जमा। इथाई सुबहान वे॥
तखतर बाँगी कगुरेला। इथाइँ सुलताँन वे॥
सब इथाँ अँदरि आव वे। इथाइँ ईमाँन वे॥
दादू आया वजाँइ वला। लाइथाइँ आसाँन वे॥ २०॥

टेक। आसन रमिता राम दा। हरि इथाँ अविगत आप वे॥
महादेव मुनि देव ते। सिधइ बिस्राम वे॥
सरग सुखासन हुलमनो। हरि इथइँ आतम राम वे॥
अमीँ सरोवर आतमा। इथाइँ आधार वे॥
अमर थाँन अविगत रहइ। हरि इथइँ सिरजनहार वे॥
सब कुछ इथइँ आव वे। इथइँ परमाँनंद वे॥
दादू आपा दूरि करि। हरि इथाइँ आनंद वे॥ २१॥

इति॥ २२॥ ३९३॥

———:o:———

राग सूहौ ॥

टेक । तुम्ह बिच अंतर जिनि पडइ माधव । भावइ तन धन लेहु ॥
भावइ सरग नरक रसातल । भावइ करवत देहु ॥
भावइ बिपति देहु दुख संकट । भावइ सपति सुख सरीर ॥
भावइ घर वन राव रंक करि । भावइ सागर तीर ॥
भावइ बंधि मुकुति कर माधव । भावइ त्रिभुवन सार ॥
भावइ सकल दोष धरि माधव। भावइ सकल निवार ॥
भावइ धरनि गगन धर माधव । भावइ सीतल सूर ॥
दादू निकट सदा सँगि माधव। तूँ जिनि होवइ दूर ॥१॥

टेक । इब हम राम सनेही पाया । आगम अनहद सउँ चित लाया॥
तन मन आतम ता को दीन्हा । तब हरि हम आपन करि लीन्हा॥
बानी बिमलपच पराना । पहली सीस मिलइ भगवाना ॥
जीवन जनम सुफल करि लीन्हा । पहली चेते तिन्ह भल कीन्हा ॥
अउसर आया ठौर लगाबा । दादू जीवत लै पहुचावा ॥

अथ ग्रंथ कायाबेली ॥

राग सूहौ ॥

साचा सतगुरु राम मिलावइ । सब कुछ काया माहिँ दिखावइ ॥
काया माहइँ हइ आकास । काया माहइँ धरती पास ॥
काया माहइँ पवन प्रकास । काया माहइँ नीर निवास ॥
काया माहइँ ससिहर सूर । काया माहइँ बाजइ तूर ॥
काया माहइँ तीनिउँ देव । काया माहइँ अलख अभेव ॥
काया माहइँ चाउर वेद । काया माहइँ पाया भेद ॥

काया माहइँ चारउ खानी। काया माहइँ चारउ बानी॥
काया माहइँ उपजइ आइ। काया माहइँ मरि मरि जाइ॥
काया माहइँ जामइ मरइ। काया माहँ चौरासी फिरइ॥
काया माहइँ ले अवतार। काया माहइँ बारं बार॥
काया माहइँ राति दिन। उदइ अस्त एकतार॥
दादू पाया परम गुरु। काया एक कार॥
काया माहइँ खेल पसारा। काया माहइँ प्रान अधारा॥
काया माहँ अठारह भारा। काया माहँ उपावनहारा॥
काया माहइँ सब बनराइ। काया माहँ रहे घर छाइ॥
काया माहइँ कदलि बास। काया माहइँ हइ कबिलास॥
काया माहइँ तरवर छाया। काया माहइँ पंखी माया॥
काया माँहइ आदि अनंत। काया माहइँ हइ भगवँत॥
काय माहइँ त्रिभुवनराय। काया माहइँ रहा समाय॥
काया माहइँ चौदह भवन। काया माहइँ आवा गवँन॥
काया माहइँ सब ब्रहमंड। काया माहइँ हइ नवखंड॥
काया माहइँ लोक सब। दादू दिये दिखाइ॥
मनसा बाचा करमना। गुरु बिन लखा न जाइ॥
काया माहइँ सागर सात। काया माहइँ अविगत नाथ॥
काया माहइँ नदिया नीर। काया माहइँ गहर गँभीर॥
काया माहइँ सरवर पानी। काया माहइँ बसइ बिनानी॥
काया माहइँ नीर निवान। काया माहइँ हंस सुजान॥
काया माहइँ गंग तरंग। काया माहइँ जमुना संग॥
काया माहइँ हइ सुरसती। काया माहइँ द्वारावती॥
काया माहइँ कासी थान। काया माहइँ करइ सनान॥
काया माहइँ पूजा पाती। काया माहइँ तीरथ जाती॥
काया माहइँ मुनिभर मेला। काया माहइँ आप अकेला॥

काया माहइँ जपिये जाप । काया माहइँ आपइ आप ॥
काया नगर निधान हइ । माहइँ कौतुक होइ ॥
दादू सतगुरु संगि ले । भूलि पडइ जिनि कोइ ॥
काया माहइँ बिखयी बाट । काया माहइँ अउघट घाट ॥
काया माहइँ पटना गाउँ । काया माहइँ ऊतिम ठाउँ ॥
काया माहइँ मंडप छाजे । काया माहइँ आप बिराजे ॥
काया माहइँ महल अवास । काया माहइँ निहचल बास ॥
काया माहइँ राजदुआर । काया माहइँ बोलनहार ॥
काया माहइँ भरे भँडार । काया माहइँ बस्तु अपार ॥
काया माहइँ नव निधि होइ । काया माहइँ अठ सिधि सोइ ॥
काया माहइँ हीरा लाल । काया माहइँ निज पइ साल ॥
काया माहइँ मानिक भरे । काया माहइँ ले ले धरे ॥
काया माहइँ रतन अमोल । काया माहइँ मोल न तोल ॥
काया मँहे करता रहइ । सो निधि जानउ नाहिँ ॥
दादू गुरुमुख पाइये । सब कुछ काया माहिँ ॥
काया माहइँ सब कुछ जानि । काया माहइँ लेहु पिछानि ॥
काया माहइँ बहु बिस्तार । काया माहइँ अनँत अपार ॥
काया माहइँ अगम अगाध । काया माहइँ उपजे साध ॥
काया माहइँ कहा न जाइ । काया माँहि रहे लव लाइ ॥
काया माहइँ साधनसीर । काया माहइँ करइ विचार ॥
काया माहइँ अम्रित बानी । काया माहइँ सारँग पानी ॥
काया माहइँ खेलइ प्रान । काया माहइँ पद निर्वान ॥
काया माहँ मूल गहि रहइ । काया माहइँ सब कुछ लहइ ॥
काया माहइँ निज निरधार । काया माहइँ अपरं पार ॥
काया माहइँ सेवा करइ । काया माहइँ निरझर झरइ ॥
काया माहइँ बास करि । रहे नीरं तर छाइ ॥८

दादू पाया आदि घर। सतगुरु दिया देखाइ ॥
काया माहइँ अनभय सार। काया माहइँ करइ बिचार ॥
काया माहइँ उपजइ ज्ञान। काया माहइँ लागइ ध्यान ॥
काया माँहि अमर अस्थान। काया माहइँ आतमा राम ॥
काया माहइँ कला अनेक। काया माहइँ करता एक ॥
काया माहइँ लागइ रंग। काया माहइँ साँइँ संग ॥
काया माहइँ सरवर तीर। काया माहइँ कोकिल कीर ॥
काया माहइँ कच्छप नैन। काया माहइँ कुंजी बैन ॥
काया माहइँ कवँल प्रकास। काया माहइँ मधुकर बास ॥
काया माहइँ नाद कुरंग। काया माहइँ जोति पतंग ॥
काया माहइँ चात्रिक मोर। काया माहइँ चंद चकोर ॥
काया माहइँ प्रीति करि। काया माहिँ सनेह ॥
काया माहइँ प्रेम रस। दादू गुरुमुख येह।
काया माहइँ तारनहार। काया माहइँ उतरे पार ॥
काया माहइँ दुतर तारे। काया माहइँ आप उबारे ॥
काया माहइँ दुतरि तिरे। काया माहइँ होइ उद्धरे ॥
काया माहइँ उपजे आइ। काया माहइँ रहे समाइ ॥
काया माहइँ खुले कपाट। काया माँहि निरंजन हाट ॥
काया माँहइ हइ दीदार। काया माँहइ देखनहार ॥
काया माहँ राम रँग राते। काया माँह प्रेम रस माते ॥
काया माहइँ अबिचल बहे। काया माहइँ निहचल रेह ॥
काया माहइँ जीवइ जीव। काया माहइँ पाया पीव ॥
काया माहइँ सदा अनंद। काया माहइँ परमानद ॥
काया माहइँ कुसल हइ। सो हम देखा आइ ॥ ॥
दादू गुरुमुख पाइये। साधू कह समझाइ ॥
काया माँहइ देखा नूर। काया माँह रहा भरपूर ॥

काया माहइँ पाया तेज। काया माहइँ सुंदर सेज॥
काया माहइँ पुंज प्रकास। काया माहइँ सदा उजास॥
काया माहइँ झिलमिल सारा। काया माहइँ सब थइँ न्यारा॥
काया माहइँ जोति अनंत। काया माहइँ सदा बसंत॥
काया माहइँ खेलइ फाग। काया माहइँ सब बन बाग॥
काया माहइँ खेलइ रास। काया माहइँ बिबिध बिलास॥
काया माहइँ बाजहिँ बाजे। काया माहँ नाद धुनि साजे॥
काया माहइँ सेज सोहाग। काया माहइँ मोटे भाग॥
काया माहइँ मंगलचार। काया माहइँ जय जय कार॥
काया अगम अगाध हइ। मोहइ तूर बजाइ॥
दादू परगट पिव मिला। गुरुमुख रहे समाइ॥

इति कायाबेली संपूर्ण॥ २३॥ ३६३॥

——:o:——

अथ राग बसंत ॥

टेक। निरमल नाउँ न लीया जाइ। जाके भाग बडे सोई फल खाइ ॥
मन माया मोह मद माते। करम कठिनता माहिँ परे ॥
बिषय बिकार मान मन माहीँ। सकल मनोरथ स्वाद खरे ॥
काम क्रोध ये काल कलपना। मैँ मैँ मेरी अति अहँकार ॥
तृष्णा तृपति न मानइ कबहूँ। सदा कुसंगी पंच बिकार ॥
अनेक जोध रहैँ रखवाले। दुलभ दूरि फल अगम अपार ॥
जाके भाग सोई भलै पावइ। दादू दाता सिरजनहार ॥ १ ॥

टेक। तूँ घरि आवइ नैँ मान्हइ रे। हौँ जाऊँ वारणौँ मान्हइ रे ॥
रैनि दिवस मूँनैँ निरपँता जाये। वहलौँ थईँ घरि आवे वालहा।
आकुल थाये ॥
तिल तिल हौँ तैँ ताही बाटड़ी जाऊँ। इणी रे आँसूँड़े वालहा।
मुखड़ौ धोऊँ ॥
ताहरी दया करि घरि आवे वालहा। दादू तौ ताहरउ छइरे
मकारि टाला ॥ २ ॥

टेक। मोहन दुख दीरघ तूँ निवारि। मोहिँ सँतावै बार बार ॥
काम कठिन घट रहै माहिँ। ताथइँ ज्ञान ध्यान दोउ बइ नाहिँ ॥
गति मति मोहन बिकल मोर। ताथइँ चीत न आवइ नावँ तोर ॥
पंचौँ दूदर देह पूरि। ताथइँ सहज सील सत रहइ दूरि।
सुधि बुधि मेरी गई भाजि। ताथइँ तुम्ह बिसरे महाराजि ॥
क्रोध न कबहूँ तजइ संग। ताथइँ भाव भजन का होइ भंग ॥
समझि न कोई मन मँझारि। ताथइँ चरन बिमुख भये श्रीमुरारि ॥
अंतरजामी करि सहाइ। तेरो दीन दुखित भयउ जनम जाइ ॥
त्राहि त्राहि प्रभु तूँ दयाल। कह दादू हरि करि सँभाल ॥३॥

टेक । मेरे मोहन मूरति राखि मोहि । निस बासर गुन रमउँ तोहि ॥
मन मीन होइ ज्यूँ स्वाद खाइ । लालच लाग्यौ जल तेँ जाइ ॥
मन हस्ती मानउँ अपार । काम अंध गज लहइ न सार ॥
मन पतंग पावक पडै । अग्नि न देखइ ज्यूँ जरइ ॥
मन मिरगा ज्यूँ सुनइ नाद । प्राँण तजइ क्यूँ जाइ बाद ॥
मन मधुकर जैसे लुबधि बास । कवँल बँधावइ होइ नास ॥
मनसा बाचा सरनि तोर । दादू को राखउ गोबिँद मोर ॥ ४ ॥

टेक । बहुरि न कीजइ कपट काम । हिरदइ जपिये राम नाम ॥
हरि पावइ नाहिँ कबहूँ ठाउँ । पीव बिन खडभड गाउँ गाउँ ॥
तुम्ह राखउ जियरा अपनी माम । अनँत जिनि जाइ रहो बिस्राम ॥
कपट काम नहिँ कीजइ हाँम । रहु चरन कवँल कहु राम नाम ॥
जब अंतर जामी रहे जान । तब अखइ पद जन दादू प्रान ॥५॥

टेक । तहाँ खेलउँ पीव सौँ नित्त फाग । देखि सखी री मेरे भाग ॥
तहाँ दिन दिन अति आनंद होइ । प्रेम पिलावइ आप सोइ ॥
सँगियन सेतीँ रमइ रास । तहाँ पूजा अरचा चरन पास ॥
तहाँ बचन अमोलिक सबहिँ सार । तहाँ बरतइ लीला अति अपार ॥
उमँग देइ तब मेरे भाग । तेहि तरवर फल अमर लाग ॥
अलख देव कोई जानै भेव । तहाँ अलख देव की कीजइ सेव ॥
दादू बलि बलि बार बार । तहाँ आप निरंजन निराधार ॥ ६ ॥

टेक । मोहन माली सहजि समाना । कोई जानै साध सुजाना ॥
काया बाडी माहेँ माली । तहाँ रास बनाया ॥
सेवक सोँ स्वामी खेलन को । आप दया करि आया ॥
बाहरि भीतरि सर्ब निरंतर । सब मैँ रहा समाइ ॥
परगट गुप्त गुप्त पुनि परगट । अबिगत लखा न जाइ ॥
ता माली की अकथ कहानी । कहत कही नहिँ आवइ ॥
अगम अगोचर करइ अनंदा । दादू ये जस गावइ ॥ ७ ॥

टेक । मन मोहन मेरे मनहीँ माहिँ । कीजइ सेवा अति तहाँ ॥
तहाँ पायेउ देव निरंजना । प्रगट भयेउ हरि ये जहाँ ॥
नैन नहीँ निरखउँ अघाइ । प्रगट्यौ है हरि मेरे भाइ ॥
मोहि कर नै नन की सैन देइ । प्रान मूँसि हरि मोर लेइ ॥
तब उपजइ मोकूँ येह बानि । निज निरखत हौँ सारंगपानि ॥
अंकुर आदइ प्रगट्यो सोइ । बैन बान तातेँ लागइ मोइ ॥
सरनै दादू रह्यौ जाइ । हरि चरन देखावइ आप आइ ॥ ८ ॥

टेक । मतवाले पंचौ प्रेम पूरि । निमिख न इत उत जाहि दूरि ॥
हरिरसमाते दया दीन । राम रमत होइ रहे लीन ॥
उलटि अपूठे भये थीर । अम्रित धारा पीवहिँ नीर ॥
सहजि समाधी तजि बिकार । अबिनासी रस पावहिँ सार ॥
थकित भये मिलि महल माहिँ । मनसा बाचा आन नाहिँ ॥
मन मतवाला राम रंगि । मिलि आसन बैठे एक संग ॥
अस्थिर दादू एजि अंग । प्रान नाथ तहँ परमानंग ॥ ९ ॥

इति ॥ २९ ॥ ३७२ ॥

अथ राग भैरो।

टेक। सतगुरु चरनां मस्तक धरना। राम राम कहि दूतर तिरना॥
अठसिधि नौनिधि सहजइ पावइ। अमर अभय पद सुख मैं आवइ॥
भगति मुकति बैकुंठ जाइ। अमर लोक फल लेवइ आइ॥
परम पदारथ मंगलचार। साहिब के सब भरे भँडार॥
नूर तेज हइ जोति अपार। दादू राता सिरजनहार॥ १॥

टेक। तनहीं राम मनहीं राम। राम हिरदइ माहिं राखि ले॥
मनसा राम सकल परिपूरन। सहज सदा रस चाखि ले॥
नैना राम बैना राम। रसना राम सँभारि ले॥
स्रवना राम सनमुख राम। रमता राम बिचारि ले॥
सासै राम सुरतै राम। सबदइ राम समाइ ले॥
अंतर राम निरंतर राम। आतम रामा धाइ ले॥
सबइ राम संगइ राम। राम नाम लउ लाइ ले॥
बाहरि राम भीतरि राम। दादू गोविंद गाइ ले॥ २॥

टेक। अइसी सुरति राम लउ लाइ। हरि हिरदइ जिनि बिसरि जाइ॥
छिन छिन मात सँभारइ पूत। गोबिंद राखइ जोगीअवधूत॥
त्रिया रूप रूप कोउ रटइ। नटनी निरखि बरत व्रत चढ़इ॥
काछिब दृष्टइ धरइ धियान। चात्रिक नीर प्रेम की बानि॥
कुंजी कुरली सँभारइ सोइ। भ्रिंगी ध्यान कीट ज्यों होइ॥
स्रवनउँ सबद ज्यौं सुनइ कुरंग। जाति पतंग न मोडइ अंग॥
जल बिन मीन तलफि ज्यौं मरइ। दादू सेवक अइसइ करइ॥३॥

टेक। निरगुन राम रहइ लउ लाइ। सहजइ सहज मिले हरि आइ॥
भउजल ब्याधि लिपइ नहि कबहूँ। करम न कोई लागइ आइ॥
तीनउ ताप जरइ नाहिं जियरा। सो पद परसइ सहज सुभाइ॥

जनम जुरा जोनि नहिँ आवइ । माया मोह न लागइ ताहि ॥
पँाचउ पिंड प्रान नहिँ व्यापइ । सकल सोधि सब यही उपाइ ॥
सकट संसा नरक न नइनहुँ । ता कहँ कबहूँ काल न खाइ ॥
कंप न काय भय भरम भागइ । सब बिधि अइसी एक लगाइ ॥
सहज समाधि गहउ जे दिढ करि । जा सउँ लागे सोई आइ ॥
भ्रिंगी होइ कीट की नाईँ । हरिजन दादू एक देखाइ ॥ ४ ॥

टेक । धनि धनि तूँ धनि धरनी । तुम्ह सउँ मेरी आइ बनी ॥
धनि धनि तूँ तारइ जगदीस । सुर नर मुनि जन सेवइ ईस ॥
धनि धनि तूँ केवल राम । सस सहस मुख ले हरि नाम ॥
धनि धनि तूँ सिरजनहार । तेरा कोई न पावइ पार ॥
धनि धनि तूँ निरंजन देव । दादू तेरा लखइ न भेव ॥ ५ ॥

टेक । का जानउँ मोहिँ का ले करसी ।
तनहि ताप मोहिँ छिन बिसरसी ॥
आगम मोपर जानो ना जाहिँ ।
इहइ निवास न जियरे माहिँ ॥
मैँ नहिँ जानउँ का सिर होइ ।
ता तइँ जियरा डरपइ रोइ ॥
काहू तइँ लइ कछू करइ ।
ता नेँ मइया जीव डरइ ॥
दादू न जनइ कइसइ कहइ ।
तुम्ह सरनागत आइ रहइ ॥ ६ ॥

टेक । का जानउँ राम का गति मेरी । मइँ विषइ मनसा नहिँ फेरी ॥
जे मन माँगइ सोई दीन्हा । जाता देखि फेरि नहिँ लीन्हा ॥
देवा दूँदर अधिक पसारे । पाँचउ पकरि पटकि नहिँ मारे ॥
इन बातनि घट भरे बिकारा । तृष्णा तेज मोह नहिँ हारा ॥
इन्हहिँ लागि मइँ सेवा न जानी । कह दादू सुन करम कहानी ॥७॥

टेक । डरिये रे डरिये । ता तेँ रामनाम चित धरिये ॥
जिन्ह ये पंच पसारे रे । मारे रे ते मारे रे ॥
कछिउ जो करि लीये रे । जीये रे ते जीये रे ॥
भ्रिंगी कीट समाना रे । ध्याना रे यह ध्याना रे ॥
अजा सिध जो रहिये रे । दादू दरसन लहिये रे ॥ ८ ॥

टेक । तहाँ मुझ कमीन की कउन चलावइ ।
जा को अजहूँ मुनिजन महल न पावइ ॥
सिव बिरंचि नारद जस गावइ ॥
कउन भाँति करि निकटि बुलावइ ॥
देवा सकल तेँ तिसउ कोटि ।
रहे दरबार ठाढे कर जोरि ॥
सिध साधिक रहे लउ लाइ ।
अजहूँ मोटे महल न पाइ ॥
सब तेँ नीच मइँ नाउँ न जाना ।
कह दादू क्योँ मिलइ सयाना ॥ ९ ॥

टेक । तुम्ह बिन कह को जीवन मेरा । अजहूँ न देखा दरसन तेरा॥
होइ दयाल दीन के दाता । तुम्ह परिपूरन सब बिधि खाता ॥
जो तुम्ह करहु सोइ तुम्ह छाजइ। अपनो जन को काहे न निवाजइ।
अकरन करन अइसइ अब कीजइ। अपनो जानि कर दरसन दीजइ।
दादू कहइ सुनइ हरि साइँ । दरसन दीजइ मिलउ गोसाइँ ॥१०।

टेक । कागा रे करंक परि बोलइ । खाइ माँस अरु लगहीँ डोलइ ॥
जा तन को रचि अधिक सँवारा । सो तन ले माँटी मेँ डारा॥
जा तन देखि अधिक नर फूले । सो तन छाडि चला रे भूले ॥
जा तन देखि मन गरबाना । मिलि गया माँटी तजि अभिमाना॥
दादू तन की कहा बडाई । निमिख माहिँ माँटी मिलि जाई॥११।

टेक। जप गोबिंद बिसर जिन जाइ। जनम सुफल करिये लइ लाइ।
हरि सुमिरन सो हेत लगाइ। भजन प्रेम जस गोबिंद गाइ॥
मनुखा देह मुकति का द्वारा। राम सुमिरि जग सिरजनहारा॥
जब लग बिखम ब्याधि नहिँ आई।
जबलग काल कया नहिँ खाई॥
जब लग सबद पलट नहिँ जाई।
तब लगि सेवा कर रामराई॥
अवसरि राम कहसि नहिँ लोई।
जनम गया तब कहइ न कोई॥
जब लग जीवइ तब लग सोई।
पीछइ फिरि पछितावा होई॥
सोई सेवक सेवा लागइ।
सोई पावइ जो कोइ जागइ॥
गुरुमुख तिमिर भरम सब भागइ।
बहुरि न उलटइ मारग लागइ॥
अइसा अवसर बहुरि न तेरा।
देखि विचार समझ जिय मेरा॥
दादू हारि जीति जग आया।
बहुत भाँति कहि कहि समझाया॥ १२॥

टेक। राम नाम तत काहे न बोलइ।
रे मन मूढ अनत जिन डोलइ॥
भूला भरमत जनम गवाँवइ।
यह रस रसना काहे न गावइ॥
का झँखि अउरइ परत जँजालइ।
बानि बिमल हरि काहे न सँभालइ॥
राम बिसारि जनम जिन खोवइ।

जपि ले जीवन साफल होवइ ॥
सार सुधा रसदार स पीजइ।
दादू तन धरि लाहा लीजइ ॥ १३ ॥

टेक। आप आपन में खोजइ रे भाई।
वस्तु अगोचर गुरू लखाई ॥
जउँ मही विलोये माखन आवइ।
जउँ मन मथि याते तत पावइ ॥
काठ हुतासन रही समाइ।
तो मन माहिं निरंतर राइ ॥
जो अवनी महँ नीर समाना।
तो मन मोहइ साच सयाना ॥
जउँ दरपन के नहिं लागइ काई।
तउ मूरति माहिँ निरखे लखाई ॥
सहजि मन मथि याते तत पाया।
दादू उन तउ आप लखाया ॥ १४ ॥

टेक। मन मइला मनहीँ सों धोइ। उनमन लागे निरमल होइ ॥
मनहीं उपजइ विषय विकार। मनहीं निरमल त्रिभुवन सार॥
मनहीँ दुबिधा नाना भेद। मनहीँ समझइ दुइ पख छेद ॥ ॥
मनहीं चंचल चहुँ दिसि जाइ। मनहीँ निहचल रहा समाइ
मनहीं उपजइ अगिन सरीर। मनहीं सीतल निरमल नीर ॥
मन उपदेस मनहिं समझाइ। दादू यह मन उनमन लाइ ॥१५॥

टेक। रहु रे रहु मन मारउँगा। रती रती करि डारउँगा ॥
खंड खंड करि नासउँगा। जहाँ राम तहाँ राखउँगा ॥
कहा न मानइ मेरा। सिर भानउँगा तेरा ॥
घर महँ कधी न आवइ। बाहर को उठि धावइ ॥

दुखित भई हम नारि । कब घरि आवइ हो ॥
तुम्ह बिन प्रान अधार । जीव दुख पावइ हो ॥
प्रगटहु दीनदयाल । बिलंब न कीजिये हो ॥
दादू दुखी बेहाल । दरसन दीजिये हो ॥ ४ ॥

टेक । मोहन माधउ कब मिलइ । सकल सिरोमनिराइ ॥
तन मन ब्याकुल होत हइ । दरस दिखाओ आइ ॥
नइन रहे पँथ जोवता । रोवत रइनि बिहाइ ॥
बालसनेही कब मिलइ । मो पइ रहा न जाइ ॥
छिन छिन अंग अनल दहइ । हरि कब मिलिहइं आइ ॥
अंतरजामी जानि करि । तन की तपन बुझाइ ॥
तुम्ह दाता सुख देत हउ । हउँ सुनि दीन दयाल ॥
चाहइ नइन उतावले । हउँ कब देखउँ लाल ॥
चरन कवँल कब दोखिहउँ । सनमुख सिरजनहार ॥
साईं संग सदा रहउँ । हो तब भाग हमार ॥
जीवन मेरो जब मिलइ । हो तबही सुख होइ ॥
तन मन मँह तूँही दिसइ । हो कब देखउँ सोई ॥
तन मन की तूँही लखइ । हो सुन चतुर सुजान ॥
तुम्ह देखे बिन क्यों रहउँ । हो मोहि लागइ बान ॥
बिन देखे दुख पाइये । हो अब बिलँब न लाइ ॥
दादू दरसन कारनइ । हो सुख दीजइ आइ ॥ ५ ॥

टेक । सुरजन मेरा वे । की हइ तेरा पार लहाऊँ ॥
जे सुरिजन घरि आवइ वे । हिक कहाइ कहाऊँ ॥
तउ बाँझइ मईं कूचइनन आवइ । प दुख की हइ कहाऊँ ॥
तउ बाझइ मईं का निद्रा न आवइ । अँखिया नीर भराऊँ ॥
जेतो मईं का सुरजन देवइ । सो हउँ सीस लहाऊँ ॥
जन दादू जो सुरजन आवइ । दारिगह सेव कराऊँ ॥ ६ ॥

टेक । ए खुह पये सब भोग बिलास न । तैसहुँ बाझ छत्र सिंहासन॥
जन तिहुँ राम भसत न भावइ । लाल पलँग का कीजइ ॥
भाहिँ लगे इस सेज सुखासन । नेक देखन दीजइ ॥
बैकुँठ मुकति सरग क्या कीजइ । सकल भुवन नहिँ भावइ ॥
भाठ पये सब मंडप छाजइ । जे घर कंत न आवइ ॥
लोक अनंत अभय का कीजइ । मइँ बिरही जन तेरा ॥
दादू दरसन देखन दीजइ । ये सुनि साहिब मेरा ॥७॥

टेक । अल्ला आसिका इमान । भिस्त दोजम दीन दुनिया ।
चिकारे रहिमान ॥

मीर मीरी पीर पीरी । फिरस्तो फुरमाँन ॥
आब अस्त अरस खुरसी । दीननी दीवान ॥

हरदु आलम खलक खाँनाँ । मोमिनाइ सलाम ॥
हजा हाजी कजा काजी । खाँन तूँ सुलतान ॥
इल्म आलम मुलक मालुम । हाजते हइराँन ॥
अजब पारा खबरिदाराँ । सूरते सुबहाँन ॥
अवलि आखर एक तूँही । ज्यंद है कुरदाँन ॥
आसिकाँ दीदार दादू । नूरका नीसान ॥ ८ ॥

टेक । आला तेरा जिकर फिकर करते हैं । आसिकाँ मुस्ताक तेरे ।
तरासि तरासि मरते हैं॥
खलक खेस दिगर नेस । बइठे दिन भरते हैं ॥
दाइम दरबार तेरे । गैर महल डरते हैं ॥
तन सहीद मन सहीद । राति दिवस लरते हैं ॥
ग्यान तेरा ध्यान तेरा । इस्क आगि जरते हैं ॥
जान ते राज्यँद तेरा । पाउँ सिर धरते हैं ॥
दादू दिवान तेरे । जर खरीद घर के है ॥ ९ ॥

टेक। मुख बोलो स्वामी। अंतरजामी॥
तेरा सबद सोहावइ रामजी॥
धेन चरावन बेन बजावन। दरस दिखावन कामिनी॥
बिरह उपावन तपन बुझावन। अंग लगावन भामिनी॥
संग खिलावन रास बनावन। गोपी-भावन भूधरा॥
दादू तारन दुरित निवारन। संत सुधारन धूधरा। रामजी॥१०॥

टेक। हाथ देहो रामा। तुम्ह पूरन कामा॥
हउँ तउ उरझि रहउ संसार॥
अंधकूप महँ मइँ परउँ। मेरी करहु सँभार॥
तुम्ह बिन दूजा कोइ नहीँ। मेरे दीनदयाल॥
मारग कोइ सूझइ नहीँ। दह दिसि मायाजाल॥
काल पासि कसि बाँधियउ। कोइ न छुडावनहार॥
राम बिना छूटइ नहीँ। कीजइ बहुत उपाइ॥
कोटि किया सुलझइ नहीँ। अधिक अरूझत जाइ॥
दीन दुखी तुम्ह देखता। हउ दुखभंजनराम॥
दादू कहँ कर हाथ दे। तुम्ह सब पूरन काम॥ ११॥

टेक। जिनि छाडइ राम जिनि छाडइ। हमहिँ बिसारि जिनि छाडइ॥
जीया जात न लागइ बार जिनि छाडइ॥
माता को बालक तजइ। सुत अपराधी होइ॥
कबहुँ न छाडइ जीव थइँ। जिनि दुख पावइ सोइ॥
ठाकुर दीनदयाल हइ। सेवक सदा अचेत॥
गुन अउगुन हरि ना गिनइ। अंतरि ता सौं हेत॥
अपराधी सुत सेवका। तुम्ह हउ दीनदयाल॥
हम तेँ अउगुन होत हइ। तुम्ह पूरन प्रतिपाल॥
जब मोहन पार न चलइ। तब देही कोहि काम॥
जानत दादू का कहइ। अब जिनि छाडइ राम॥ १२॥

टेक । बिखम बार हरि अधार । करुना बहु नामी ॥
भगति भाइ बेगि आइ । पीड़ा भंजन स्वामी ॥
अंत अधार संत सधार । सुंदर सुखदाई ॥
काम क्रोध काल ग्रसत । प्रगटेउ हरि आई ॥
पूरन प्रति पाल कहिये । सुमिरन तें आवइ ॥
भरम करम मोहिं लागे । काहे न छुड़ावइ ॥
दीनदयाल होहु किरपाल । अंतरजामी कहिये ॥
एक जीव अनेक लागे । कइसे दुख सहिये ॥
पावन पीवचरन सरन । जुग जुग तईं तारे ॥
अनाथ नाथ दादू के । हरि जी हमारे ॥ १३ ॥

टेक । सजनिआँ नेह न तोरी रे । जो हम तोरहिं महाअपराधी
तउ तूँ जोरो रे ॥
प्रेम बिना रस फीका लागइ । मीठा मधुर न होई ॥
सकलसिरोमनि सब तें नीका । कड़ुवा लागइ सोई ॥
जबलग प्रीति प्रेम रस नाहीं । त्रिखा बिना जल अइसा ॥
सब तें सुंदर एक अमीरस । होइ हलाहल जइसा ॥
सुंदर साईं खरा पियारा । नेह नवा नित होवइ ॥
दादू मेरा तब मन मानइ । सेज सदा सुख सोवइ ॥ १४ ॥

ठेक । काँइमा कीरति करउँली । तूँ मोटउ दातार ॥
सब तईं सिरजल साहिबजी । तूँ मोटो करतार ॥
चउदह भुवन भानइ घड़इ । घटत न लागइ बार ॥
थापइ उथपइ तूँ धरनि । धनि धनि सिरजनहार ॥
धरती अंबर तईं धरा । पानी पवन अपार ॥
चंद सूर दीपक रचा । रइन दिवस बिस्तार ॥
ब्रह्मा संकर तईं किया । बिष्णु दिया अवतार ॥
सुरनर साधू सिरजिया । करि ले जीव बिचार ॥

आप निरंजन होइ रहउ । काइम कौतिकहार ॥
दादू निरगुन गुन कहइ । जाऊँ ली बलिहार ॥ १५ ॥

टेक । जियरा राम भजन करि लीजइ । साहिब मेरा माँगइगा रे ।
ऊतर काइसे दीजइ ॥
आगे जाइ पछितावन लागेउ । पलपल यह तन छीजइ ॥
ता तेँ जिय समझाइ कहूँ रे । सुकिरित अब तइँ कीजइ ॥
राम जपत जम काल न लागइ । संग रहे जब जीजइ ॥
दादूदास भजन करि लीजइ । हरि जी को रासि रमीजइ ॥१६॥

टेक । काल काया गढ़ माहँ लसी । छीलइ दसउ दुवारउ रे ॥
देखत उते लूटिये । हो सी हाहाकारउ रे ॥
नाइक नगर न मेलह सी एकलडो तेँ जाई रे ॥
संग न साथी कोई न आसी । तहाँ कि जानउँ किमथाई रे ॥
सत जत साधउ महरा भइडा काई सुकिरित लीजइ सारो रे ॥
मारग विकमइ चालयउ । काई लीजइ प्रान अधारो रे ॥
जिम नीर निवारन ठहरइ । तिम साजी बाँधउ पालउ रे ॥
समरथ सोई सेविये । तउ काया न लागइ कालउ रे ॥
दादू मन थिर आनिये । तउ निहचल थिर थाये रे ॥
प्रानी नइ पूरउ मलइ । तउ काया न मेली जायं रे ॥१७॥

टेक । डरिये रे डरिये । परमेश्वर तेँ डरियं ॥
लेखा लेवइ भरि भरि देवइ । ता तेँ बुरा न करिये रे डरिये ॥
साचा लीजे साचा दीजे । साचा सउदा कीजे रे ॥
साचा राखी झूठा नाखी । झूठा विख न पीजे रे ॥
निरमल गहिये निरमल रहिये । निरमल कहिये रे ॥
निरमल लीजे निरमल दीजे । अनत न बहियेरे ॥
साह पठाया बनिज न आया । जिनि डहकावइ रे ॥
झूठ न भावइ फेरि पठावइ । कीया पावइ रे ॥

पंथ दुहेला जाइ अकेला। भार न लीजे रे॥
दादू मेला होइ सुहेला। सो कुछ कीजे रे॥ १८॥

टेक। डरिये रे डरिये। देखि देखि पग धरिये॥
तारे तरिये मारे मरिये। तातैं गरब न करिये रे। डरिये॥
देवइ लेवइ समरथ दाता। सब कुछ छाजइ रे॥
तारइ मारइ गरब निवारइ। बइठा गाजइ रे॥
राखे रहिये बाहे बहिये। अनत न लहिये रे॥
भानइ घडे सवाँरइ आपइ। अइसा कहिये रे॥
निकट बुलावइ दूरि पठावइ। सब बनि आवइ रे॥
पाके काचे काचे पाके। जो मन भावइ रे॥
पावक पानी पानी पावक। करि दिखलावइ रे॥
लोहा कंचन कंचन लोहा। कहि समझावइ रे॥
ससिहर सूर सूर तइँ ससिहर। परगट खेलइ रे॥
धरती अंबर अंबर धरती। दादू मेलइ रे॥ १९॥

टेक। मनसा मन सबद सुरति। पाँचो थिर कीजइ॥
एक अंग सदा संग। सहजइ रस पीजइ॥
सकल रहित मूल गहित। आपा नहिँ आनइ॥
अंतर गति निरमल रति। एकइ मन मानइ॥
हिरदइ सुधि बिमल बुधि। पूरन परकासइ॥
रसना निज नावँ निरखि। अंतर गति बासइ॥
आतम मति पूरन गति। प्रेम भगति राता॥
मँगन गलित अरस परस। दादू रस माता॥ २०॥

टेक। गोविंद के चरनों हीं लउ लाऊँ।
जइसे चातक बन मइँ बोलइ पीव पीव करि धाऊँ॥
सुरजन मेरी सुनहु बीनती। मइँ बलि तेरे जाऊँ।
बिपत हमारी तोहि सुनाऊँ। दे दरसन कहँ पाऊँ॥

जातैं सुख दुख उपजत तन को। तुम्ह सरनागत आऊँ॥
दादू को दया करि दीजइ। नाउँ तुम्हारो गाऊँ॥ २१॥

टेक। प्रेम भगति बिन रह्यो न जाई।
परगट दरसन देहु अघाई॥
ताला बेली तलपइ माहीँ।
तुम्ह बिन राम जियरे जक नाहीँ॥
निस बासर मन रहइ उदास।
मईँ जन व्याकुल सास उसास॥
एकमेक रस होइ न आवइ।
ता तैं प्रान बहुत दुख पावइ॥
अंग संग मिलि यह सुख दीजइ।
दादू राम रसायन पीजइ॥ २२॥

टेक। तिस घर जाना वे। जहाँ वे अलख सरूप॥
सो अब ध्याइये रे। सब देवन का भूप॥
अलख सरूप पीव का। बान बरन न पाइये॥
अखंड मंडल माहिँ रहइ। सोई प्रीतम गाइये॥
गावो मन बिचारा वे। मन बिचारा सोई सारा॥
परगट पीव तैं पाइये। साईं सेती संग साँचा॥
जीवत तिस घर जाइये॥
अलख सरूप पीव का। कइसे करि आलेखिये॥
सुख मंडल माहिँ साचा। नैन भरि सो देखिये॥
देखो लोचन सार वे। देखो लोचन सार सोई॥
परगट होइ यह अचंभा पेखिये॥
दयावंत दयाल अइसो। बरन अति बिसेखिये॥
अलख सरूप पीव का। परान जीव का॥

सोई जन जे पावई । दयावंत दयाल अइसो ॥
सहजइ आप लखावइ । लखइ सुलखनहार वे ।
लखइ सोई संग होइ । अगम बइन सुनावई ॥
सब दुख भागा रंग लागा । काहे न मंगल गावई ॥
अलख सरूप पीव का । कर कइसे कर मानिये ॥
निरंतर निरधार आपइ । अंतर सोई जानिये ॥
जानो मन बिचारा वे । मन बिचारा सोई सारा ॥
सबरि सोई बखानिये । ओरँग सेती रँग लागा ।
दादू तउ सुख मानिये ॥ २३ ॥

टेक । राम तहाँ प्रगट रहे भरपूर । आतम कवँल जहाँ ॥
परम पुरुख तहाँ सूर । झिलमिल झिलमिल नूर ॥
चंदसूर मधि भाइ । तहाँ बसइ रामराइ ॥
गंग जमुन के तीर । तिरबेनी संगम जहाँ ।
निरमल बिमल तहाँ । निरख निरख निज नीर ॥
आतम उलटि जहाँ । तेज पुंज रहइ तहाँ ॥
सहज समाइ । अगम निगम आति ॥
तहाँ बसइ प्रानपति । परसि परसि निज आइ ॥
कोमल कुसुमदल । निराकार जोति जल ॥
वार न पार सुभि सरोवर जहाँ । दादू हंसा रहइ तहाँ
बिलसि बिलसि निज सार ॥ २४ ॥

टेक । गोविंद पाया मनभाया । अमर किये सँग लिये ॥
अखइ अभइ दान दिये । छाया नहिँ माया ॥
अगम गगन अगम तूर । अगम चंद अगम सूर ॥
काल झाल रहे दूर । जीव नही ँ काया ॥
आदि अंत नहिँ कोई ।

मेरा कहा न मानइ ॥
दादू गुरमुखि पूरा। मन सौं जूझइ सूरा ॥ १६ ॥

टेक। निरभय नाउँ निरंजन लीजइ। इन लोगन का भय नहिँ कीजइ॥
सेवक सूर संक नहिँ मानइ। राना राव रंक करि जानइ ॥
नाउँ निसंक मगन मतिवाला। राम रसायन पिवइ पियाला ॥
सहजइ सदा राम रँगि राता। पूरन ब्रह्म प्रेम रस माता ॥
हरि बलवत सकल सिर गाजइ। दादू सेवक कइसे भाजइ॥१७

टेक। अइसो अलख अनंत अपारा। तीन लोक जाको बिसतारा ॥
निरमल सदा सहज घर रहइ। ताको पार न कोई लहइ ॥
निरगुन निकट सब रहइ समाइ। निहचल सदा न आवइ जाइ ॥
अबिनासी हइ अपरंपार। आदि अनंत रहइ निरधार ॥
पावन सदा निरंतर आप। कला अतीत लिपत नहीँ पाप ॥
समरथ सोई सकल भरपूरि। बाहर भीतर नियरा न दूरि ॥
अकला आप कलइ नहिँ कोई। सब घटि रह्यो निरंजन होई॥
अबरन आपइ अजर अलेख। अगम अगाध रूप नहिँ लेख।
अबिगति की गति लखी न जाइ। दादू दीन ताहि चित लाइ॥१८॥

टेक। अइसो राजा सेऊँ ताहि। अउर अनेक सब लागे जाहि ॥
तीनि लोक गृहँ धरे रचाइ। चंद सूर दोउ दीपक लाइ ॥
पवन बोहारइ गृह अँगना। छपनकोटि जल जाके घना ॥
राते सेवा संकर देव। ब्रह्मा कुलाल न जानइ भेव ॥
कीरति करना चारो बेद। नेति नेति नहि जानइ भेद ॥
सकल देवपति सेवा करइ। मुनी अनेक एक चित धरइ ॥
चित्र विचित्र लिखइं दरबार। धरमराइ ठाढे गुन सार ॥
रिधि सिधि दासी आगइ रहइ। चारि पदारथ जी जी कहइ॥
सकल सिद्धि रहइ लउ लाइ। सब परिपूरन अइसो राइ ॥

खलक खजाना भरे भँडार । ता घरि बरतइ सब संसार ॥
पूरि दिवान सहज सब दे । सदा निरंजन अइसा है ॥
नारद गाइन गुन गोबिंद । सारदा करइ सब छंद ॥
नटवर नाचइ कला अनेक । आपन देखइ चरित अलेख ॥
सकल साध बाजइ नीसान । जय जय कारन मेटइ आन ॥
मालिनि पुहुप अठारह भार । आपन दाता सिरजनहार ॥
अइसो राजा सोई आहि । चउदह भुवन मेँ रहेउ समाइ ॥
दादू ताकी सेवा करइ । जिन यह रचि ले अधर धरइ ॥ १९ ॥

टेक । जब यह मैं मैं मेरी जाइ । तब देखत बेगि मिलइ रामराइ ॥
मैं मैं मेरी तब लगि दूरि । मैं मैं मेटि मिलइ भर पूरि ॥
मैं मैं मेरी तब लग नाहिँ । मैं मैं मेटि मिलइ मन माहिँ
मैं मैं मेरी न पावइ कोइ । मैं मैं मेटि मिलइ जन सोइ ॥
दादू मैं मैं मेरी मेटि । तब तूँ जानि राम सोँ भेटि ॥ २० ॥

टेक । नाहीँ रे हम नाहीँ रे । सत्य राम सब माहीँ रे ॥
नाहीँ धरनि अकासा रे । नाहीँ पवन प्रकासा रे ॥
नाहीँ रबि ससि तारा रे । नाहीँ पावक प्रजारा रे ॥
नाहीँ पंच पसारा रे । नाहीँ सब संसारा रे ॥
नाहीँ काया जीव हमारा रे । नाहीँ बाजी कौतिगहारा रे ॥
नाहीँ तरवर छाया रे । नाहीँ पंखी न माया रे ॥
नाहीँ गिरवर बासा रे । नाहीँ समुद निवासा रे ॥
नाहीँ जलथल खँडा रे । नाहीँ सब ब्रहमंडा रे ॥
नाहीँ आदि अनंता रे । दादू राम रहंता रे ॥ २१ ॥

टेक । अलह कहउ भावै राम कहउ । डाल तजउ सब मूल गहउ ॥
अलह राम कहि कर्म दहउ । झूठे मारग कहा बहउ ॥
साधू संगति तउ निबहउ । आइ परइ सो सीस सहउ ॥

कया कवँल दिल लाइ रहउ । अलख अला दीदार लहउ ॥
सतगुरु की सुनि सीख महंउ । दादू पहुँचे पार पहँउ ॥२२॥

टेक । हिंदू तुरुक न जानउ दोइ । साइं सबनि का सोई होइ ॥
और न दूजा देखउँ कोइ ॥
कीट पतंग सब जोनिन जोइ । जल थल संग समाना सोइ ॥
पीर पैगंबर देवा दानव । मीर मलिक मुनि जन को गोइ ॥
करता हइ रे सोई चीन्हउ । जिनि वेइ क्रोध करइ रे कोइ ॥
जइसइ आरसी मंजन कीजइ । राम रहीम देही तन धोइ ॥
साइँ केरी सेवा कीजइ । पापउ धन काहे को खोइ ॥
दादू रे जन हरि भजि लीजइ । जनम जनम जे सुरजन होइ ॥२३॥

टेक । को स्वामी को सेख कहइ । इस धुनिये का मर्म कोई न लहइ ॥
कोई राम कोई अलह सुनावइ । पुनि अलह राम का भेद न पावइ॥
कोई हिंदू कोई तुरुक करि मानै । पुनि हिंदू तुरक की खबरि न जानै॥
यह सब करनी दोनों बेद । समझि परी तब पाया भेद ॥
दादू देखइ आतम एक । कहिबा सुनिबा अनँत अनेक ॥२४॥

टेक । निंदत हइ सब लोग बिचारा । हम को भावइ राम पियारा ॥
निरसंसइ निरदोख लगावइ । तातैं मो को अचरज आवइ ॥
दुबिधा दुइ पख रहता जे । ता मन कहत गये रे जे ॥
निरबैरी निहकामी साध । तासिर देत बहुत अपराध ॥
लोहा कंचन एक समान । ता सन कहत करत अभिमान ॥
निंदा अस्तुति एकइ तउलइ । तासु कहइ अपवादहि बोलइ॥
दादू निंदा ताको भावइ । जाके हिरदइ राम न आवइ ॥२५॥

टेक । मान्हाँ स्यू जहूँ आपउ । तान्हउ छइ तूँ नइ यापउ ॥ ॥
सब जीवनइ तूँ दातार । तइँ सिरज्यानइ तूँ प्रतिपाल ॥
तन धन तान्हाउ तइँ दीधउ । हउ तान्हउ नइ तइँ कीधउँ ॥

सहुवइ तान्हउ साचो ये । मइ नइ मान्हउ झूठउ ते ॥
दादू नइ मनि अउर न आवइ । तूँ करता नइ तूँ ही जु भावइ॥२६

टेक । अइसा अवधू राम पियारा । प्रान पिंड तेँ रहइ नियारा॥
जबलग काया तबलग माया । रहइ निरंतर अवधूराया ॥
अठ सिधि भाई नउ निधि आई । निकटि न जाई राम दुहाई ॥
अमर अभयपद बइकुँठ बास । छाया माया रहइ उदास ॥
साँइँ सेवक सब दिखलावइ । दादू दूजा दृष्टि न आवइ ॥२७॥

टेक । तूँ साहिब मइँ सेवक तेरा । भावइ सिर दे सूली मेरा ॥
भावइ करवत सिर परि सारि । भावइ ले करि गरदन मारि॥
भावइ चहुँदिसि अगिन लगाइ । भावइ काल दसउ दिसि खाइ॥
भावइ गिरवर गगन गिराइ । भावइ दरिया माहिँ बहाइ ॥
भावइ कनक कसउटी देहु । दादू सेवक कसि कसि लेहु ॥२८॥

टेक । काम क्रोध न आवइ मरइ । ताथेँ गोबिँद पाया नेरइ ॥
भ्रम क्रम जालि सब दीन्हा । रमता राम सबनि मइँ चीन्हा ॥
दुबिधा दुरमति दूरि गवाँई । राम रमित साची मन आई ॥
नीँच ऊँच मद्धिम कोउ नाहीँ । देखउँ राम सबनि के माहीँ ॥
दादू साच सबन मइँ सोई । पेँड पकारि जन निरभय होई ॥२

टेक । हाजिरा हजूरि साईँ । हइ हरि नेड़ा दूरि नाहीँ ॥
मनी मोवि महल मइँ पावइ । काहे खोजन दूरि जावइ ॥
हिरस न होइ गुसा सब खाइ । ताथेँ सइँयाँ दूरि न जाइ ॥
दुई दूरि दरोग न होइ । मालिक मन मेँ जानइ सोइ ॥
अरि ये पंच सोधि सब मारइ । दादू देखइ निकटि विचारइ ३०॥

टेक । राम रमत है देखइ न कोई । जो देखइ सो पावन होई ॥
बाहरि भीतरि नेडा न दूरि । स्वामी सकल रहा भरपूरि ॥

जहाँ देखउ तहाँ दूसर नाहिँ। सब घटि राम समाना माहिँ॥
जहाँ जाउ तहाँ सोई साथ। पूरि रहा हरि त्रिभुवन नाथ॥
दादू हरि देखइ सुख होइ। निसदिन निरखत दीजइ मोइ॥३१

टेक। मन पवन लै उनमन रहइ। अगम निगम मूल सो लहइ॥
पंच बाइ जे सहजि समावइ। ससिहर के घरि आनइ सूर॥
सीतल सदा मिलइ सुखदाई। अनहद बेन बजावइ तूर॥
बंक नालि सदा रस पीवइ। तब यह मनवाँ कहीँ न जाइ॥
बिगसइ कवँल प्रेम जब उपजइ। ब्रह्म जीव की करइ सहाइ॥
बैठि गुफा महँ जोति बिचारइ। तब ताहि सूझइ त्रिभुवनराइ॥
अंतर आप मिलइ अबिनासी। पद आनंद काल नहिँ खाइ॥
जरा मरन जाइ भय भाजइ। अबरन के घर बरन समाइ॥
दादू जाइ मिलइ जग जीवन। तब यह आवा गवँन बिलाइ॥३

टेक। जीवनिमूरि मेरे आतमराम। भाग बड़े पायेउँ निज ठाम॥
सबद अनाहद उपजइ जहाँ। सुखमन रंग लगावइ तहाँ॥
तहाँ रँग लागइ निरमल होइ। ये तत उपजइ जानउ सोइ॥
सरवर तहाँ हंसा रहइ। करि असनान सबइ सुख लहइ॥
सुखदाई को नैनहु जोइ। त्यों त्यों मन अति आनँद होइ।
सो हंसा सरनागति जाइ। सुंदरि तहाँ पखारइ पाइ॥
पीवइ अम्रित नीझर नीर। बइठे तहाँ जगत गुरु पीर॥
तहाँ भाव प्रेम की पूजा होइ। जा परि किरपा जानइ सोइ॥
कृपा करी हरि देइ उमंग। ता जन पायेउ निरंभय संग॥
तब हंसा मन आनँद होइ। बसा अगोचर लखइ रे सोइ॥
जा कहँ हरी लखावइ आप। ताहि न लिपइ पुन्न नहिँ पाप॥
तहाँ अनहद बाजइ अदभुत खेल। दीपक जलइ बाति बिन तेल॥
अखंड जोति तहाँ भयेउ प्रकास। फाग बसंत जो बारहमास॥

निरअस्थान निरंतर निरधार । तहाँ प्रभु बइठइ समरथ सार ॥
नइनहु निरखउ तउ सुख होइ । ताहि पुरस कहँ लखइ न कोइ ॥
अइसा हइ हरि दीनदयाल । सेवक की जानइ प्रतिपाल ॥
चलु हंसा तहाँ चरन समान । तहाँ दादू पहुँचे परमान ॥ ३३ ॥

टेक । घटि घटि गोपी घटि घटि कान । घटि घटि राम अमर अस्थान ॥
गंगा जमुना अंतर वेद । सुरसती नीर बहइ परसेद ॥
कुंज केलि तहाँ परम विलास । सब के संग मिलि खेलइ रास ॥
तहाँ बिन बेना बाजइ तूर । बिगसइ कवँल चंद अरु सूर ॥
पूरन ब्रह्म परम परकास । तहाँ निज देखइ दादूदास ॥ ३४

इति संपूर्णः ॥ राग ॥ ३५ ॥ पद ॥ ६०६ ॥

अथ राग ललिता ॥

टेक । राम तूँ मोरा हउँ तोरा । पाइन परत निहोरा ॥
एकइ संगइ बासा । तुम्ह ठाकुर मइँ दासा ॥
तन मन तुझ कौं देवा । तेज पुंज हम लेवा ॥
रस माँहिंइ रस होइबा । जोति सरूपी जोइबा ॥
ब्रह्म जीव का मेला । दादू नूर अकेला ॥ १ ॥

टेक । मेरे गिरिह गुरु मेरा । मइँ बालक सेवक तेरा ॥
मात पिता तुम्ह अम्हचा स्वामी । देव हमारे अंतर जामी ॥
अम्हचा सजन अम्हचा बंधू । प्रान हमारे अम्हचा जिंदू ॥
अम्हचा प्रीतम हम्हचा मेला । अम्हची जीवनि आप अकेला ॥
अम्हचा साथी संग सनेही । राम बिना दुख दादू देही ॥ २ ॥

टेक । वाल्हा म्हारा प्रेम भगति रस पीजियें ।
रमिये रमता राम म्हारा बाल्हा रे ॥
हिर्दौ कवँल मइँ राखिये ।
उत्तिम ए हइ ठाँम म्हारा बाल्हा रे ॥
वाल्हा म्हारा संतगुर सरनइ अन सरइ ।
साध समागम थाये मान्हा बाल्हा रे ॥
वानी ब्रह्म बखानिये ।
आनँद भौंदिन न जाइ मान्हा बाल्हा रे ॥
बाल्हा मान्हा आत्म अनभइ ऊपजइ ।
उपजइ ब्रह्म गियान मान्हा बाल्हा रे ।
सुख सागर मइँ झूलिये ।
साचउ ये असनँान मान्हा बाल्हा रे ॥

बाल्हा मान्हा भवबंधन सब छूटिये ।
करम न लागइ कोइ मान्हा बाल्हा रे ॥
जीवन मुकति फल खामिये ।
अभइ अमरपद होइ मान्हा बाल्हा रे ।
बाल्हा मान्हा अठ सिधि नउ निधि आँगनइ ।
परम पदारथ चार मान्हा बाल्हा रे ॥ ३ ॥

टेक । हमीरउ माई राम नाम रँग रातउ ।
पीव पीव करइ पीवइ को जानइ ॥
मगन रहइ रसि मातउ ॥
सदा सील संतोख सु भावत । चरन कवँल मन बाँधउ ॥
हिरदा माहिँ जतन करि राखउ । मनउँ रंक धन लाधउ ॥
प्रेम भगति प्रीति हरि जानउ । हरिसेवा सुखदाई ॥
ज्ञान ध्यान मोहन को मेरे । पंक न लागउ काई ॥
सँग सदा हेत हरि लागउ । आँगि और नहीँ आवइ ॥
दादू दीनदयाल दमोदर । सार सुधारस भावइ ॥ ४ ॥

टेक । मिहरवान मिहरवान । आबबाद खाक अतस ॥
आदम नीसान ॥
सीस पाव हाथ कीये । नइन कीये कान ॥
मुख कीया जीव दीया । राजिक राम रहिमान ॥
मादर पदर पद पोस । साईँ सुबहान ॥
संग रहइ दस्त गहइ । साहिब सुलितान ॥
या करीम या रहीम । दाना तूँ दीवान ॥
पाक नूर हइ हजूर । दादू हइरान ॥ ५ ॥

—:o:—

राग जैतश्री ।

टेक। तेरे नाउँ की बलि जाउँ। जहाँ रहउँ जिस ठाउँ ॥
तेरे बइनँउ की बलिहारी। तेरे नइनहुँ ऊपरि वारी ॥
तेरी मूरति की बलि कीती। बारि बारि हउँ दीती।
सोभित नूर तुम्हारा। सुंदर जोति उजारा ॥
मीठा प्राँन पियारा। तूँ हइ पीव हमारा ॥
तेज तुम्हारा कहिये। निरमल काहे न लहिये ॥
दादू बलि बलि तेरे। आव पिया तूँ मेरे ॥ १ ॥

टेक। मेरे जिय की जानइ जानराइ। तुम्ह तइँ सेवक कहा दुराइ ॥
जल बिन जइसे जाइ जिय तलपत। तुम्ह बिन तइसइ हमहीं बिहाइ॥
तन मन व्याकुल होइ बिरहनी। दरस पियासी प्रान जाइ ॥
जइसइ चित्त चकोर चंद मन। अइसइ मोहन हमहिँ आइ॥
बिरहा अगिन दहत दादू कहैं। दरस न परस न तमासिराइ ॥२॥

अथ राग घनाश्री ॥

टेक। रँग लागउ रे राम को। सो रँग कधी न जाये रे ॥
हरि रँग मेरो मन रमउ। अउर न रंग सोहाये रे ॥
अबिनासी रँग ऊपनउ। रचि मचि लागउ चोलउ रे ॥
सो रँग सद्य सोहावनउ। अइसउ रंग अमोलउ रे
हरि रँग कधी न ऊतरइ। दिन दिन होइ सुरंगउ रे ॥
नित्य नवउ निरबान हइ। कधी न होइ ला भंगउ रे ॥
साचउ रंग सहजइ मिलउ। सुंदर रंग अपारउ रे ॥
भाग बिना क्याँ पाइये। सब रँग माहँइ सारउ रे ॥

अउरन कहँ का बरनिये। सो रँग सहज सरूपउ रे॥
बलिहारी उस रंग की जन। दादू देखि अनूपउ रे॥ १॥

टेक। लाग रहउ मन राम सउँ। अब अनतइ नहीं जाये रे॥
अचला सो थिर होइ रहउ। सकइ न चित्त डोलाये रे॥
ज्यों कुंजन चंदन रहइ। परिमल रहउ लोभाये रे॥
त्यौं मन मेरा राम सउँ। अबकी बेर अघाये रे॥
भवँर न छाडइ बास को। कवँलहि रहइ बँधाये रे॥
तउ मन मेरा राम सउँ। बेधि रहउ चित लाये रे॥
जल बिन मीन न जीवई। बिछुरत ही मरि जाये रे॥
तउ मन मेरा राम सउँ। अइसी प्रीति बनाय रे॥
ज्यों चातक जल को रटइ। पिव पिव करत बिहाये रे।
त्यों मन मेरा राम सउँ। जन दादू हेत लगाये रे॥ २॥

टेक। मनमोहन हो कठिन बिरह की पीर। सुंदर दरस परस दिखाइये।
सुनहु न दीन दयाल। तुव मुख बइन सुनाइये॥
करुनामय किरपाल। तव सकल सिरोमनि आइये॥
मम जीवन प्रान अधार। अबिनासी उर लाइये॥
अब हरि दरसन देहु। दादू प्रेम बढाइये॥ ३॥

टेक। कतहुँ रहे होय देस। हरि नहीं आये हो॥
जनम सिरानो जाइ। पीव नहीं पाये हो॥
बिपति हमारी जाइ। हरि सउँ को कहइ हो॥
तुम्ह बिन नाथ अनाथ। बिरहनि को रहइ हो॥
पिव के बिरह वियोग। तन की सुधि नहीं हो॥
तलपि तलपि जिव जाइ। मिरतक होइ रही हो॥
राति दिवस नाहिँ होइ। उदय अस्त नाहिँ दोइ।
मनहीं मन लाया॥

अमर गुरु अमर ज्ञान । अमर पुरुख अमर ध्यान ॥
अमर ब्रह्म अमर थान । सहज सुख आया ॥
अमर नूर अमर बास । अमर तेज सुख निवास ॥
अमर जोति दादू दास । सकलभुवनराया ॥ ४ ॥

टेक । राम की राती भई माती । लोक बेद बिधि निखेद ।
भागइ सब भरम भेद । अमरित रस पीवइ ॥
लागे सब काल झाल । छूटे सब जग जँजाल ॥
बिसरे सब हाल चाल । हरि की सुधि पाई ॥
प्रान पवन तहाँ जाइ । अगम निगम मिले आइ ॥
प्रेम मन रहे समाइ । बिलसइ बपु नाहीं ॥
परम नूर परम तेज । परम पुंज परम सेज ॥
परम जोति परम हेज । सुंदर सुख पावइ ॥
परम पुरुख परम राम । परम लाल सुख बिलाम ॥
परम मंगल दादू दास । पिव सो मिलि खेलइ ॥ ५ ॥

आरती ॥

टेक । येहि बिधि आरती राम की कीजइ ।
आतम अंतरि बारन लीजइ ॥

तन मन चँदन प्रेम की माला ।
अनहद घंटा दीनदयाला ॥
ज्ञान का दीपक पवन की बाती ॥
देव निरंजन पाँचउ पाती ॥
आनँद मंगल भाव की सेवा ॥
मनसा मंदिर आतमदेवा ॥
भगति निरंतर मइँ बलिहारी ।
दादू न जानइ सेवा तुम्हारी ॥१॥

टेक। आरती जगजीवन तेरी।
तेरे चरन कवँल पर वारि फेरी॥
चित चावरी हेत हरि ढारइ॥
दीपक ज्ञान जोति बिचारइ॥
घंटा सबद अनाहद बाजइ।
आनँद आरती गगना गाजइ॥
धूप ध्यान हरि सेतीँ कीजइ।
पुहुप प्रीति हरि भावँरि लीजइ॥
सेवासार आतमा पूजा।
देव निरंजन अउर न दूजा॥
भाव भगति सोँ आरती कीजइ।
येहि बिधि दादू जुग जुग जीजइ॥ २॥
अबिचल आरती देव तुम्हारी।
जुग जुग जीवन राम हमारी॥
मरन मीच जम काल न लागइ।
आवागवन सकल भ्रम भागइ॥
जोनी जीव जनम नहिँ आवइ।
निरभय नाम अमरपद पावइ॥
कलि बिख कसमल बंधन कोंपे।
पारि पहुतइ थिर करि थापे॥
अनेक उधारे तइँ जन तारे।
दादू आरत नरक निवारे॥ ४॥

टेक। निराकार तेरा आरती। अनँत भुवन के राइ॥
सुर नर सब सेवा करहिँ। ब्रह्मा बिष्णु महेस॥
देव तुम्हारा भेव न जानइ। पार न पावइ सेस।
चंद सूर आरति करइ। नमो निरंजन देव॥

धरनी पवन अकास अराधइ। सबइ तुम्हारी सेव ॥
सकल भुवन सेवा करइ। मुनिवर सिद्ध समाध ॥
दीन लीन होइ रहे संत जन। अविगत के आराध ॥
जय जय जीवन राम हमारी। भगति करइ लउ लाइ ॥
निराकार की आरति कीजइ। दादू बलि बलि जाइ ॥ ४ ॥

टेक। तेरी आरती ये। जुग जुग जय जय कार ॥
जुग जुग आतम राम। जुग जुग सेवा कीजिये ॥
जुग जुग लंघे पार। जुग जुग जगपति को मिले ॥
जुग जुग तारनहार। जुग जुग दरसन देखिये ॥
जुग जुग मंगलचार। जुग जुग दादू गाइये ॥ ५ ॥

इति आरती संपूरन ॥ इति रागधनाश्री संपूरन ॥

इति श्रीस्वामी दादूदयालजी का सबद संपूरन ॥